आचार्य पं० शशि मोहन बहल

सूर्यपुत्र

शनि उपासना

शत्रु नहीं मित्र भी है

शनि की साढ़ेसाती के प्रभाव व उपाय, शनि रत्नों का परिचय, शनि शांति के व्रत एवं उपवास

शनि मंत्र, मंत्र की सम्पूर्ण जानकारी के साथ एक संग्रहणीय पुस्तक



2.2

शत्रु नहीं मित्र भी है

सूर्यपुत्र शनि उपासना

(शनि-शांति के अचूक उपाय, शनि मंत्र, यंत्र, शनि की साढ़ेसाती, ढैया से मुक्ति के उपाय, टोटके, शनि रत्नों-उपरत्नों की जानकारी सहित एक सम्पूर्ण पुस्तक)

प्रस्तुति :
आचार्य पं० शशि मोहन बहल

मारुति प्रकाशन
अग्रवाल कॉलोनी, रामलीला ग्राउण्ड के सामने,
दिल्ली रोड, मेरठ-250 002 (यू०पी०)



कोणस्थः पिंगलो वभ्रुः कृष्णो रौद्रान्तको यमः
सौरिः शनिश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।
एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्
शनिश्चर कृता पीड़ा न कदाचित् भविष्याति॥

कोणस्थ, पिंगल, बभ्रु, कृष्ण, रौद्रअन्तक, यम, सौरि शनैश्चर, पिप्पला और मन्द–इन दस नामों का पाठ जो जातक नियमित करता है, उसे शनि महाराज कभी पीड़ा नहीं देते हैं। इन नामों का ग्यारह बार पाठ करना आवश्यक है।

काश! साधारण जातक को यह ज्ञात होता कि विश्व में अपना इतिहास रचने वाले लोग शनि के प्रभाव से ही सफलता के झंडे गाड़ सके। शनि-प्रधान जातक राजनेता, अभिनेता, लेखक, विद्वान्, प्रशासनिक अधिकारी, संगीतकार, इंजीनियर, तांत्रिक, ज्योतिषी तथा बेजोड़ साहसी होते हैं।

शनि ग्रह पाप ग्रह है। क्रूर भी कम नहीं है। नौ ग्रहों में सबसे धीमी गति से चलने वाला सुन्दर ग्रह है, सम्भवतः इसलिए ही जातक के जीवन में शुभ या अशुभ प्रभाव अत्यन्त धीमी गति से होता है।

शनि की अपनी एक अलग कार्यशैली है। हार, कष्ट, दुःख, असफलता, रोग का सेहरा सदैव शनि के सिर पर ही बंधता है। शनि अचानक अशुभ प्रभाव देने वाला ग्रह है। शनि की दशाओं में रोग, अकाल मृत्यु, दिवालियापन, कार्य में विलम्ब, व्यापार में हानि, अपमान, धोखा, झगड़ा, अलगाव होता है। क्या यह सत्य है? क्या यही वास्तविक सच्चाई है?

"प्रकाश क्रिया स्थिति शिलम भूतेन्द्रात्माकम्
भोगः पावाग्राथम दृश्यः"

सम्पूर्ण सृष्टि जिसे हम देखते हैं, इसमें तीन गुरु हैं—सात्विक, राजसिक और तामसिक। शनि ग्रह तम रूप का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह कर्म करने की प्रेरणा देते हैं। मोक्ष का मार्ग भी कर्म की गलियों में खुलता है।

आचार्य पं० शशि मोहन बहल की एक और उपयोगी पुस्तक जो शनि ग्रह के विषय में सारगर्भित जानकारी प्रस्तुत करेगी।

शनि ग्रह पर आधारित आचार्य पं० शशि मोहन बहल की एक और पुस्तक जो सब जैसी दीखने पर भी सबसे अलग है।

चेतावनी—भारतीय कॉपीराइट एक्ट के अन्तर्गत इस पुस्तक की साभग्री मारुति प्रकाशन के पास सुरक्षित है, इसलिये कोई भी सज्जन मैटर आदि पूर्ण रूप से अथवा तोड़-मरोड़कर एवं किसी भी भाषा में छापने या प्रकाशित करने का साहस न करें, अन्यथा कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे के स्वयं जिम्मेदार होंगे।

❑ *पुस्तक :* **सूर्यपुत्र शनि उपासना**
❑ *प्रस्तुति :* **आचार्य पं० शशि मोहन बहल**
❑ *प्रकाशक :* **मारुति प्रकाशन,**
अग्रवाल कॉलोनी, रामलीला ग्राउण्ड के सामने,
दिल्ली रोड, मेरठ-2
✆ (0121) 2518025, 3255234
❑ *कम्प्यूटरीकृत पृष्ठ सज्जा :* **मित्तल कम्प्यूटर्स,** मेरठ।
❑ *मुद्रक :* **संजय प्रिन्टर्स,** दिल्ली।

❑ *मल्य :* **सत्तर रुपये** (70.00)

विषय-सूची

क्र०सं०	विवरण	पृ०सं०
1.	शुभ फलदायक शनि	07
2.	अथ श्री शनि जन्म-कथा	20
3.	श्री शनिवार व्रत कथा	27
4.	शनि शुभ या अशुभ कब?	40
5.	शनि अशुभ क्यों?	46
6.	शनि ज्योतिष के आईने में	50
7.	शनि रत्न नीलम	69
8.	शनि-शांति के विशेष उपाय	74
9.	शनि स्तोत्रम्	82
10.	शनि मंत्र	92
11.	विशिष्ट शनि-पूजन	93
12.	शनि-साधना	95
13.	शनि मृत संजीवन जप	97
14.	वीरबाहुक प्रयोग	106
15.	शनि पाताल क्रिया	108

क्र०सं०	विवरण	पृ०सं०
16.	शनैश्चरस्तवराजः	109
17.	शनि के 108 नाम	111
18.	शनि वज्र पंजर कवच	113
19.	श्री शनि भार्या स्तोत्र	115
20.	शनि की ढैया एवं साढ़ेसाती के विशेष उपाय	117
21.	शनि-शांति के टोटके	129
22.	शनि कवच	131
23.	महाकाल शनि मृत्युंजय स्तोत्र	133
24.	शनि : लाल किताब के आईने में	141
25.	विभिन्न नक्षत्रों में शनि की स्थिति	148
26.	श्री शनि चालीसा	162
27.	शनि-प्रार्थना	165
28.	श्री शनिदेव जी की आरती-1	166
29.	श्री शनिदेव जी की आरती-2	167

सूर्यपुत्र शनि उपासना

1

शुभ फलदायक शनि

पाठकों! क्यों है ना आश्चर्यजनक बात—शनि और मित्र, शनि और शुभ फलदायक? हां शनि महाराज उस नारियल की तरह हैं जो बाहर से कठोर और भीतर से कोमल एकदम शीतल जल लिए। शनि—जातक को कर्मों के अनुसार शुभ या अशुभ फल प्रदान करते हैं। यह पाप ग्रह क्यों हैं? इसके भी अपने वैदिक कारण हैं।

शनि दूरस्थ ग्रह होकर निर्धनता, आलस्य, अंधकार, कुरूपता और बाधा का प्रतीक है, जिससे उसे पापी ग्रहों की श्रेणी में रखा गया है। इन दोनों ग्रहों के इन विरोधी कारकत्व के बाद भी शुक्र और शनि परस्पर अनन्य मित्र हैं, क्योंकि दोनों अहम् से भरपूर हैं। जहां शुक्र दैत्यों के गुरु के रूप में पूजित हैं और देवों के प्रति द्वेष रखते हैं वहीं शनि सूर्य के पुत्र होकर अपने पिता की उपेक्षा-भाव से ग्रस्त हैं। शुक्र और शनि की अत्यधिक मित्रता का परिणाम जातक के जीवनकाल के मध्य उनकी परस्पर दशाओं में घटित फलों में भी स्पष्टतः दिखलाई देता है। तभी तो लघुपराशरी के 40वें श्लोक में शनि और शुक्र की दशा फल के लिए एक विशेष सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है।

शनि और शुक्र की महादशा या अन्तर्दशा में इनका शुभ या अशुभ फल एक-दूसरे की दशा में मिलता है। इसका अर्थ यह हुआ कि शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा आने पर शनि का विशेष फल और शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा आने पर शुक्र का विशेष फल घटित होगा।

हालांकि शुक्र और शनि दोनों अनन्य मित्र हैं किन्तु दोनों अहम् से भरे हुए हैं, इसलिए जब ये दोनों बलवान और योगकारक स्थिति में होते हैं, तो एक-दूसरे की अन्तर्दशा में विनाशकारी और कष्टकारी परिणाम ही देते हैं।

शनि प्रत्येक राशि पर ढाई वर्ष रहता है। इस प्रकार जन्म के समय चन्द्रमा जिस राशि में होता है, उस राशि से पहली राशि में जब शनि प्रवेश करता है तब शनि की साढ़ेसाती की प्रारम्भिक स्थिति मानी जाती हैं; चन्द्र-स्थित राशि की अगली राशि में शनि के रहने तक संपूर्ण साढ़ेसाती मानी जाती है। अर्थात् चन्द्रमा के एक राशि पीछे से एक राशि आगे तक शनि की स्थिति ढाई-ढाई वर्ष करके साढ़ेसात वर्ष की अवधि ही साढ़ेसाती कहलाती है। इस प्रकार शनि की साढ़ेसाती एक समय में ही तीन राशि वाले जातक को प्रभावित करती है। चन्द्र-स्थित राशि के पीछे की राशि में शनि की स्थिति होने पर साढ़ेसाती का प्रथम चरण कहा जाता है। जिसकी स्थिति व प्रभाव सिर पर माना गया है। ढ़ाई वर्ष के पश्चात् जब शनि चन्द्र-स्थित राशि में प्रवेश करता है तब यह साढ़ेसाती का द्वितीय चरण कहलाता है। इसकी स्थिति व प्रभाव हृदय पर माना गया है। पुनः ढाई वर्ष की अवधि के पश्चात् जब शनि चन्द्र-स्थित राशि से अगली राशि में प्रवेश करता है तो यह साढ़ेसाती का अंतिम चरण होता है। इसका प्रभाव पैरों पर माना गया है। इस प्रकार शनि की किसी राशि के लिए साढ़ेसात वर्ष की अवधि साढ़ेसाती कहलाती है। संब्रंधित जातक के पूर्व कर्मों के फलस्वरूप आने वाली साढ़ेसाती उसको किसी भी चरण में उसके कर्मानुसार अनुकूल या प्रतिकूल फल प्रदान किया करती है।

जिस प्रकार आज शनि के विषय में भ्रान्तियां फैली हुई हैं वह बिल्कुल भी उचित नहीं है। शनि तो सदैव ही कुछ-न-कुछ देने के लिए हमारे जीवन में आते हैं। शनि अगर राजयोग करता हो तो राजा की कृपा प्राप्त होती है। सुख प्राप्त होता है। घर में संपत्ति, पत्नी एवं पुत्र से सुख मिलता है। धर्म एवं भगवान के प्रति आस्था की वृद्धि तथा आत्मिक शांति होती है।

ज्योतिष शास्त्र यह भी मानता है कि ग्रहों में स्वतंत्र फल देने की क्षमता नहीं है। वे तो पूर्व जन्म-कर्म-फल-भोग की सूचना मात्र देते हैं। कारण जातक की जन्म-लग्न एवं उसमें ग्रहों की स्थिति से बनने वाले योगा योग का निर्माण उन्हीं कर्म-फल-भोग के लिए प्रभु द्वारा निश्चित कर दिया जाता है। शनि देव तो केवल उसका पालन करते हैं।

नवग्रहों में शनि देव सदैव चर्चा का विषय बने रहते हैं। प्रत्येक जातक यह जानने के लिए उत्सुक रहता है कि शनि उसको क्या फल दे रहे हैं और क्यों दे रहे हैं? शनि की साढ़ेसाती अथवा ढैया की सूचना मिलते ही लोग दुःखी हो जाते हैं। शनि के आतंक से भयभीत होकर लोग उनकी उपासना और दान तो करते हैं, किंतु उनके सद्गुणों को ग्रहण नहीं करते।

ब्रह्मवैवर्तपुराण में शनि की दृष्टि के विध्वंसक बनने की एक कथा मिलती है। एक समय की बात है शनि निरन्तर साधनालीन रहने के कारण ही अपनी पत्नी की उपेक्षा कर बैठे और उसके फलस्वरूप उन्हें उस सती के कोप का भाजन बनना पड़ा। पत्नी ने क्रुद्ध होकर शाप दे दिया—"पत्नी होने पर भी आपने मुझे कभी प्रेम की दृष्टि से नहीं देखा, अब आप जिसे भी देखेंगे वह दुःखी हो जायेगा।" पत्नी का शाप अमोघ था। परिणामतः शनि की दृष्टि में संहार की शक्ति आ गई। इस कथा से यह तथ्य तो पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है कि शनि अति विनम्र तथा धर्मपरायण थे, लेकिन गृहस्थ जीवन के प्रति उनकी उदासीनता ने ही उन्हें शाप दिलवा दिया। इसके अतिरिक्त उनके किसी अशुभ कर्म का उल्लेख ग्रथों में नहीं है। अध्ययन करने पर आप पाएंगे कि शनि का संपूर्ण जीवन सदाचार, न्यायप्रियता, सत्यनिष्ठा, इष्ट के प्रति सर्वस्व समर्पण आदि सद्गुणों का परिचायक ही है। शनिदेव के पूजन में उनके विविध नामों का स्मरण करते समय एक नाम मंत्र यह भी आता है—**'ॐ पिप्पलाश्रय-संस्थिताय नमः।'** इसका तात्पर्य है कि शनि का अश्वत्थ (पीपल) के वृक्ष से घनिष्ट संबंध है। स्कन्दपुराण के नागरखण्ड में पीपल के आध्यात्मिक रूप का परिचय इस प्रकार दिया गया है—'अश्वत्थ वृक्ष के मूल में विष्णु, तने में केशव, शाखाओं में नारायण, पत्तों में श्रीहरि तथा फलों में समस्त देवताओं के साथ भगवान अच्युत सदैव निवास करते हैं। यह वृक्ष भगवान विष्णु की प्रतिमूर्ति है। गृहस्थी इस वृक्ष के पुण्यमय जड़ को जल चढ़ाकर इसकी सेवा करते हैं। इसी प्रकार ऋषियों ने शनि की शांति में शनिवार को पीपल को जल चढ़ाने, दीप-दान देने एवं परिक्रमा करने का विधान निर्दिष्ट किया है। पीपल को 'ब्रह्मस्थान' भी माना जाता है। भारतीय ज्योतिषशास्त्र में पितरों को अमावस्या का स्वामी कहा गया है। अमावस्या को पितृ (श्राद्ध) कर्म करने के लिए उपयोगी मानने का यही मुख्य कारण है। प्राचीन ग्रंथों में शनि को पितृ-लोक और पितृगणों से संबंधित बताया गया है। यम के अग्रज शनिदेव का नवग्रहों में पितरों

का प्रतिनिधि होना स्वाभाविक ही है। शनि जयंती 'अमावस्या' के दिन होने का भी एक विशिष्ट कारण है। अमावस्या के दिन मन का कारक ग्रह 'चंद्रमा' को आत्मा का कारक ग्रह 'सूर्य' युति करके उसके प्रकाश को स्वयं में विलीन कर लेता है। इसका अर्थ यह है कि मन पर आत्मा का पूर्ण नियंत्रण होने पर ही अध्यात्म के क्षेत्र में प्रगति होती है। शनि विश्व से दूर करके वैराग्य की ओर उन्मुख करते हैं। हालांकि शनि की साढ़ेसाती और ढैया जातक को सांसारिक सुख से वंचित करके कष्ट देती हैं।

सभी ग्रहों की अपेक्षा शनि के फल अधिक समय तक प्रभावी रहते हैं, क्योंकि शनि बहुत धीमी गति से चलता है। उसका घनत्व भी अन्य ग्रहों से अधिक है, इसलिए शनि का प्रभाव अन्य ग्रहों से अधिक गहरा है।

जन्मपत्रिका का दशम भाव हमारे कर्म हैं। दशम भाव में शनि को स्थान बल प्राप्त होता है। इसलिए शनि ही कर्मों का समान फल देने वाला है। भाग्य व कर्मों के अधिपति होने के कारण प्राणी मात्र को शनि, उनके शुभाशुभ कर्मों का उचित फल देता है। ज्योतिष विज्ञान में अंतरिक्ष, सुनसान स्थानों, शमशानों, बीहड़, वन प्रांतों, दुर्गम घाटियों, पर्वतों, गुफाओं, गहरी खदानों और आकाश-पाताल के रहस्यपूर्ण स्थलों को शनिदेव के अधिकार क्षेत्र में सम्मिलित किया गया है।

शनि के अधिकार क्षेत्र में केवल रहस्य ही नहीं, बल्कि कर्म चेष्टा, सतत् श्रम, सेवा-सुश्रूषा, विकलांग, रोगी व वृद्धों की सहायता भी आती है। वास्तव में शनिदेव के स्वभाव के दो पक्ष हैं—एक ओर वे मोक्षकामी, त्यागी, तपस्वी हैं; दूसरी ओर जातक के शुभाशुभ कर्मों के फलदाता न्यायाधीश भी हैं। भले-बुरे के भेद से कर्मों के फल कोमल भी होते हैं और कठोर भी। शनि के अधिदेवता भैरो और धातु लोहा व इस्पात हैं। कोयला, पत्थर, नमक, पिपरमिंट, दाल-उड़द छिलके सहित, सरसों का तेल, स्पिरिट व मदिरा शनि की प्रिय वस्तुएं हैं। उनके व्यवसाय लुहार व बढ़ई हैं। भैंस, सांप, बिच्छू, कौआ और चमगादड़ शनि देव के प्रिय पशु-पक्षी हैं। कीकर वृक्ष व जूते शनिदेव द्वारा शासित हैं। शनिदेव का मकर व कुंभ राशियों पर पूर्ण आधिपत्य है। तुला उसकी राशि है। जन्मपत्रिका में अगर शनिदेव दशम व एकादश भाव में उच्च राशि मित्र या स्व राशि में हों तो आप राज्यसत्ता, धन-दौलत व ऐश्वर्य प्राप्त करते हैं। जब शनिदेव शुभत्व प्रदान करते हैं तो भारी सफलता प्रदान करते हैं। वह जातक को पृथ्वी से आकाश तक ले जाते हैं। राजा

को रंक और रंक को राजा बना देते हैं। शनिदेव की स्थिति अगर जन्मपत्रिका में अच्छी हो तो **'ॐ शं शनैश्चराय नमः'** मंत्रों की माला-जाप करें।

इसके अतिरिक्त सबसे मुख्य बात यह है कि जीवन में सूर्य और शनि का प्रभाव ही सर्वाधिक पड़ता है। जहां सूर्य तेजस्विता देता है वहीं मनुष्य के चिंतन का योग शनि के द्वारा ही बनता है। इसके साथ ही शनिदेव सूर्यपुत्र हैं और यम के भाई हैं, अतः दुर्घटना, मृत्यु, आकस्मिक घटना का विवेचन भी इसी ग्रह से किया जाता है।

अगर आप किसी ज्योतिषी के पास अपनी जन्मपत्रिका लेकर जाते हैं तो सबसे पहले वह शनि की स्थिति का विवेचन करता है और शनि की महादशा जीवन में 19 वर्ष तक रहती है। विंशोत्तरी महादशा के अनुसार सारे ग्रहों की दशाएं कुल 120 वर्षों की मानी गई हैं। इसमें सूर्य महादशा 6 वर्ष, चन्द्र महादशा 10 वर्ष, मंगल महादशा 7 वर्ष, राहु महादशा 18 वर्ष, गुरु महादशा 16 वर्ष, शनि महादशा 19 वर्ष, बुध महादशा 17 वर्ष, केतु महादशा 7 वर्ष और शुक्र महादशा 20 वर्ष रहती है। इसमें भी प्रत्येक महादशा में इन्हीं नवग्रहों की अन्तरदशा भी अवश्य आती है। जहां विद्वान ज्योतिषी शनि को अनुकूल बनाने के लिए शनि साधना और अनुष्ठान अवश्य बताते हैं लेकिन इसके साथ-ही-साथ यह नहीं भूलना चाहिए कि शनि सूर्यपुत्र हैं और सूर्य अत्यन्त तेजस्वी ग्रह है। अगर शनि साधना के साथ सूर्य की साधना भी सम्पन्न की जाए तो निश्चय ही शीघ्र अनुकूलता प्राप्त होती है। सूर्य ही एकमात्र एक ऐसा ग्रह है जो शनि को शांत कर सकता है। यह बात अलग है कि दोनों परस्पर शत्रु हैं।

शनि को ज्योतिष में 'विच्छेदात्मक ग्रह' माना गया है। जहां एक ओर शनि मृत्यु-प्रधान ग्रह माना गया है, वहीं शनि दूसरी ओर शुभ होने पर जीवन में श्रेष्ठता भी देता है। हमारे समाज में कुछ कहावतें शनि को लेकर प्रचलित हैं; जैसे—व्यापार चौपट हो तो शनि का प्रभाव है। आज-कल तो शनि का चक्कर है या किसी व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए कह देते हैं कि यह तो शनि की तरह मेरे पीछे पड़ गया है। दो-चार ढोंगी ज्योतिषी भी ऐसे होते हैं जो लोगों को शनि की दशा बताकर भयभीत कर देते हैं; जैसे—आपके भाग्य पर शनि की क्रूर दृष्टि है, लाभ-स्थान पर नीच का शनि है, कर्म भाव पर शनि वक्री है तथा शनि की साढ़ेसाती को सुनकर ही जातक का हृदय बेतरह कांप उठता है।

शनि अशुभ होने पर जातक स्वार्थी, धूर्त, कपटी, दुष्ट, आलसी, मंदबुद्धि, उद्योग से मुंह मोड़ने वाला, नीच कर्म में लिप्त, अविश्वास करने वाला, ईर्ष्यालु, विचित्र मनोवृत्ति युक्त, असंतोषी, दुराचारी, दूसरों की आलोचना करने वाला, स्वयं को श्रेष्ठ बतलाना पसन्द करता है। वह दम्भी, झूठा और दरिद्री होता है। ऐसा जातक व्यर्थ इधर-उधर घूमना पसन्द करता है। ऐसा जातक सदैव विपत्तियों से घिरा रहता है।

शनिदेव नवग्रहों में एक ऐसे ग्रह स्वरूप हैं जिनकों ग्रहों की अदालत में सर्वोच्च न्यायाधीश जैसा उच्च पद प्राप्त है और उन्हीं के अनुरूप जातकों को अन्य ग्रह भी फल प्रदान करते हैं। शनि का प्रभाव जातकों के ऊपर सर्वाधिक समय तक पड़ता है। शनि को आदेश है कि वह प्राणीमात्र को उनके कर्मों के फल का यथावत् भुगतान कराये—और शनि विधाता के आदेश का निष्ठापूर्वक पालन करते हैं।

अतः शनि के वास्तविक रूप को जानकर उनकी पूजा, आराधना, होम व जप आदि करके उनकी कृपा प्राप्त करें, उनसे डरें नहीं। आप अपनी नेक कमाई से जो भी उपलब्ध हो, उसी में संतोष करें। लोभवश कोई भी खोटा कर्म करने से बचें। इस प्रकार जब बुरे कर्म होंगे ही नहीं तो भोगने भी नहीं पड़ेंगे। फिर आपको शनि के कोप का भाजन भी नहीं बनना पड़ेगा।

ज्योतिषशास्त्र में शनि को अनुकूल करने के अनेकानेक सरल उपाय भी बताये गये हैं, जिनका सहारा लेकर जातक अपने वर्तमान जीवन को सुख-शांति से भरपूर परिपूर्ण बना सकता है। मैं आपके समक्ष शनिदेव का पौराणिक परिचय भी प्रस्तुत कर देना चाहता हूं जिससे शनिदेव संबंधी अनेकानेक भ्रांतियों के निवारण में आपको सहायता मिले।

ज्योतिषीय विवेचना के अनुसार शनि की साढ़ेसाती जातक के पैरों में पीड़ा पहुंचाती है। मस्तिष्क विकृत और सिरदर्द, धन-धान्य, सम्पत्ति का नाश, सन्तान को कष्ट, स्वयं को व्यभिचारी व कुमार्गी बना अपमानित करती है।

अपनी जन्मराशि से जब गोचर में शनि भ्रमण करता हुआ बारहवें, जन्मराशि के पहले और दूसरे—इन तीन स्थानों में आता है, तब साढ़ेसाती आती है। साढ़ेसाती में प्रायः पीड़ा, दुःखादि जैसे अशुभ फल होते हैं—ऐसी मान्यता है, लेकिन सदैव कष्ट ही मिलता हो ऐसा नहीं है।

एक बार साढ़ेसाती आने के पश्चात् 30 वर्ष पश्चात् ही इसका योग बनता है। अपवाद को छोड़कर प्रत्येक जातक को जीवन में केवल तीन बार

साढ़ेसाती का सामना करना पड़ता है। सबसे कष्टदायक युवावस्था के पश्चात् आने वाली साढ़ेसाती होती है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि युवावस्था में ही मनुष्य बुरे कर्म करता है, जिसका दंड शनि उसे साढ़ेसाती के रूप में देते हैं। मनुष्य कितना ही नास्तिक क्यों न हो, साढ़ेसाती की सत्यता के विषय में तो वह भी स्वीकार किए बिना नहीं रह सकता। साढ़ेसाती का अनुभव जिसको नहीं मिला हो, ऐसा कोई बिरला जातक ही रहा होगा। साढ़ेसाती में प्रत्येक मनुष्य को किसी प्रकार से भी हानि हो सकती है—ऐसा सब समझते हैं, लेकिन अनुभव से अनेक बार देखा गया है कि किसी को सम्पूर्ण साढ़ेसाती अच्छी होती है, तो किसी-किसी को बैठती हुई पूर्व भाग की, किसी को मध्य भाग की, किसी को उतरती हुई अंतिम भाग की साढ़ेसाती शुभ फलदायक होती है।

इस प्रकार शनि की साढ़ेसाती दशा के कारण ही मानव-मन में यह भ्रांति उत्पन्न हो गई है कि शनि केवल हानिकारक अथवा अमंगलकारी ही होता है। शनि ग्रह की शांति के लिए, जब यह ग्रह प्रतिकूल फल दे रहा हो अथवा शनि की साढ़ेसाती इत्यादि अवधि में व्यक्ति को ग्रह शांति हेतु मंत्र जप या दान अवश्य करना चाहिए। समस्त ग्रहों में शनिदेव ही ऐसे ग्रह हैं जो अत्यन्त क्रोधी होते हुए भी परम दयालु कहे गए हैं। इनके विषय में कहा गया है, कि जब ये किसी पर क्रोधित होते हैं तो उसका सर्वनाश कर डालते हैं। इसी प्रकार जब ये किसी से प्रसन्न होते हैं, तो रंक को भी राजा बना देते हैं।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार, सौरमण्डल का सबसे सुंदर ग्रह शनि ही है। यही एक ऐसा अद्‌भुत ग्रह है जो मनुष्य को राजा से रंक और रंक से राजा बनाने की शक्ति रखता है। शनि जैसा न्यायप्रिय अन्य ग्रह कोई नहीं है। यह जातक को उसके कर्मों के अनुसार दंड या वैभव प्रदान करता है।

भगवान सूर्य की तृतीय पत्नी का नाम संज्ञा है। इन्हीं की प्रतिच्छाया से शनि का जन्म हुआ। भगवान शिव ने शनि को कर्मानुसार दंड प्रदान करने का अधिकार दिया।

शनि की गति अत्यंत धीमी है। आकाश के गोलक पर यह ग्रह बहुत धीमी गति से चलता दिखाई देता है। इसलिए प्राचीनकाल के लोगों ने इसे शनैश्चर नाम दिया था—'**शनैः-शनैः चरत इति शनिश्चर**।' बाद में इसी

शनिश्चर का अपभ्रंश सनीचर बन गया। यह धीमी गति से क्यों चलते हैं? इसका कारण इनका 'लंगड़ा' होना है।

एक पौराणिक कथा के अनुसार—पिप्पलाद मुनि के पिता की इनके बचपन काल में मृत्यु हो गई थी। पिप्पलाद मुनि की माता अपने पति की मृत्यु का कारण शनि को मानती थीं। इस कारण मुनि ने अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के उद्देश्य से शनि पर ब्रह्मदंड से प्रहार किया। ब्रह्मदंड से प्रहार के कारण शनिदेव लंगड़े हो गए। इससे इनकी गति कम हो गई।

शनि को कालपुरुष का दुःख माना गया है। यह आधि-व्याधि के कारक भी हैं। ग्रहों में इन्हें सेवक का पद प्राप्त है। एक राशि से दूसरी राशि-भ्रमण में शनि को 30 माह का समय लगता है। तीस वर्ष में यह संपूर्ण राशिचक्र का भ्रमण पूर्ण करते हैं। इनका आधिपत्य—हड्डी, मांसपेशी, घुटने, स्नायु-तंत्र, नख तथा केशों पर होता है। मकर और कुंभ शनि की राशियां हैं। मेष में शनि नीच का तथा तुला राशि में उच्च का होता है। शनि की पूर्ण दृष्टि तीसरी, सातवीं और दसवीं होती है, लेकिन 12 राशियों में से यह छह राशियों को प्रभावित करता है। शनि की महादशा 19 वर्ष की होती है। जिस राशि में शनि होता है, उस राशि से पहले की और अगली राशि वाले साढ़ेसाती से प्रभावित होते हैं। इस प्रकार अपनी राशि से शनि चतुर्थ एवं अष्टम होने पर शनि की ढैया कहलाती है। यह मार्गी और वक्री दोनों ही होता है। साढ़ेसाती और ढैया को वृहत्कल्याणी तथा लघुकल्याणी कहा जाता है। बुध, शुक्र, सहु, केतु शनि के नैसर्गिक मित्र हैं और गुरु बृहस्पति सम तथा सूर्य, मंगल व चंद्रमा से शत्रु-भाव रखता है।

इस विषय में हमें अनेक कथाएं मिलती हैं। एक तो परस्पर कलह के कारण सूर्य ने प्रतिशोध की भावना से छायापुत्र शनि को शाप दिया कि माता के दोष से तुम्हारी दृष्टि क्रूरताभरी रहेगी। दूसरी कथा में एक बार ऋतु स्नान से निवृत्त होकर शनि की पत्नी पुत्राभिलाषा से शनि की सेवा में उपस्थित हुई। शनि उस समय समाधि में लीन थे। पत्नी का ऋतुकाल व्यर्थ चला गया। इस कारण पत्नी ने शनि को शाप दिया कि जिस पर तुम्हारी दृष्टि पड़ जाएगी वह नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगा। इसी कारण शनिदेव ने ईश्वरी अवतारों से लेकर चक्रवर्ती सम्राटों तक को अपनी शक्ति से विचलित किया है। स्मरण रहे चित्रस्थ की पुत्री शनि की पत्नी थीं।

जन्मपत्रिका में शनि के साथ विभिन्न ग्रहों के योग से जातक के पूर्वजन्म

का ज्ञान भी होता है; जैसे शनि—सूर्य के साथ होने पर पूर्वजन्म में दोनों में शत्रुता का ज्ञान होता है। शनि-चंद्र की युति यह बतलाती है, पूर्वजन्म में प्रताड़ित स्त्री ने माता के रूप में जन्म लिया है। इस कारण माता के साथ प्रतिशोधपूर्ण जीवन कटता है।

शनि एक निष्पक्ष न्यायाधीश हैं। वे किये गये कर्मों का फल निश्चित रूप से प्रदान करते हैं। शनि भगवान सूर्य के पुत्र हैं, लेकिन फिर भी वे पिता सूर्य को अपना शत्रु समझते हैं। शनि की ऐसी ही वैचारिक विशिष्टताओं की व्याख्या करने वाले अनेकानेक प्रसंग वैदिक ग्रंथों में उपलब्ध हैं। सभी कथाओं में से एक बात तो सत्य है कि शनि जन्म से ही बहुत अधिक सामर्थ्य सम्पन्न थे। शनि से संबंधित अनेक आख्यान पुराणों में उपलब्ध हैं। शनि और सूर्य से संबंधित एक और कथा यहां प्रस्तुत कर रहा हूं!

भगवान सूर्य के नौ पुत्रों में शनि अपने अतुलित पराक्रम में सर्वोपरि हैं। यमुना शनि की बहन हैं और मृत्यु के देवता यमराज शनि के अनुज हैं। पुराणों में वर्णित कथाओं के अनुसार, सभी संतानों के योग्य होने पर भगवान सूर्य ने प्रत्येक संतान हेतु एक-एक लोक की व्यवस्था की, किन्तु स्वभावतः पाप-प्रभाव शनि अपने एक लोक से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने समस्त लोकों पर आक्रमण करने की योजना बनाई। जब सूर्य को शनि की इस बात का पता चला, तो उन्होंने शनि को बहुत समझाया, लेकिन शनि पर उनके परामर्श का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ा। अंततः सूर्य ने भगवान शिव से निवेदन किया कि वे शनि को समझाएं, लेकिन शिव के समझाने का भी शनि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा—और क्रोधित भगवान शिव ने शनि से युद्ध प्रारम्भ कर दिया। शनि ने अपने पराक्रम से नंदी सहित समस्त शिवगणों को परास्त कर दिया। अपने सैन्यबल का संहार देख कुपित हो, भगवान शिव ने अपना तृतीय नेत्र खोल दिया। शनि ने भी अपनी मारक दृष्टि का संधान किया। शिव और शनि की दृष्टियों से उत्पन्न एक अप्रतिम ज्योति ने शनि लोक को आच्छादित कर लिया।

इससे क्रुद्ध होकर भगवान शिव ने अपने त्रिशूल से शनि पर प्रहार किया। शनि यह आघात सहन नहीं कर सके और मूर्च्छित हो गए। पुत्र की यह स्थिति देखकर सूर्य का पुत्रमोह प्रबल हुआ और उन्होंने आशुतोष भगवान शिव से शनि की प्राणरक्षा के लिए कातर स्वर में निवेदन किया। भगवान शिव ने प्रसन्न होकर शनि के इस संकट को हर लिया। इस घटना के बाद

शनि ने भगवान शिव की सर्वसमर्थता स्वीकार कर ली और उनसे क्षमा याचना की। साथ ही शनि ने यह इच्छा भी अभिव्यक्त की, कि वह अपनी समस्त सेवाएं शिव को समर्पित करना चाहता है। भगवान शिव भी शनि से प्रसन्न थे और शनि के पराक्रम से प्रभावित शिव ने शनि को दण्डाधिकारी नियुक्त कर दिया। शनि के प्रकोप से कोई भी नहीं बच सका। यहां तक कि राजा हरिश्चन्द्र, नल, भगवान श्री राम, पिप्पलाद मुनि एवं पांडवों के जीवन में भी शनि की कुदृष्टि के कारण भयंकर उथल-पुथल मच गई थी। इसमें भगवान शिव की कथा तो सुविदित है ही।

बिना कर्म के मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं है। जो कर्म किए बिना जीता है वह अपना अस्तित्व खो बैठता है। जो कर्म की अवमानना करता है वह शनि देवता का अपमान करता है। जातक के कर्म उसके भीतर वासनाओं के अनुरूप नहीं होते हैं। वासनाओं को तीन भागों में बांटा जा सकता है—सात्विक, राजसिक और तामसिक। सत, रज, तम—इन तीनों प्रकार के गुणों की भी उत्पत्ति हमारे भीतर की प्रकृति से होती है। हम किसी स्थिति में कर्म न करना चाहें तो भी हमारी अंतर्निहित वासनाएं हमें कर्म करने के लिए विवश कर देंगी। हम कभी निष्क्रिय रह नहीं सकते। जीवन सदैव सक्रियता से भरा और सकारात्मक रूप लिए होता है। कर्मों के रूप में जीवन वस्तुतः गतिशीलता की ही अभिव्यक्ति है। जीवित रहते हुए मनुष्य एक क्षण के लिए भी कर्म किए बिना नहीं रह सकता। जब सब कर्म समाप्त हो जाते हैं तब मनुष्य मर जाता है। जो अकर्मण्य होता है वह जीवित ही मृतक के समान है। कर्म से भागने का अर्थ है—जीवन से भागना।

गीता का संदेश है—कभी भी कर्म किए बिना न रहो। समाज सेवा करो, राष्ट्र का गौरव बढ़ाओ, मानवमात्र के कष्टों की निवृत्ति हेतु तपो। यही वस्तुतः जीवन है। कर्म से भाग खड़े होना, कर्त्तव्य त्याग देना—ये सब उपाय जीवन को अकर्मण्यता की ओर ले जाते हैं, साथ ही जीवन का सौंदर्य छीन लेते हैं और जीवन का क्षरण कर डालते हैं। जीवन समर में सभी प्रकार की उथल-पुथल का सामना करते हुए जीना, सक्रिय हो उद्यमी बने रहना ही जातक को शोभा देता है। कर्म करो, सक्रिय होकर जियो एवं निर्भय होकर रहो। परिश्रम से मत डरो। निराशाओं का सामना करने से हिचकिंचाओ मत। जब तक जीवित हो, वास्तव में जीवन का एक-एक पल जियो। कर्मों द्वारा ऊंचे उठो, कर्मों द्वारा ही उन्नति करो, कर्मों से ही अपना विस्तार करो।

गीता का जीने का संदेश स्वयं में एक प्रमाण है कि गीता संन्यास की पाठ्य-पुस्तक नहीं है। गीता जीवन जीने की कला सिखाती है। वह **'कुर्वन्नैवेह कर्माणि जिजिवेष्च्छतां समाः'** की उपनिषद्कार की उक्ति अनुसार कर्म करते हुए ही सौ वर्षों तक जीते रहने की इच्छा प्रबल बनाए रखने की बात करती है। शनि इसी कर्म का लेखा-जोखा रखता है। कर्म के अनुसार जातक को शुभ या अशुभ फल प्रदान करता है।

प्राचीन ग्रंथों में ग्रह के रूप में शनि की स्थिति गुरु बृहस्पति ग्रह से दो लाख योजन ऊपर की ओर मानी गई है। ज्योतिष के अनुसार, ये एक ही राशि पर दो वर्ष छह महीने तक स्थित रहते हैं। सूर्य से शनि की दूरी लगभग पन्द्रह लाख योजन मानी गयी है। आधुनिक खगोल शास्त्र के अनुसार, शनि की पृथ्वी से दूरी लगभग नौ करोड़ मील है। इसका व्यास एक लाख बीस हजार किलोमीटर है और इसका घनत्व पृथ्वी से पिचानवें गुना अधिक है। इसे सूर्य की परिक्रमा करने में उनतीस वर्ष लगते हैं। शनि की परिक्रमा करने वाले उपग्रहों की संख्या लगभग दस है। अंतरिक्ष में शनि सघन नील आभा से युक्त रश्मियां बिखेरता है। भारतीय ज्योतिष शास्त्र व पुराणों के अनुसार, शनिदेव ग्रह-रूप में वायु तत्व वाले हैं। इनका रंग काला है और ये पश्चिम दिशा के स्वामी हैं। भारत के सौराष्ट्र प्रदेश अर्थात् गुजरात (काठियावाड़) पर शनि का विशेष प्रभाव व आधिपत्य है। वैसे भी शनिदेव रहस्यभरे स्थानों, घाटियों, वन प्रांतों व दुर्गम गुफाओं में स्थित होना अधिक पसंद करते हैं। मरूप्रदेश, शमशान, कोयला खान क्षेत्र, बंजर, वीरान व अपवित्र भूमि में इनका निवास करना स्वाभाविक माना जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, शनि अस्त होने के अड़तीस दिनों के पश्चात् उदय होते हैं। उसके बाद ये एक सौ पैंतीस दिनों तक सामान्य गति से और एक सौ पांच दिनों तक वक्री गति से परिभ्रमण करते हैं।

शनि निष्पक्ष न्यायाधीश होने के कारण अपनी साढ़ेसाती और ढैया में हमें हमारे गलत कार्यों के लिये दण्डित करते हैं। जिस प्रकार आग में तपकर सोना शुद्ध होता है, उसी प्रकार शनि की साढ़ेसाती और ढैया जातक को अच्छे-बुरे का अनुभव कराके उसे सत्य के मार्ग की ओर अग्रसर करती है। वस्तुतः शनि हमें गुरु के समान सुकर्म और संयम की शिक्षा देते हैं, किंतु वे एक आदर्श शिक्षक की तरह जीवन जीने का सबक घटनाओं के रूप में उदाहरण देकर सिखाते हैं।

शनिवार को पदभार ग्रहण करना, बीज बोना, मशीन का कार्य प्रारम्भ करना, भवन-निर्माण में शनिवार का दिन शुभ मानते हैं।

ज्योतिष में भी इस दिशा में अगर गहराई से विचार किया जाए तो उल्लेख मिलता है, **'स्वार्प्य समाप्यं शनि भौमवारे'** अर्थात् स्थापना संबंधी कार्य शनिवार के दिन आरंभ करने से अनुकूल फल प्राप्त होता है तथा कार्य समाप्त मंगलवार के दिन करने से अनुकूल फल मिलता है। शनिवार के दिन नौकरी में पदभार ग्रहण करने से लम्बे समय तक उस स्थान पर रहने का योग बन जाता है। मशीनरी का खरीदना हालांकि शनिवार के दिन शुभ नहीं माना जाता है, किन्तु मशीनरी कार्य का प्रारम्भ फलदायक होता है। भवन-निर्माण में शनिवार का दिन निर्माण को चिरस्थायी बनाता है, तो शनिवार के दिन किया गया गृहप्रवेश भूस्वामी के दीर्घकाल तक सुखपूर्वक निवास का सूचक है। शनिवार के दिन की गयी शल्य चिकित्सा सफल होती है। व्यापार का आरम्भ, दुकान का मुहूर्त अगर शनिवार को किया जाता है तो प्रगति होती है। रोग-मुक्ति के पश्चात् स्नान अगर शनिवार के दिन किया जाये तो रोग की पुनरावृत्ति कभी नहीं होती है।

शनि की विंशोत्तरी महादशा के मध्य जातक पद-प्रसिद्धि पाता है, तो अकारक शनि पीड़ा-पतन देता है। शनि की दशा के मध्य अंतर-प्रत्यंतर-सूक्ष्मदशाओं के कारण जातक का सुख-दुःख का समय प्रभावित होता है। शनि की महादशा 19 वर्ष की होती है। इस मध्य विभिन्न अंतरदशाएं इस प्रकार आती हैं–

अंतरदशा	वर्ष	माह	दिन
शनि में शनि	3	0	3
शनि में बुध	2	8	9
शनि में केतु	1	1	9
शनि में शुक्र	3	2	0
शनि में सूर्य	0	11	12
शनि में चंद्र	1	7	0
शनि में मंगल	1	1	9
शनि में राहु	2	10	6
शनि में गुरु	2	6	12

शनि में शनि की अंतरदशा व्यर्थ भ्रमण—कष्ट, बुध की अंतरदशा सम्मान-धन, केतु की अंतरदशा कलह—विरोध, शुक्र की अंतरदशा सुख-समृद्धि, सूर्य की अंतरदशा भय—पदहानि, चंद्र की अंतरदशा कष्ट-दुःख, मंगल की अंतरदशा रोग-विवाद, राहु की अंतरदशा शारीरिक-मानसिक कष्ट एवं गुरु बृहस्पति की अंतरदशा शुभ उत्सव—सम्मान प्रदान करती है।

प्रस्तुत पुस्तक **'सूर्यपुत्र शनि उपासना'** के अंतर्गत उपासना करने की विधि, नियम, नित्य पूजन विधि, देवी-देवता व महर्षियों द्वारा रचित विविध शनि स्तोत्र, शनि चालीसा, शनि आरती, शनि कवच, हवन विधि आदि का वर्णन है। इसके साथ जातक की जन्मपत्रिका में शनि के विविध रूपों में स्थित होने का फलादेश भी किया गया है। उन फलादेशों के अंतर्गत शनि अनिष्ट निवारक अनेकों 'टोटके और उपाय' भी लिखे गए हैं। शनिदेव के भयानक आक्रोश से बचने हेतु कुछ प्रभावी यंत्रों का भी उल्लेख है, जिसे धारण कर दुनिया के अनेकों दुःखी लोग लाभान्वित हो रहे हैं। आप भी इस महान उपासना पद्धति को अपनाकर अपना जीवन सार्थक करें, यही मेरी कामना है और यही शास्त्र निर्माण का उद्देश्य भी है।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है, नई खोज और नये विकल्पों की संभावना सदैव से रही है। इसी उद्देश्य को लेकर इस सर्वथा नयी पुस्तक का लेखन और संकलन किया गया है। इसमें जहां मेरे नये अनुभव हैं, वहीं साथी विद्वानों की खोज को भी संकलित किया गया है। मैं हृदय से श्री अरूण कुमार जैन स्वामी मारुति प्रकाशन का आभारी हूं, जिन्होंने मेरे उद्देश्य को समझा और सुन्दर तरीके से आपको पेश किया है।

आपके सुझावों और पत्रों की अवहेलना करने का साहस मुझमें नहीं है। वह तो आप सदैव की भांति मुझे भेजेंगे ही। सदैव आपके साथ आपके लिए।

—आचार्य पं० शशि मोहन बहल
"तंत्र सबके लिए मिशन"
डी-4, राधापुरी, कृष्ण नगर
(जमुनापार) देहली-110051
e-mail:- Tantrik-bahl@yahoo.co.in



अथ श्री शनि जन्म-कथा

मनुष्य के द्वारा शुभ-अशुभ जो भी कर्म किये जाते हैं उनका फल उस को शनि की दशा, अंतर्दशा व साढ़ेसाती में प्राप्त होता है। शनि द्वारा कर्मों के फल देते समय मनुष्य की अवस्था का विशेष महत्व होता है। बाल्य अवस्था व वृद्ध अवस्था में यह फल उतने कष्टदायक नहीं होते हैं जितने कि युवा अवस्था में। शनि ग्रह की महादशा कई जातकों के जीवन काल में कभी-कभी आती ही नहीं है, कुछ के बचपन व वृद्ध अवस्था में आती है। अतः दशा के प्रभाव से कई लोग वंचित रह जाते हैं। परन्तु सौरमण्डल के न्यायाधीश ने न्याय करने हेतु सामान्य तौर पर तीन बार साढ़ेसाती की प्रक्रिया को दोहराया है। यह वो समय है जहां जातक के जीवन का परिवर्तन होता है और वह प्रारब्ध में किए हुए अपने कर्मों के अनुसार उत्थान या पतन के मार्ग पर अग्रसर होता है।

जन्मपत्रिका की स्थिति के अनुसार शुभ ग्रहों की श्रेणी में आने वाले चन्द्र, बुध, गुरु बृहस्पति और शुक्र भी अनिष्टकारी हो सकते हैं। अतः कष्टों का सारा दोष शनि को अकेले देना एवं साढ़ेसाती और ढैया के नाम पर भयभीत होना मेरे विचार में उचित नहीं है।

शनि महाराज दण्डाधिदेव होकर भी परम कृपालु हैं। जिन लग्नों के लिए वे कारक हैं उन लग्नों में अगर उनकी स्थिति उचित स्थान पर है तो वे सर्वाधिक प्रगति देते हैं।

शनि दशा का विवेचन केवल शनि महादशा का विवेचन ही नहीं है,

अपितु किसी अन्य ग्रह की महादशा में भी जब शनि की अन्तरदशा आती है तो उसके प्रभाव को बराबर भागों में बांटा जा सकता है।

शनि अन्तःकरण का प्रतीक है। यह बाहरी चेतना और आंतरिक चेतना को मिलाने में सेतु का काम करता है। शनि—विचार और भावों की समानता का सूचक है। कार्यपरायणता, आत्मसंयम, धैर्य, दृढ़ता, गंभीरता, सतर्कता, विचारशीलता एवं कार्यक्षमता का प्रतीक है। जातक को ज्ञानी, आध्यात्मिक, त्यागी, भोगी, योगी, विवेकी और महान् से महानतम केवल शनिदेव ही बनाते हैं।

वैदिक भारतीय ज्योतिष में मान्य नवग्रहों में शनि एक प्रमुख ग्रह है। यह सूर्य से छठा ग्रह है। आकार में यह सौरमण्डल का दूसरा सबसे बड़ा ग्रह है। इसकी त्रिज्या 60 हजार किलोमीटर है। यह सूर्य से 142.7 करोड़ किलोमीटर तथा पृथ्वी से 127.74 करोड़ किलोमीटर दूर है। बलयुक्त यह ग्रह आकाश में पीला दिखाई देता है। शनि दीर्घवृत्ताकार कक्षा में सूर्य की 29.46 वर्ष में एक परिक्रमा करता है। इसकी परिक्रमण अवधि 10 घण्टा 40 मिनट है। इसके चारों ओर 21 उपग्रह हैं।

महर्षि पराशर ने इसे क्रूर ग्रह की संज्ञा दी है। पाश्चात्य ज्योतिष में इसे दुर्भाग्य लाने वाला कहा गया है। तमोगुणी शनि ग्रह स्त्री, नपुंसक, कफ प्रकृति, लम्बा एवं पतला शरीर, विकृत दृष्टि वाला, वायु-प्रधान, मोटे दांतों वाला, आलसी, शरीर संचालन में विकारयुक्त, मोटे-रूखे बालों एवं रोमों वाला है। शनि को मंद कोण, यम एवं कृष्ण भी कहा है। इसके देवता ब्रह्मा (विष्णु और रूद्र अथवा हनुमान) हैं। शनि का रस—कषैला, स्थान—कूड़ा फैंकने का स्थान, धातु—लोहा, वस्त्र—फटा-पुराना, ऋतु—शिशिर है।

शनि की दैनिक गति 3 से 6 कला तक होती है। इसकी मध्यम गति 2 कला एक विकला होती है। शनि एक राशि में ढाई वर्ष तक रहता है। यह 140 दिन वक्री रहता है तथा वक्री से मार्गी होते समय 5 दिन स्तम्भित रहता है। कुंभ राशि में शनि 20 अंश तक मूलत्रिकोणी तथा शेष अंशों में एवं मकर राशि के 30 अंश तक स्वग्रही होता है। शनि तुला राशि में 20 अंश तक उच्च का तथा मेष राशि में 20 अंश तक परम नीच का होता है। शनि के बुध और शुक्र नैसर्गिक मित्र; सूर्य, चन्द्र, मंगल नैसर्गिक शत्रु एवं गुरु बृहस्पति सम ग्रह होते हैं। शनि की तीसरी, सातवीं और दसवीं दृष्टि मानी जाती है। अंकशास्त्र के अनुसार, इसे 8 अंक का स्वामी माना

गया है। नीलम, नीलिमा, जामुनिया और नीला, कटहला शनि से संबंधित रत्न एवं उपरत्न हैं।

लोहे का व्यवसाय, खनन, तेल, कानून, न्यायालय, भूगर्भशास्त्र, बैंक, कारखाने, कृषि, जेल, विदेश नीति, विधानसभा, स्नायुतंत्र, हड्डियों में फ्रेक्चर, किडनी, दांत, अस्थमा, टी०बी०, लकवा, मानसिक परेशानियां, नपुंसकता, गठिया इत्यादि शनि के कारकत्व में समाहित हैं।

आइए इतनी विशाल योग्यता वाले शनि के जन्म की कथा बतलाते हैं!

शनिदेव का चरित्र विचित्र है। इनके गुणों और अवगुणों के अनेकानेक प्रसंग ज्योतिष में हैं। इसके सम्बन्ध में एक प्राचीन प्रसंग का उदाहरण दे रहा हूं!

ब्रह्मा द्वारा विरचित आदि देवत्र शिव ने सृष्टि के संहार अथवा विसर्जन का दायित्व ग्रहण किया। सृष्टि के समस्त जीवधारियों को आचरण के अनुरूप अनुशासित करना कठिन कार्य था। इस कार्य में अपनी सहायता हेतु भगवान शिव ने सहयोगी गणों को निमंत्रित किया। इसी समय छाया के गर्भ से भगवान भास्कर के नौ पुत्रों ने जन्म लिया। इन पुत्रों में शनि एवं यम की गतिविधि विचित्र थी। इनके बाहुबल से समस्त दैवी शक्तियां अत्यन्त प्रभावित थीं। परिणामतः प्रलयंकारी शंकर ने इन्हें अपनी सेवा में ग्रहण कर लिया। शनि को शिव द्वारा कर्मानुसार दण्ड प्रदान करने का अधिकार प्राप्त हुआ। यम मृत्यु के निमित्त नियुक्त हुए।

भगवान सूर्य के नौ पुत्रों में अपनी भीषणता के लिए शनि महान् हैं। कृष्ण वर्ण यमुना शनि की सहोदरा और यम शनि के अनुज हैं। शनि की रूक्षता के कारण इनका विचित्र परिवार भी है। पुराण कथाओं के अनुसार, सन्तानों के योग्य होने पर सूर्य ने प्रत्येक सन्तान हेतु एक-एक लोक की व्यवस्था की, किन्तु शनि अपने लोक से सन्तुष्ट नहीं हुए। उन्होंने समस्त लोकों पर आक्रमण करने की योजना बनाई। सूर्य को शनि की इस भावना से अत्यन्त कष्ट हुआ। परन्तु शनि पर इसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। अन्ततः सूर्य ने भगवान शिव से निवेदन किया। शिव ने शनि को चेतावनी दी। शनि ने जब उपेक्षा की तो शिव-शनि युद्ध हुआ। शनि ने अपने पराक्रम से समस्त शिवगणों को परास्त कर दिया। अपने सैन्यबल का संहार हुआ देखकर शिव कुपित हो गये। उन्होंने तीसरा नेत्र खोल दिया। शनि ने भी

अपनी मारक दृष्टि का संधान किया। शिव और शनि की दृष्टियों से उत्पन्न एक अप्रतिम ज्योति ने शनि लोक को आच्छादित कर लिया।

भगवान शंकर ने क्रोधित होकर शनि पर त्रिशूल से प्रहार किया। शनि यह आघात सहन नहीं कर सके। वह संज्ञाशून्य हो गये। पुत्र की यह स्थिति देखकर सूर्य का पुत्रमोह प्रबल हुआ। भगवान आशुतोष से उन्होंने शनि के जीवन-रक्षा हेतु कातर निवेदन किया। आशुतोष ने प्रसन्न होकर शनि के संकट को हर लिया। इस घटना से शनि ने भगवान शिव की समर्थता स्वीकार कर ली। उन्होंने शिव से पुनः क्षमायाचना की। शनि ने यह भी इच्छा अभिव्यक्त की कि वह अपनी समस्त सेवायें शिव को समर्पित करना चाहता है। शनि के रणकौशल से अभिभूत भूतभावन शिव ने शनि को अपना सेवक बना लिया। शिव ने शनि को दण्डाधिकारी नियुक्त किया।

इसमें शनि की मन्दगति का कारण बतलाया गया है। पिप्पलाद मुनि की बाल्यावस्था में ही उनके पिता का देहावसान हो गया था। यमुना के तट पर तपस्वी जीवन व्यतीत करने वाले उनके पिता को शनि ने अत्यधिक कष्ट दिया था। विपन्नता और व्याधि के निरन्तर आक्रमण से पिप्पलाद मुनि के पिता के प्राण छीन लिये थे। उनकी माता अपने पति की मृत्यु का एकमात्र कारण शनि को ही मानती थीं। जब पिप्पलाद वयस्क हुआ तो उन्होंने अपनी मां से समस्त तथ्य ज्ञात किये। शनि के प्रति उनका क्रोध प्रचण्ड हो गया। उन्होंने शनि को ढूंढना प्रारम्भ किया।

अचानक एक पीपल के वृक्ष पर शनिदेव के दर्शन हुए। पिप्पलाद मुनि ने शनि पर ब्रह्मदण्ड का संधान किया। शनि यह प्रहार सहन करने में नितान्त असमर्थ थे। वह भागने लगे। ब्रह्मदण्ड ने तीनों लोक में उन्हें उत्पीड़ित किया। अन्ततः ब्रह्मदण्ड ने शनि के दोनों पैर तोड़ दिये। विकल विकलांग शनि शिव से करूण प्रार्थना करने लगे। शिव प्रकट हुए। उन्होंने मुनि को बोधज्ञान दिया कि शनि तो सृष्टि के नियमों का परिपालन करते हैं। काल की कालगति का अतिक्रमण करना संभव नहीं। अतः तुम्हारे पिता की मृत्यु का उत्तरदायित्व शनि पर नहीं। पिप्पलाद मुनि ने शनि को क्षमा कर दिया। उन्होंने कहा कि इस वृत्त का गान और पिप्पलेश्वर महादेव की अर्चना शनिजनित कष्टों का निवारण करेगी। ब्रह्मदण्ड द्वारा पैर टूटने के कारण शनि की स्वाभाविक गति अवरुद्ध हो गई। वह मन्दगति के नाम से प्रसिद्ध हुए।

शनि की अधोदृष्टि क्रूरता का रहस्य इनकी पत्नी द्वारा दिये गये शाप में निहित है। सूर्यपुत्र शनि बाल्यकाल से ही भगवान कृष्ण के प्रति अगाध आस्था रखते थे। अहोरात्रि उनकी अर्चना में तल्लीन रहते थे। योग्य होने पर भगवान सूर्य ने चरित्रवान्, तेज, सम्पन्न तथा गुणवती कन्या से शनि का विवाह कर दिया। एक बार ऋतुस्राव से निवृत्त होकर शनि की पत्नी पुत्राभिलाषा से उनकी सेवा में उपस्थित हुईं। शनि समाधि में लीन थे। पत्नी का ऋतुकाल व्यर्थ चला गया। आहत पत्नी ने पति को शाप दिया कि उनकी नेत्र ज्योति निम्न रहेगी। जिस पर तुम्हारी दृष्टि पड़ जायेगी, वह विनष्ट हो जायेगा। क्रोध शान्त होने पर यद्यपि उन्हें पश्चात्ताप हुआ, किन्तु शाप पूर्ण हो चुका था। उसके पश्चात् शनि दृष्टि सर्वदा के लिए अधोमुखी हो गई।

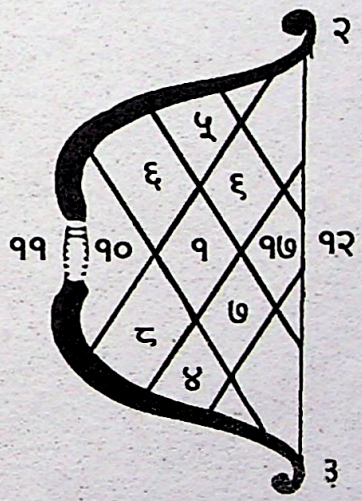
जातक के जीवन में अगर कोई ग्रह सबसे अधिक कष्टप्रद माना जाता है तो वह है शनि। महादशा, अन्तर्दशा, साढ़ेसाती अथवा दशा के रूप में शनि मानव के जीवन में बार-बार आया करता है। मानव-जीवन में शनि केवल तीन बार ही आया करता है—प्रथम बार शनि खेल-कूद, माता-पिता के आश्रम में, दूसरी बार का शनि मानव-जीवन को हिला देता है और तृतीय बार का शनि जीवन के सुख, चैन, शान्ति, धन, यश को समाप्त कर देता है—और भाग्य से अगर चौथी बार शनि आ जावे तो राम-नाम सत्य ही करा दिया करता है। शनिजनित कष्ट निवारण के लिए शनिवार का व्रत, उपवास करना लाभप्रद है। शनि के उपवास को प्रत्येक स्त्री-पुरुष कर सकता है। वैसे यह व्रत किसी भी शनिवार से आरम्भ किया जा सकता है। श्रावण मास के श्रेष्ठ शनिवार से उपवास आरम्भ किया जाये तो विशेष लाभप्रद रहता है। व्रती मनुष्य नदी आदि के जल में स्नान कर, ऋषि-पितृ तर्पण करे, सुन्दर कलश जल से भरकर लावे, शनि अथवा पीपल के पेड़ के नीचे सुन्दर वेदी बनावे, उसे गोबर से लीपे, लोह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत में स्नान कराकर काले चावलों से बनाये हुए चौबीस दल के कमल पर स्थापित करे। काले रंग के गन्ध, पुष्प, अष्टांग, धूप, फूल, उत्तम प्रकार के नैवेद्य आदि से पूजन करे। शनि के दस नामों का उच्चारण करे, जो इस प्रकार हैं—

(1) कोणस्थ
(2) पिंगल
(3) बभ्रु
(4) कृष्ण

(5) रौद्रअन्तक (6) यम
(7) सौरि (8) मन्द
(9) शनैश्चर (10) पिप्पला

शनि अथवा पीपल के वृक्ष में सूत के सात धागे लपेटकर सात परिक्रमा करें तथा वृक्ष का श्रद्धापूर्वक पूजन करें। शनि पूजन सूर्योदय से पूर्व ब्रह्ममुहूर्त अर्थात् तारों की छांव में करना चाहिए। शनिवार उपवास कथा को भक्ति और प्रेमपूर्वक सुनें। कथा कहने वाले को दक्षिणा दें। तिल, जौ, उड़द, गुड़, लोहा, तेल, नीले वस्त्र का दान करें। आरती करें और प्रार्थना करके प्रसाद बांटें। निम्न यंत्र भी पूजा के स्थान पर रखें–

शनि यंत्र (शनि मण्डल)



पहले शनिवार को उड़द का भात और दही, दूसरे शनिवार को खीर, तीसरे को खजला, चौथे शनिवार को घी और पूरियों का भोग लगावें। इस प्रकार तैंतीस शनिवार तक इस उपवास को करें। इस प्रकार व्रत करने से शनिदेव प्रसन्न होते हैं। इससे सर्वप्रकार के कष्ट, अनिष्ट आदि व्याधियों का नाश होता है और अनेक प्रकार के सुख, साधन, धन, पुत्र, पौत्रादि की प्राप्ति होती है। कामना की पूर्ति पर शनिवार के उपवास का उद्यापन करें। तैंतीस ब्राह्मणों को भोजन करावें, व्रत का विसर्जन करें। इस प्रकार

व्रत का उद्यापन करने से पूर्ण फल की प्राप्ति होती है एवं सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति होती है।

राहु, केतु और शनि के कष्ट निवारण हेतु शनिवार के उपवास का भी विधान है।

इस उपवास में शनि की लोहे की, राहु व केतु की सीसे (जस्ता) की मूर्ति बनवाएं। कृष्ण वर्ण वस्त्र, दो भुजदण्ड और अक्षमालाधारी, काले रंग के आठ घोड़े वाले शीशे के रथ में बैठे शनि का ध्यान करें। कराल बदन, खड्ग, चर्म और शूल से युक्त नीले सिंहासन पर विराजमान वरप्रद राहु का ध्यान करें। धूम्रवर्ण, भुजदण्डों, गदादि, आयुध, गृधासन, विराजमान, विकटासन और वरप्रद हेतु का ध्यान करें। इन्हीं स्वरूपों में मूर्तियों का निर्माण करावें अथवा गोलाकार मूर्ति बनावें। काले रंग के चावलों से चौबीस दल का कमल निर्माण करें। कमल के मध्य में शनि, दक्षिण भाग में राहु और वाम भाग में केतु की स्थापना करें। रक्त चन्दन में शुद्ध केशर मिलाकर, गन्ध चावल में काजल मिलाकर, काले चावल, काकमाची, कगलहर के काले पुष्प, कस्तूरी आदि से 'कृष्ण धूप' और तिल आदि के संयोग से कृष्ण नैवेद्य (भोग) अर्पण करें और **'शनैश्चर नमस्तुभ्यं नमस्तेतवथ राहेवे। केतवेअथ नमस्तुभ्यं सर्वशान्ति प्रदो भव'** मंत्र से प्रार्थना करें।

सात शनिवार उपवास करें। शनि हेतु शनि मंत्र से शनि की समिधा में, राहु-हेतु मंत्र से पूर्वा की समिधा में, केतु हेतु मंत्र से कुशा की समिधा में, कृष्ण जौ, देसी घी व काले तिल से प्रत्येक के लिए 108 आहुतियां दें और ब्राह्मण को भोजन करावें।

इस प्रकार शनिवार के व्रत और उपवास के प्रभाव से शनि, राहु, केतु जनित कष्ट, सभी प्रकार के कष्ट तथा आधि-व्याधियों का नाश होता है।

❑❑❑



श्री शनिवार व्रत कथा

एक समय समस्त प्राणियों का हित चाहने वाले मुनियों ने नैमिषारण्य वन में एक सभा की। उस समय व्यास जी के शिष्य सूत जी अपने शिष्यों के साथ श्रीहरि का स्मरण करते हुए वहां पर आए। समस्त शास्त्रों के ज्ञाता श्री सूतजी को आया देखकर महातेजस्वी शौनकादि मुनि उठकर खड़े हो गए और श्री सूतजी को प्रणाम किया। मुनियों द्वारा दिए आसन पर श्री सूतजी बैठ गए।

फिर श्री सूतजी से शौनकादि मुनियों ने आग्रहपूर्वक पूछा—"हे मुनि! इस काल में हरि-भक्ति क़िस प्रकार से होगी? सभी प्राणी पाप करने में लिप्त होंगे, मनुष्यों की आयु कम होगी। ग्रह-कष्ट, धनरहित और अनेक पीड़ायुक्त मनुष्य होंगे। हे सूतजी! पुण्य अति परिश्रम से मिलता है। इस कारण कलियुग में कोई भी मनुष्य पुण्य कार्य न करेगा। पुण्य के नष्ट होने से मनुष्यों की प्रकृति पापमयी होगी। इस कारण तुच्छ विचार करने वाले मनुष्य अपने अंश सहित नष्ट हो जाएंगे। हे सूतजी! जिस तरह थोड़े-से परिश्रम, थोड़े-से धन और थोड़े समय में ही पुण्य की प्राप्ति हो सके, ऐसा कोई उपाय हम लोगों को बताइए। जिसके उपदेश से मनुष्य पुण्य और पाप करता है, उसके पुण्य और पाप का वही मनुष्य भागी होता है, यह शास्त्र का निर्णय है। हे सूतजी! जो मनुष्य रत्नरूपी ज्ञान से दूसरों को आलोकित करते हैं, उन्हें रूप धारण किए श्री हरि ही जानना चाहिए। हे मुनि! कोई ऐसा व्रत-उपवास बताइए, जिसके करने से शनिदेव के द्वारा प्रदत्त कष्टों से मनुष्य को मुक्ति मिले तथा उस व्रत के करने से शनिदेव

प्रसन्न हों। हे मुनि! शनि की दशा में जो घोर कष्ट उठाने पड़ते हैं, उन्हें सुनने की हमारी प्रबल इच्छा है।"

तब सूतजी बोले—"हे मुनि श्रेष्ठ! तुम महान् हो, तुम्हीं वैष्णवों में अग्रगण्य हों, क्योंकि आप लोग सब प्राणियों के सच्चे हित की कामना करते हो। मैं आपसे उत्तम व्रत करने को कहता हूं, ध्यानपूर्वक सुनें, जिसके करने से भगवान शंकर प्रसन्न होते हैं और शनि ग्रह के कष्ट कभी प्राप्त नहीं होते।"

सूतजी फिर बोले—"हे ऋषियों! युधिष्ठिर आदि पाण्डव वनवास में अनेक कष्ट भोग रहे थे। उस समय उनके प्रिय सखा श्री कृष्ण उनके पास पहुंचे। युधिष्ठिर ने श्री कृष्ण को आया देखकर उनका बहुत आदर किया और सुंदर ऊंचे आसन पर बैठाया। तत्पश्चात् श्री कृष्ण उनसे गंभीर वाणी में बोले—"हे युधिष्ठिर! कुशलपूर्वक तो हो?"

युधिष्ठिर ने कहा—"हे प्रभो! आपकी कृपा है। कृपा करके आप कोई ऐसा व्रत बतलाएं, जिसके करने से यह ग्रह-कष्ट न व्यापे, इससे मुक्ति मिले। शनि ग्रह बहुत कष्ट देता है।"

उत्तर में श्री कृष्ण बोले—"राजन्! आपने बहुत ही सुंदर बात पूछी है। आपसे एक उत्तम व्रत कहता हूं, सुनो! जो मनुष्य भक्ति और श्रद्धायुक्त होकर शनिवार के दिन भगवान शंकर का व्रत करते हैं, उन्हें शनि ग्रह की दशा में कोई कष्ट नहीं होता। उन्हें निर्धनता नहीं सताती तथा इस लोक में अनेक प्रकार के सुखों को भोगकर अन्त में शिवलोक की प्राप्ति होती है।"

युधिष्ठिर बोले—"हे प्रभो! सबसे पहले यह व्रत किसने किया था? कृपा करके इसे विस्तारपूर्वक कहें तथा इसकी विधि भी बतलाएं।"

तब भगवान श्री कृष्ण बोले—"राजन्! विशेषकर श्रावण मास में शनिवार के दिन शनिदेव की कच्चे लौह से निर्मित प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर अनेक प्रकार के गंध, अष्टांग, धूप, ऋतु फल और उत्तम प्रकार के नैवेद्य आदि से पूजन करें। शनि के दस नामों का उच्चारण करें। तिल, जौ, उड़द, गुड़, लोहा, नीले वस्त्र का दान करें। फिर भगवान शंकर का विधिपूर्वक पूजन करें। आरती कर यह प्रार्थना करें कि हे भोलेनाथ! मैं आपकी शरण में हूं, आप मुझ पर कृपा करें। मेरी रक्षा करें।

हे युधिष्ठिर! पहले शनिवार को उड़द का भात, दूसरे को केवल खीर, तीसरे को खजला, चौथे को पूरियों का भोग श्रद्धापूर्वक लगाएं।

व्रत की समाप्ति पर यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन कराएं।

ऐसा करने से सब प्रकार के अनिष्ट, कष्ट, आधि-व्याधियों का सर्वथा नाश होता है। राहु, केतु और शनि कृत दोष दूर होते हैं तथा अनेक प्रकार के सुख-साधन एवं पुत्र-पौत्रादि का सुख प्राप्त होता है। अब सबसे पहले जिसने इस व्रत को किया था, उसका इतिहास भी सुनो!

पूर्वकाल में इस पृथ्वी पर एक राजा राज्य करता था। उसने अपने शत्रुओं को वश में कर लिया।

देव गति से राजा और राजकुमार पर शनि की दशा आ गई। राजा को उसके शत्रुओं ने मार डाला। राजकुमार भी बेसहारा हो गया। राजगुरु को भी बैरियों ने मार डाला। उसकी विधवा ब्राह्मणी तथा उसका लड़का शुचिव्रत रह गए। ब्राह्मणी ने राजकुमार धर्मगुप्त को भी अपने साथ ले लिया और नगर को छोड़कर चल दी।

निर्धन ब्राह्मणी दोनों कुमारों का बहुत कठिनाई से निर्वाह कर पाती थी। वह कभी किसी शहर और कभी किसी नगर में दोनों कुमारों को लिए घूमंती रहती थी।

एक दिन वह ब्राह्मणी दोनों कुमारों को लिए एक नगर से दूसरे नगर जा रही थी कि उस मार्ग में उसे महर्षि शांडिल्य के दर्शन हुए।

ब्राह्मणी ने दोनों बालकों के साथ मुनि के चरण स्पर्श किए और बोली—"महर्षि! मैं आज आपके दर्शन से कृतार्थ हो गई। यह मेरे दोनों कुमार आपकी शरण में हैं। आप इनकी रक्षा कीजिए। हे मुनि श्रेष्ठ! यह मेरा पुत्र शुचिव्रत है और यह धर्मगुप्त। हम घोर विपत्ति में हैं, आप हमारा उद्धार कीजिए।" मुनि शांडिल्य ब्राह्मणों की सब बात सुनकर बोले—"हे देवी! तुम्हारे ऊपर शनि का प्रकोप है, अतः तुम शनिवार के दिन व्रत करके भगवान शिव की अराधना करो, इसी में तुम्हारा कल्याण निहित है।"

ब्राह्मणी और दोनों कुमार मुनि को प्रणाम कर शिव मंदिर की तरफ चल पड़े। दोनों कुमारों ने ब्राह्मणी सहित मुनि के उपदेश के अनुसार शनिवार का व्रत किया तथा शिवजी का पूजन किया। दोनों कुमारों को यह व्रत करते-करते चार मास व्यतीत हो गए।

एक दिन शुचिव्रत स्नान करने के लिए गया। उसके साथ राजकुमार धर्मगुप्त नहीं था। कीचड़ में उसे एक बहुत बड़ा कलश दिखाई दिया। शुचिव्रत ने उसे उठाया और देखा, तो उसमें धन था।

शुचिव्रत उस कलश को लेकर घर आया और मां से बोला—"हे मां! शिवजी के प्रसाद को देख, भोले शंकर ने इस कलंश के रूप में धन दिया है।"

माता ने आदेश दिया—"बेटा! तुम दोनों इसे बांट लो।"

मां का वचन सुनकर शुचिव्रत प्रसन्न हुआ और धर्मगुप्त से बोला—"भैया! अपना हिस्सा ले लो।"

परंतु शंकर जी की पूजा में विश्वासी राजकुमार धर्मगुप्त ने कहा—"मां! मैं हिस्सा नहीं लेना चाहता, क्योंकि जो कोई अपने सुकृत से कुछ भी पाता है, वह उसी का भाग है और उसे आप ही भोगना चाहिए। भोलेश्वर शिवजी मुझ पर भी कभी-ना-कभी कृपा करेंगे।"

धर्मगुप्त प्रेम और भक्ति के साथ शनि का व्रत करके पूजा करने लगा। इस प्रकार एक वर्ष व्यतीत हो गया। बसंत ऋतु का आगमन हुआ।

राजकुमार धर्मगुप्त तथा ब्राह्मणपुत्र शुचिव्रत दोनों ही वन में घूमने के लिए गए। दोनों वन में घूमते-घूमते काफी दूर निकल गए। उनको वहां सैकड़ों गंधर्व कन्याएं खेलती हुई मिलीं। ब्राह्मण कुमार बोला—"भैया! पवित्र पुरुष स्त्रियों के मध्य में नहीं चलते। ये मनुष्य को शीघ्र ही मोह लेती हैं। विशेष रूप से ब्रह्मचारी को स्त्रियों से संभाषण करना व मिलना भी नहीं चाहिए।" परंतु गंधर्व कन्याओं के खेल को देखने की इच्छा रखने वाला राजकुमार खेल देखने उनके खेल के स्थान पर अकेला चला गया। ब्राह्मण कुमार राजकुमार के साथ नहीं गया।

उन गंधर्व कन्याओं के बीच एक प्रधान सुंदरी उस राजकुमार को देखकर उस पर मोहित हो गई और अपनी सखियों से बोली—"यहां से थोड़ी दूरी पर एक सुंदर वन है, उसमें नाना प्रकार के फूल खिले हैं, तुम जाकर उन सुंदर फूलों को तोड़कर ले आओ, तब तक मैं यहीं बैठी हूं।"

सखियां गंधर्व कन्या की आज्ञा पाकर चली गईं और वह गंधर्व कन्या राजकुमार पर दृष्टि लगाकर बैठ गई। राजकुमार उसके पास चला गया।

राजकुमार को देखकर गंधर्व कन्या ने उसको पल्लवों का आसन दिया। राजकुमार आसन पर बैठ गया। गंधर्व कन्या ने पूछा—"आप कौन हैं? किस देश के रहने वाले हैं तथा आपका आगमन यहां कैसे हुआ है?"

राजकुमार ने कहा—"मैं विदर्भ देश के राजा का पुत्र हूं, मेरा नाम धर्मगुप्त है। मेरे माता-पिता स्वर्गलोक सिधार गए। शत्रुओं ने मेरा राज्य

मुझसे छीन लिया है। मैं राजगुरु की पत्नी के साथ रहता हूं, वह मेरी धर्म की मां हैं।"

फिर राजकुमार ने उस गंधर्व कन्या से पूछा—"आप कौन हैं, किसकी पुत्री हैं और किस कार्य से यहां पर आपका आगमन हुआ है?"

गंधर्व कन्या ने कहा—"मैं विद्रविक नाम के गंधर्व की पुत्री हूं, मेरा नाम अंशुमति है। आपको आता देख आपसे बात करने की इच्छा हुई। इसीलिए मैं अपनी सखियों को अलग भेजकर अकेली रह गई हूं। गधंर्व कहते हैं कि मेरे बराबर संगीत विद्या में कोई निपुण नहीं है।

भगवान शंकर ने हम दोनों पर कृपा की है, इसलिए आपको यहां पर भेजा है, अब से मेरा और आपका प्रेम कभी न टूटेगा।" ऐसा कहकर कन्या ने अपने गले से मोतियों का हार उतारकर राजकुमार के गले में डाल दिया।

राजकुमार धर्मगुप्त ने कहा—"मेरे पास न राज है, न धन। आप मेरी भार्या कैसे बनेंगी? आपके पिता हैं। आपने अभी उनकी आज्ञा भी तो नहीं ली है।"

गंधर्व कन्या बोली—"अब आप अपने घर जाएं। परसों प्रातःकाल यहां पर फिर आइएगा। मुझे आपकी आवश्यकता होगी।" राजकुमार से ऐसा कहकर गंधर्व कन्या अपनी सहेलियों के पास चली गई। राजकुमार धर्मगुप्त शुचिव्रत के पास चला आया और उसे सब समाचार कह सुनाया।

राजकुमार धर्मगुप्त तीसरे दिन शुचिव्रत को साथ लेकर उसी वन में गया। उसने देखा कि स्वयं गंधर्वराज विद्रविक उस कन्या को साथ लेकर उपस्थित हैं।

गंधर्वराज ने दोनों कुमारों का अभिवादन किया और दोनों को सुन्दर आसन पर बैठाकर राजकुमार से कहा—"हे राजकुमार! मैं परसों कैलाश पर्वत पर गौरीशंकर के दर्शन करने के लिए गया था। वहां करूणारूपी सुधा के सागर भोले शंकर जी महाराज ने मुझे अपने पास बुलाकर कहा—"गंधर्वराज! भू-लोक पर धर्मगुप्त नाम का राज्यविहिन राजकुमार है। उसके परिवार के लोगों को शत्रुओं ने समाप्त कर दिया है। वह बालक गुरु के कहने से शनिवार का व्रत करता है और सदा मेरी सेवा में लगा रहता है, तुम उसकी सहायता करो, जिससे वह अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सके। गौरीशंकर की आज्ञा को शिरोधार्य कर मैं अपने घर चला आया। वहां मेरी पुत्री अंशुमति ने भी ऐसी ही प्रार्थना की।

शिवशंकर की आज्ञा तथा अंशुमति के हृदय की बात सुनकर इसको इस वन में लाया हूं। मैं इसे आपको सौंपता हूं। मैं आपके शत्रुओं को परास्त कर आपका राज्य वापस दिला दूंगा।" —ऐसा कहकर गंधर्वराज ने अपनी कन्या का विवाह राजकुमार के साथ कर दिया तथा अंशुमति की सहेली की शादी ब्राह्मण कुमार शुचिव्रत के साथ कर दी गई। उसने राजकुमार की सहायता के लिए गंधर्वों की चतुरंगिणी सेना भी भेज दी।

धर्मगुप्त के शत्रुओं ने जब यह समाचार सुना तो उन्होंने राजकुमार की अधीनता स्वीकार कर ली और राजकुमार का राज्य लौटा दिया। धर्मगुप्त सिंहासन पर बैठा। उसने अपने धर्मभाई शुचिव्रत को मंत्री नियुक्त किया। जिस ब्राह्मणी ने उसे पुत्र की तरह पाला था, उसे राजमाता बनाया गया। शनिवार के व्रत के प्रभाव से और शिवजी की कृपा से धर्मगुप्त इस प्रकार से विदर्भराज हुआ।"

भगवान श्री कृष्ण युधिष्ठिर से बोले—"हे पाण्डुनंदन! आप भी यह व्रत करें तो कुछ समय पश्चात् आपको भी राज्य प्राप्त होगा और सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी। आपके बुरे दिनों की शीघ्र समाप्ति होगी।"

युधिष्ठिर ने शनिवार व्रत की कथा सुनकर श्री शिव भगवान की पूजा की और व्रत आरम्भ कर दिया। इस व्रत के प्रभाव से पांडवों ने महाभारत के युद्ध में विजय प्राप्त कर राज्य प्राप्त किया और जीवन के सभी सुख भोगने के बाद स्वर्ग की प्राप्ति की।"

सूतजी बोले—"हे मुनिश्वरों! शनिवार को शनि व्रत, उपवास, पीपल का पूजन तथा भगवान शिव का दर्शन और पूजन करें। शनिवार व्रत कथा को सुनने से निर्धन को धन, अपुत्र को पुत्र, बंदी मुक्त हो, सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति होती है। नाना प्रकार के सुख भोगकर अंत में शिवलोक की प्राप्ति होती है। इस कथा को कहने तथा सुनने वाले दोनों के सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं।"

शनि विचार

शनि ग्रह वैदूर्य रत्न या वाणफूल अथवा अलसी के फूल जैसा निर्मल नीले रंग से प्रकाशित होता है। यह जिन वर्णों को प्रकाश देता है, उन वर्णों के लोगों का नाश करता है। ग्रह माला का अंतिम मनका, मारक व अशुभ माना गया है। पश्चिमी ज्योतिषी भी इन्हें दुर्दैव लाने वाला मानते हैं। शनि

का जन्म होते ही पिता सूर्य पर दृष्टि पड़ी और उन्हें कुष्ठ रोग हुआ। उनका सारथी अरुण लंगड़ा हुआ व घोड़े अंधे हो गए; अर्थात् इनकी दृष्टि में विनाश-ही-विनाश छिपा है; पर यदि यह कृपावान हो जाएं तो आनंद-ही-आनंद देते हैं। इन्हें यम, काल, दुःख, दैत्य, मंद कहते हैं। पाश्चात्य ज्योतिषियों ने इन्हें शैतान कहा है।

इनका उदय पृष्ठ भाग से, यह चौपाये, पर्वत, वनों में घूमने वाले, शतायु, मूल-प्रधान, कृष्ण वर्ण हैं। इनके देवता ब्रह्मा हैं। नील रत्न, गंगा से हिमालय तक का प्रदेश, अन्त्यज, तमोगुणी, वायु तत्व युक्त, कषैली, रुचि, निम्न दृष्टि, स्त्री-स्थान, तीक्ष्ण स्वभाव पर शनि का अधिकार है। सूर्य से यह पराजित तुला, मकर, कुंभ राशि में स्त्री-स्थान में, विषुवत् के दक्षिणायन में, द्रेष्काण में स्वराशिस्थ शनिवार को, अपनी दशा, राशि के अंतिम भाग में, युद्ध के समय कृष्ण पक्ष में, वक्री अवस्था में सदैव बलवान् होता है। यह शूद्र, तमोगुणी, संध्या के समय बलवान् होता है। भाग्यहीन व नीरस वस्तुओं पर इनका अधिकार है। पश्चिम दिशा का स्वामी, पक्षीस्वरूप, भूमि-स्वामी, शंकर जाति का है। यह अपवित्र स्थान, स्पर्शेन्द्रिय, लौह धातु, ज्ञानार्जन, प्रवास, काठियावाड़ प्रदेश, तिल पर अधिकार रखता है। गुरु के बाद में इसकी कक्षा है। खूब प्रकाशमान नहीं, रंग फीका, राख जैसा निस्तेज है। राशिचक्र की परिक्रमा यह 29 वर्ष 5 माह 17 दिन 5 घंटे में पूरी करता है। शनि की मध्यम गति 2 कला 1 विकला है। दैनिक गति 3 से 6 कला, सिर उत्तर की ओर, 2 अंश 49 कला रहता है व दक्षिण की ओर 2 अंश 49 कला 140 दिन वक्री रहता है। वक्री व मार्गी होते समय 5 दिन स्तम्भित रहता है। शनि अभिकृत स्थानों में रेगिस्तान, जंगल, अज्ञात घाटियों, गुफाओं, पर्वत, कब्रिस्तान, चर्च के मैदान, खंडहर, अंधेरे स्थान, कोयले की खानों, मैली-बदबूदार जगहों, कार्यालय आदि का समावेश है। स्वभाव शीतल, यक्ष, उदासीन, पुरुष ग्रह, पृथ्वी तत्व का स्वामी, एकांत-प्रेमी है।

शनि-प्रधान जातक आलसी, दुर्बल-दृष्टि, पिंगल वर्ण, लम्बे अवयव, बड़े दांत, रूक्ष केश, काला शरीर, बड़े-बड़े नख, लम्बा कद, विस्तृत स्नायु, मूर्ख-क्रोधी, मैला, वृद्ध जैसा, नीचे की ओर देखकर चलने वाला, दुष्ट, चुगलखोर, तामसी, काले वस्त्र धारण करने वाला, कार्यअकुशल, दृष्टि से डरपोक, ओष्ट बड़े, मझला कद, बारीक आंखें, भाल भव्य, घुंघराले बाल, लटकते कान, झुकी-झुकी भौंहें, मोटी नाक, पतली दाढ़ी, कुरूप, झुका सिर,

अटपटा चेहरा, चौड़े कंधे, टेढ़ा-मेढ़ा पतला पेट, बारीक जंघा, टेढ़े-मेढ़े घुटने, शराबी जैसी चाल, एक-दूसरे से परस्पर सटे घुटने, शरीर पर बहुत कम अंश होंगे।

जन्मपत्रिका में शनि शुभ हो ता गहरा विचार, अल्पभाषी, व्यवस्थित बर्ताव, परिश्रमी, गम्भीर भाषण देने वाला, लेन-देन में खुले दिल से व्यवहार करने वाला, जीवन का उंत्तरार्ध अधिक सुखी, व्यसनी, अभ्यासशील वृत्ति तथा कुंडली में अशुभ होने पर शत्रुवत् व्यवहार, लोभी, मत्सर स्वभाव, अविश्वासी, डरपोक, संकटपूर्ण व्यवहार, हीनता, कंजूसी, सच्चे स्वरूप को छुपाने वाला, आलसी, वहमी, स्वार्थी, स्त्रियों से अपमानित, झूठा, दुष्ट, रोनी सूरत बनाए रखने वाला, कार्य करने में धूर्तता का सहारा लेता है। प्रतिशोध की भावना विशेष रहती है। अधार्मिक, गाली-गलौज करने वाला, वीभत्स बोलने वाला, ठग, बहुभक्षी, झगड़ालू होगा, लोभी, अल्पधनी होगा।

शनि ग्रह के शांत, गम्भीर, निसर्गत, वृद्धावस्था पर आधेकार, आत्मविश्वास, संकुचित वृत्ति, मितव्ययी, सावधानी, धूर्त्तता विशेष गुण हैं। दृढ़ इच्छाशक्ति, स्थिर, दृढ़ वृत्ति, उल्लास, आनंद, प्रसन्नता से दूर, किसी को श्रेष्ठ न मानना, व्यवहारकुंशल, चतुर, योग्यता देखकर लोगों से काम लेना, महत्वाकांक्षी, दूर की सोचने वाला, विशेष योजनाएं बनाने वाला; पर किसी से सफल नहीं।

जन्मपत्रिका में शुभ होने पर कुटुम्ब प्रेम बढ़ाने वाला, सामाजिक व आर्थिक पक्ष दृढ़, त्यागी, उन्नति हेतु प्रयत्नशील, निरभिमानी, लोक कल्याणार्थ प्रयत्नशील, मिलनसार, उदार, राष्ट्रोपयोगी कार्य में तत्पर, अनेक का घर बसाने वाला, परोपकारी, विद्वान्, संशोधक, मंत्री, अध्यात्मवादी ज्ञानी, विश्वबंधुत्व प्रेम, पवित्रता की भावना, खोजी वृत्ति, अनासक्त अधिकार की इच्छा न रखने वाला, गूढ़ शास्त्रों का प्रणेता, लेखक, प्रकाशक, तत्वज्ञ, स्वाभिमानी, कीर्तिमान, संस्थानों के संस्थापक, अन्याय-विरोधी, जुल्म न सहने वाला, श्रीमान्, स्व-सुखाभिलाषी, एकांतप्रेमी, गोद लिये जाने वाला, उपकार-अपकार की इच्छा नहीं, अलप मित्रयुक्त, कुछ डरपोक, संयमी, प्रतिशोध लेने वाले, सावधान, दीर्घ उद्योगी, सौजन्ययुक्त, नियमित, व्यवस्थित, कार्य में दृढ़, गम्भीर, हठवादी, दुराग्रही, अन्य की न सुन अपने मन की करने वाला, दीर्घायु, अधिकार की लालसा रखने वाला—पर ये अधिकार लम्बे समय तक नहीं टिकते, राष्ट्रीय कार्यों में भाग लेने वाला

कानून अभ्यासी, मधुरभाषी होगा।

अशुभ होने पर स्वार्थी, धूर्त, दुष्ट, मनमानी करने वाला, दुर्बल मन आलसी, मंदबुद्धि, उद्योग-विमुख, अविश्वसनीय गर्वीला, नीच कर्म रत घातपाती, झगड़ालू, विरोध बढ़ाने वाला, थोड़ी बचत, अपव्ययी, व्यवसाय से चिकित्सक, सच-झूठ में भेद नहीं, ईष्यालु, कठोरभाषी, विचित्र मनोवृत्ति, असंतुष्ट, व्यसनी, स्त्री-इच्छुक, पाप-पुण्य न मानने वाला, स्वभाव-प्रधान, दूसरों की गलतियां ढूंढने वाला, वीभत्स करने वाला, अविचारी, परधन अपहरणकर्ता, धन की बलवती तृष्णा, सत्ता हितार्थ प्रयत्नशील, जुल्मी, दुराचारी अपने को प्रमुख समझने वाला, क्रोधी, दम्भी, झूठा, गद्दार, दरिद्र होगा। मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक, मीन, मिथुन राशियों में शुभ व वृष कन्या, मकर में अनिष्ट फल देता है।

शनि की वस्तुएँ

सीसा, टिन, लोहा, हल्के धान्य, प्रेत की अर्थी के वाहक, नीच जन, स्त्रियों का व्यापार, गुलाम, वृद्ध, दीक्षा, दास, वृद्धत्व, आयु, मृत्यु के कारण, सम्पत्ति का विचार, दरिद्रता, पिशाच-बाधा, चोरी, संधि रोग, जीवन के उपाय, दुख, भय, शोक, नाश, भैंस, हाथी, कपड़े, शृंगार, प्रवास, राज्य, लकड़ी के आयुध, घरेलू झगड़े, शूद्र, नील रत्न, विघ्न, केश, शल्य, शूल रोग, लोभ, मोह, विषमता, अन्यान्य को कष्ट, नाश करना, निष्ठुरता, दुष्ट बुद्धि, दरिद्रता, क्रोध, ठगी, काले अनाज, तेल का व्यापार, नौकर-चाकर, नीच, वनचर, लुहार, कोयल, हाथी, संपेरा, बौद्ध, गधा, बकरा, भेड़िया, सर्प, कौआ, मच्छर, खटमल, कीट-पतंगे, उलूक, वात-कफ, पैरों के रोग, आपत्ति, तन्द्रा, श्रम, भ्रम, पसली का दर्द, दैहिक उष्णता, नौकरों का नाश, स्त्री–संतान पर विपत्ति, अंग-भंग, हृदय कष्ट, वृक्ष से पतन, पत्थर से आघात, कैद, चर्म, क्लेश, विरोध, स्त्री-सुख, दासी, चाण्डाल, काने, लंगड़े, वीभत्स, उदार, नपुंसकता, अन्त्यज, पक्षी, अग्नि, आचार, झूठ, लकड़ी, वायु, स्नायु, संध्याकाल, वीर्य, शिशिर ऋतु, श्रम, क्षत्रियों की अवैध संतान, मलिनता, घर, अपवित्रता, पाप कर्म, भस्म, वर्ण शूद्र, वैश्य, पिता, अन्य कुलों का ज्ञान-संग्रह, क्षीणता, कम्बल, पश्चिममुख खेती, शस्त्र, जीत, ईशान दिशा, नागलोक, लड़ाई, प्रवास, शल्य, पुराना, तेल, तामसी स्वभाव, विष, भूमि, संचार, कठिनता, डर, विषाद, मृत्यु की उपासना, कुत्ते, चित्त की कठोरता, साधु, साम्प्रदायिक भिक्षुक, विदूषक, दलित, रात के कार्य करने वाले,

रसोइए, चिमनी साफ करने वाले, खोदने वाले, गाड़ी चलाने वाले, माली, मोमबत्ती बनाने वाले, ग्वाले, दांत, दाहिने कान के रोग, चौथे दिन का बुखार, शीत ज्वर, कोढ़, रक्त-पित्त, क्षय, अर्द्धांग वायु, कम्पन, पागलपन, जलोदर, संधिवात, अति रक्तस्राव, हड्डी टूटना, बैंक, ब्याज का धंधा, मिल संबंधी कानून, भूगर्भ शास्त्र, मुस्लिम कानून, मिल मालिक, साझेदारी, प्रिंटिंग प्रेस, बड़ी कम्पनियां, जिनिंग, प्रिसिंग, फैक्ट्री, ब्रोकर, बीमा व्यवसाय, बेचकी, कृषि विद्यालय, रोमन कानून, पुरातत्व विभाग, हठयोग, उच्च न्यायालय, न्यायाधीश, नगरनिगम, जिला परिषद्, विधानसभा सदस्य, जमींदार, खनिज पदार्थ, खलनायक, कैद, दंड, राजनीति, व्यवसाय-हानि, सरकार की ओर से मुकदमा चलाया जाना, छोटे भाई-बहन, चोरी, जेलर, जेल सुपरिण्टेण्डेण्ट, विदेश मंत्री, विदेश नीति, इंजेक्शन, सेना में क्वार्टर मास्टर, हड्डियों के व्रण, दाद, खाज, खुजली, यकृत, प्लीहा, मल-मूत्रोत्सर्जक इन्द्रियों के रोग, हाथी-पांव, पसीने में सुगंध आदि।

शनि-दान

नीलम, लोहा, छतरी, काले तिल, तेल, जूते, स्वर्ण, उड़द, कुलथी, काला वस्त्र, काले पुष्प, कंबल, भैंसा आदि।

जप संख्या—23,000।

वेदोक्त शनि मंत्र

साधक नित्य कृत्य अर्थात् नित्य कर्म स्नानादि से निवृत होकर स्वच्छ धुले वस्त्र धारण करके शुद्ध आसन पर बैठकर आचमन, प्राणायाम करके संकल्प करें—

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः तत्सद्येहेत्यादि मम (यमजानस्य) जन्म-वर्ष, मासादिषु योअनिष्टफलकारकः शनि ग्रहस्तस्यानुकूल्यार्थ सकलाधिव्याधि झटितिप्रशमनपूर्वकदीर्घायुर्बल पुष्टिनैरूज्यादि सकलेष्ट सिद्धयर्थ शनि ग्रह प्रीतये शनिग्रहस्य 23,000 संख्यया जपं करिष्ये।

तदंगत्वेन आदौ गणपति जपं करिष्ये। इति संकल्म्य ॐ गं गणपतये नमः इति जपं कुर्यात्।

संकल्प करके शनि मंत्र के जाप से पूर्व **"गं गणपतये"** का जाप करना आवश्यक है।

विनियोग

ॐ शन्नो देवीरीति मंत्रस्य दध्यंगार्थर्वण ऋषिः गायत्री छन्दः शनि देवता आपोबीजं वर्तमान इति शक्तिः शनैश्चर प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥

ऋष्यादिन्यास

ॐ दध्यंगार्थर्वणः ऋषये नमः शिरसि।
गायत्री छन्द से नमः मुखे।
शनैश्चर देवताये नमः हृदये।
आपोबीजाय नमः गुहो।
वर्तमान शक्तये नमः पादयोः।

करन्यास

ॐ शन्नोदेवीरित्यङ् गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ अभीष्टये तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ आपोभवन्तु मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ पीतये अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ शंय्योरिति कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ अभिस्रवन्तु नः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

ॐ शन्नोदेवीरिति हृदयाय नमः।
ॐ अभीष्टये शिरसे स्वाहा।
ॐ आपोभवन्तु शिखायै वषट्।
ॐ पीतये कवचाय हुम्।
ॐ शंय्योरिति नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ अभिस्रवन्तुः नः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

नीलद्युतिः शूलधरः किरीटी गजस्थितरत्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदास्तु मध्यं वरदो महात्मा॥

इसके बाद शनि की षोडशोपचारपूर्वक पूजा करके जपादि प्रारंभ करें।

मंत्र

ॐ शन्नोदेवीरभीष्टय आपोभवन्तु पीतये।
शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः।
जप संख्या—2,300।
जपोपरांत 2,300 आहुति यज्ञ शमी की समिधा व घृत से करें।

तंत्रोक्त शनि जपादि

अस्य श्री शनि मंत्रस्याथर्वण ऋषिः गायत्री छन्दः शनिश्चरो-देवता आपोबीजं शं शक्तिः अभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

अथर्वणऋषये नमः शिरसि।
गायत्री छन्द से नमः मुखे।
शनैश्चर देवतायै नमः हृदये।
आपोबीजाय नमः गुह्यो।
शं शक्तये नमः पादयोः।

हृदयादिन्यास

ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः।
खां तर्जनीभ्यां नमः।
खीं मध्यमाभ्यां नमः।
खूं अनामिकाभ्यां नमः।
सः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ खां खीं खूं सः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

ध्यानम्

नीलाम रः शूलधरः किरीटी गृध्रस्थित त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाअस्तु मध्यं वरदोअल्पगामी॥

शनि-शांति

जब शनि की ढैया या साढ़ेसाती हो तो श्रावण मास में प्रथम शनिवार के दिन से 7 शनिवार तक व्रत करें। 7वें शनि के दिन कर्म से निवृत होकर शुद्ध आसन पर बैठकर संकल्प करें। गणपति पूजन, कलश स्थापन, पुण्याहवाचन, ब्राह्मण वरण करें।

लोहे के पात्र, लोहे की शनि-प्रतिमा स्थापित करें। काले वस्त्र पर विराजमान करें। कृष्ण वस्त्र चढ़ाएं। पंचामृत से; तिल, तेल से, कृष्ण पुष्प आदि से षोडशोपचार पूजा करें। खिचड़ी, बाकले, खीर, ज्वार की खिचड़ी, पूड़ी, दही, मधु, घृत, साकल्य, शमी-समिधा से मूल मंत्र से यज्ञ करें। बलिदान व पूर्णाहुति होम करें व शनि का दान दें।

शनि के कुछ मंत्र इस प्रकार हैं–

ॐ शं शनैश्चराय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।

शनि के इन दस नामों का प्रातः पाठ करने से शनि की पीड़ा का गमन होता है– **कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्राऽन्तको यमः।**
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन-संस्तुतः॥
एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाचिद्भविष्यति॥

विश्वास रखें, शनि महाराज आप पर भी कृपा करेंगे। कृपया आप शनिदेव की कृपा पाने के लिए अपने व्यस्त समय में से कुछ समय निकाल कर शनि की आराधना कर उन्हें प्रसन्न करने का प्रयत्न करें। स्मरण रहे, अगर कोई अपराधी न्यायाधीश पर टीका-टिप्पणी करता है तो न उससे न्यायाधीश का चरित्र बदलता है और न ही उसका कर्म। शनिदेव विधि-विधान के अनुसार अपना निर्णय, दण्ड या पुरस्कार देने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। शनिदेव जीवों को उनके सत्कर्मों का पुरस्कार भी प्रदान करते हैं। वे पूर्णतः दोषमुक्त रहते हुए अपने सारे दायित्वों का निर्वाह करते हैं। अतः दोष दर्पण में नहीं दोष तो शरीर में हो सकता है। अतः शनिदेव पर किसी प्रकार का दोषारोपण करना बेकार है।

❑❑❑



शनि शुभ या अशुभ कब?

अगर शनि चन्द्र लग्न में पंचम भाव पर स्थित राशि में भ्रमण कर रहा है, तो व्यवसाय में मंदी, अनावश्यक व्यय, मानसिक अशांति, अध्ययन के प्रति विमुखता, आर्थिक संकट, पत्नी के स्वास्थ्य में गिरावट इत्यादि कष्टदायक फलों को भोगना पड़ता है और अगर शनि जन्मराशि से षष्ठ भाव में भ्रमण कर रहा है, तो जातक को प्रायः शुभ फल प्राप्त होता है।

अगर शनि चन्द्रमा की राशि से तीसरी राशि में भ्रमण कर रहा है, तब मनुष्य को आर्थिक लाभ, व्यापार एवं व्यवसाय में उन्नति, नए वाहन का क्रय, मुकदमों में विजय इत्यादि शुभ फल प्राप्त होते हैं। यदि शनि जन्म चक्र में स्थित चन्द्रमा की राशि से चतुर्थ भवन में होता है, तब धरती संबंधी मुकदमों में पराजय, स्थानान्तरण, निवास स्थान का परिवर्तन, निलम्बन, अनावश्यक व्यय इत्यादि अशुभ फल मिलते हैं।

अगर शनि जन्मचक्र में चन्द्रमा जिस राशि में स्थित है, उसी राशि में भ्रमण कर रहा है, तो जातक के स्वास्थ्य में गिरावट, स्थान परिवर्तन, परिवार में कटुता, आर्थिक हानि, शत्रुओं से भय इत्यादि अशुभ फल प्राप्त होते हैं। यदि शनि जन्मचक्र में चन्द्रमा स्थित राशि से दूसरी राशि पर भ्रमण कर रहा है, तो जातक की पत्नी को स्वास्थ्य संबंधी पीड़ा होती है। इसके अतिरिक्त जातक के जीवन में अशुभ फल भी घटते हैं।

अगर शनि जन्म राशि से एकादश भवन में भ्रमण कर रहा है, तो जातक को शुभ फलों की प्राप्ति होती है। यदि शनि जन्म राशि से द्वादश भवन में भ्रमण कर रहा है, तो जातक को व्यय, आर्थिक परेशानी, संतान को कष्ट, यात्राओं में हानि, स्वास्थ्य में गिरावट इत्यादि अशुभ फलों की प्राप्ति होती है।

अगर शनि जन्म राशि से सप्तम राशि में आया है, तो जातक के स्वास्थ्य में कमी, आर्थिक संकट, व्यवसाय में घाटा, दाम्पत्य जीवन में कटुता, जीवनसाथी को कष्ट आदि फल प्राप्त होने लग जाते हैं। शनि जन्मराशि से दशम भाव में भ्रमण कर रहा है, तो जातक को जीवनसाथी से मनमुटाव, समाज में अपयश, फेफड़े संबंधी रोग, व्यवसाय में परिवर्तन, आय के स्रोतों में वृद्धि इत्यादि फलों की प्राप्ति होती है।

शनि जन्मराशि से अष्टम राशि में चल रहा है, तो जातक को मृत्यु के समान पीड़ा, दुर्घटना, दुर्व्यसनों की ओर उन्मुखता, लाभ की न्यूनता, परिवार से असहयोग इत्यादि फलों का सामना करना पड़ता है। शनि अगर जन्म राशि से नवम राशि में चल रहा है, तो जातक को हृदय रोग, उच्चाटन इत्यादि का सामना करना पड़ता है।

शनि को अगर एक दृष्टि में जानना हो तो आप इस प्रकार शनि को जान सकते हैं—

अंग्रेजी नाम	:	सैटर्न (Saturn)
स्वामित्व	:	कुंभ एवं मीन राशि
मूल त्रिकोण	:	कुंभ
उच्च राशि	:	तुला
नीच राशि	:	मेष
वर्ण एवं जाति	:	कृष्ण और शूद्र
आकृति एवं दिशा	:	दीर्घ एवं पश्चिम
धातु एवं तत्व	:	लोहा एवं वायु
लिंग	:	स्त्री नपुंसक
ऋतु	:	शिशिर
प्रतिनिधि पशु	:	भैंसा
अवस्था	:	अतिवृद्ध
दृष्टि	:	3, 7, 10
मित्र ग्रह	:	बुध और शुक्र
शत्रु ग्रह	:	सूर्य, चन्द्रमा और मंगल
सम ग्रह	:	गुरु बृहस्पति
काल पुरुष के शरीर में स्थिति	:	पैर
भाव का कारकत्व	:	षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश
अन्य कारकत्व	:	रोग, मृत्यु, लोहा, मशीनरी, कृषि कार्य

रत्न	:	नीलम
उपरत्न	:	नीली
राशि संचार काल	:	30 माह
समय	:	अपराह्न (दोपहर)
स्वभाव	:	क्रूर
समिधा	:	शमी (खेजड़ा)
पुष्प	:	काला पुष्प
गुण	:	तमोगुण
अशुभत्व	:	मेष

विश्व की उत्तम और महंगी वस्तुओं का स्वामी एकमात्र शनि है। कुछ धन की सुई से लेकर करोड़ के जहाज तक का स्वामी भी शनि है। अनेक विस्फोटक व घातक वस्तुओं का स्वामी भी शनि है। फिर क्यों हम इनको अपनाने से मुंह फेर लेते हैं? शनि स्वयं तो धीमी गति में चलते हैं लेकिन जातक को बड़ी तेज गति से चलाते हैं। इसलिए जीवन में सही दिशा पाने के लिए शनि की अराधना, उपासना करें।

अर्थात् शनि की दशा में बल, पृथ्वी का अधिकार, बुद्धि की वृद्धि, दान देने में रुचि, अनेक प्रकार की कलाओं में कुशलता, वाहन की सवारी, सुवर्ण, वस्त्र लाभ, विनय तथा प्राचीन स्थानों के भ्रमण का सुख होता है। इस प्रकार इतना लाभ, सुख; राजनीति में सफलतादायक शनि को क्रूर ग्रह की संज्ञा क्यों दी गई है? यह विचारणीय प्रश्न है। इन्हें पाप ग्रह इसलिए कहा जाता है कि शनि जातक के पापों का दण्ड देने का अधिकार जो रखते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि शनि एक राजा को भिखारी और भिखारी को राजा बना सकता है। उत्तरकालामृत के उपर्युक्त श्लोकों में वर्णित सिद्धान्त चूंकि अन्य ग्रहों से सम्बन्धित सामान्य सिद्धान्तों से अलग हटकर हैं, इसलिए कुछ अटपटे-से लगते हैं, किन्तु व्यवहार में यह काफी सटीक और सही दिखलाई देते हैं।

इस सृष्टि में ग्रहों का प्रभाव ही दृष्टिगोचर होता है। सूर्य अस्त के समय पक्षियों का शोर तथा सूर्य उदय समय, प्राण वायु का संचार, मध्य दिन में सूर्य का ताप, रात्रि में रात की रानी की सुगन्ध तथा कुमुदनी का खिलना सभी कुछ आकाशीय ग्रह, नक्षत्रों पर निर्भर है।

अब यह तो लगभग निश्चित है कि ग्रहों का जीवन पर प्रभाव अवश्य ही पड़ता है, इसलिए ज्योतिषी कुण्डली में शुभ ग्रहों की अपेक्षा पाप ग्रहों

का विवेचन विस्तार से करते हैं। जातक का जीवन शुभ है, इसमें इन चार विशेष ग्रहों का कितना प्रभाव पड़ेगा और ये ग्रह जीवन में किस प्रकार की कष्टदायक स्थितियां उत्पन्न करेंगे, इस विषय में विशेष विवेचन आवश्यक है। जीवन की आकस्मिक घटनाओं और समय-समय पर आने वाले कष्टों और रुकावटों को जीवन यात्रा में पड़ाव कहा गया है जिनसे जातक की जीवन शैली ही बदल जाती है।

शनि को पाप ग्रह माना गया है तो इसका प्रभाव भी अवश्य होता है। शनि वास्तव में परिश्रम, शक्ति, साहस, शौर्य, पापकर्म, शत्रुता, विलासिता, चिन्ता, दुर्भाग्य, संकट के अतिरिक्त आकस्मिक धन, राजनीति, उच्च पद, विदेश यात्रा और तीक्ष्ण बुद्धि का भी कारक है।

आकस्मिकता शनि का विशेष गुण है, किसी कार्य को अचानक गति प्राप्त होना और किसी कार्य का अचानक रुक जाना शनि के प्रभाव का सूचक है, जिसके कारण जातक घबराहट का शिकार होता है।

यह अपूर्ण इच्छाओं और भ्रमित बुद्धि का भी प्रतिनिधित्व करता है, इस कारण इसका प्रत्येक दृष्टि से विवेचन आवश्यक है। क्रूर एवं पाप ग्रह होने के कारण इसके प्रभाव से जातक में निम्न विचार, अवसरवादिता, क्रूरता आती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह जन्मकुण्डली में जिस भाव में होता है उस भाव की वृद्धि में प्रायः अवरोध उत्पन्न करता है।

वृषभ राशि की साढ़ेसाती

अगर वृषभ राशि पर साढ़ेसाती हो तो पशु धीरे-धीरे मर जाएं। जातक के व्यापार में घाटा हो। पैतृक सम्पत्ति से अलग होना पड़े। शनि साढ़े सात वर्ष के लिए जातक के लिए शत्रु सदृश हो। साढ़े सात वर्ष तक जातक की ज़मीन बंजर हो जाए।

मिथुन राशि की साढ़ेसाती में जातक के घर या दुकान में आग लग जाए। जुए में धन नष्ट हो जाए। संतान को कष्ट हो अथवा संतान बिगड़ जाए। जातक के परिवार में कोई मर जाएं अथवा भाभी विधवा हो जाए। पुत्र को कोई रोग हो जाए।

कर्क राशि की साढ़ेसाती में जातक को व्यापार में हानि हो। परिवार में किसी की मृत्यु हो जाए। सिर के बाल उड़ जाएं। किसी दुर्घटना का शिकार हो। जुए में अपने धन को नष्ट कर दे।

सिंह राशि की साढ़ेसाती में उसके घर से लक्ष्मी रूठ जाती है। पशु मर जाएं। जातक पर चोरी का आरोप लगे। बहिन की ससुराल में किसी की मृत्यु हो जाए।

कन्या राशि की साढ़ेसाती में जातक पर हर समय दुःख व परेशानियों के बादल छाए रहेंगे। घर में कलह रहे। जातक रोगी हो जाए। माता अधिक समय जीवित न रहे।

तुला राशि की साढ़ेसाती में संबंधी की मृत्यु हो जाए। बहिन अथवा मौसी विधवा हो जाए। पत्नी रोगी हो जाए। पुत्री के कारण धन नष्ट हो जाए। कुर्की हो जाए। व्यापार में घाटा हो जाए।

वृश्चिक राशि की साढ़ेसाती में जातक दुर्घटना का शिकार होकर कोई अंग खो बैठे। जातक की संतान रोगी हो। साली बेघर-बार हो। जातक का व्यापार नष्ट हो जाए। पिता साढ़े सात वर्ष के भीतर मर जाए।

धनु राशि की साढ़ेसाती में जातक के नेत्रों की ज्योति चली जाए। जातक की बहिन व माता को कष्ट होगा। जातक के घर में आग लग जाए। जिस कार्य में हाथ डाले उल्टा हो जाए। सजा भुगतनी पड़े। मुकदमों में धन नष्ट हो जाए।

धनु राशि के जातक के पिता अथवा दादा की मृत्य हो जाए। नौकरी चली जाए। घर में चोरी हो जाए। माता, पुत्र को कष्ट हो जाए। पैतृक सम्पत्ति नष्ट हो जाए। प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जाए।

कुम्भ राशि की साढ़ेसाती में जातक की नौकरी चली जाए। सश्रम कारावास की सजा हो जाए। मुकदमे में धन नष्ट हो जाए। जातक परेशानियों के कारण अपनी धन-सम्पत्ति नष्ट कर दे। जातक का भाई किसी दुर्घटना का शिकार हो जाए। माता व पिता को कष्ट हो।

मीन राशि की साढ़ेसाती में परिवार में किसी की मृत्यु हो जाए। पत्नी से सम्बन्धिविच्छेद हो जाए। पुत्र रोगी हो। घर में शिशु पैदा न हो। मामा व मामी को गम्भीर रोग हो जाए। जातक के घर में सारा रुपया-पैसा, जेवर सब खत्म हो। कोई सम्बन्धी मुसीबत में काम न आए।

सामान्य जन-जीवन में जातक की स्थिति खराब होने पर कहावत रूप में कहा जाता है कि इसको तो शनि लग गया है। इस कहावत का कारण यह है कि इस ग्रह का प्रभाव प्रत्येक जीव के जीवन में अवश्य पड़ता है, जिस प्रकार ग्रहों में चन्द्रमा, बुध, शुक्र, केतु, गुरु बृहस्पति क्रम अनुसार शुभ ग्रह माने गये हैं, उसी प्रकार सूर्य, मंगल, शनि और राहु अधिकाधिक पापग्रह माने गये हैं; अर्थात् सूर्य से मंगल अधिक पापग्रह, मंगल से शनि और शनि से अधिक राहु पापग्रह है।

शनि सूर्य-पुत्र तथा मोक्षदाता ग्रह हैं। सामान्यतः शनि के विषय में अनेक भ्रांतियां हैं परन्तु यह शत्रु नहीं मित्र हैं, न्याय और सन्तुलन का ग्रह है, शनि भाग्यविधाता भी है परन्तु सत्य यह है कि यह तपकारक ग्रह है तथा तप को यही परिपक्व करता है। शनि परम प्रतापी एवं करांल ग्रह है परन्तु यह न्यायप्रिय भी है, शनि की ही कृपा से जातक सफल साधक बनता है, शनि की कृपा से सभी सुख प्राप्त होते और कुप्रभाव होने से दरिद्रता, मानहानि, पारिवारिक कलह एवं दाम्पत्य सुख समाप्त हो जाता है। इसका कार्य निरन्तर जातक को पश्चात्ताप कराकर शुद्ध करना ही रहता है। अनुभव से पाया गया है—70 प्रतिशत लोग प्रतिदिन शनि की चपेट में रहते हैं।

सभी प्रकार के दुष्कर्म, जासूसी, तस्करी, गठिया, वायु, बाजुओं में पीड़ा, आयु, मृत्यु, द्रव्यहानि, घाटा, जेल, बंधन, दिवाला, मुकदमा, फांसी, राजभय आदि शनि के कार्य हैं। यह अशुभ ग्रह है, परन्तु शुभ फल भी प्रदान करता है और यही अपार लक्ष्मीकारक ग्रह है।

जातक को राजसुख, भूमिपति, लखपति तथा न्यायाधीश बनाता है। भाग्यवृद्धि करता है और धर्म पर चलने की प्रेरणा देता है। जातक को महान् तपस्वी बनाता है।

जातक को नीच मनोवृत्ति वाला, विवेकहीन चोर बनाता है, जातक को आर्थिक क्षति होती है। जातक तरह-तरह के रोगों से ग्रस्त हो जाता है—उसे उन्माद सम्बन्धी रोग, टी०बी०, गठिया, स्नायु, अल्सर, भगंदर, कैंसर आदि हो जाते हैं। अब शनि शमन के उपाय प्रस्तुत कर रहा हूं—

ग्यारह नारियल जटा सहित लें। एक-एक नारियल दायें हाथ से पकड़ें व दायें कान की तरफ बायीं ओर घुमाकर दोनों हाथ लगाकर बहते जल में प्रवाहित करें, ऐसा 21 बार करें। सवा किलोग्राम जौ चमकीले काले कपड़े में बांधकर पोटली बनायें। अथवा सवा किलोग्राम चना काले कपड़े में, दो कोयले, दो लोहे की तीन इंच की कील बांधकर पोटली बनायें। अथवा सवा किलोग्राम कच्चा कोयला चमकीले काले कपड़े में बांधकर पोटली बनायें। सवा किलोग्राम रांगा (जस्ता) काले कपड़े में बांधकर पोटली बनायें। श्रद्धापूर्वक गंगास्नान करें। तदुपरांत उपरोक्त वस्तुओं को सिर पर से नारियल की तरह घुमाकर आदरपूर्वक बहते जल में प्रवाहित करें। इस उपाय के पश्चात् शनि की शांति हो जायेगी।

❑❑❑

5

शनि अशुभ क्यों?

हमारे सामने अनेक बार ऐसे प्रश्न आते हैं, जिनका कारण हम लाख खोजने पर भी नहीं पाते हैं। शनि हमें कष्ट दे रहा है? हमने ऐसा क्या किया जो हम ग्रहों की अशुभता झेल रहे हैं? शनि कष्ट देना कब बंद करेगा? शनि को कैसे अनुकूल किया जाए? आदि आदि।

अंधकार-प्रकाश, हमारे साथ नित्य रहने वाले दो ऐसे बिंदु हैं जिनमें एक को पकड़कर भवसागर सरलता से पार किया जा सकता है और दूसरे की तरफ कदम बढ़ाने से जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। प्रकाश की ओर उन्मुख होकर चला जाए तो छाया स्वतः पीछे-पीछे चली आती है और छाया की ओर चलने पर छाया कभी पकड़ में नहीं आती। शुभ कर्म को प्रकाश एवं भौतिकता को छाया के रूप में प्रतिपादित किया जाता है। सुख की प्राप्ति के लिए उसके प्रति समर्पित जीवन जीना पड़ता है। जीवन लक्ष्य की प्राप्ति हेतु आत्मिक प्रगति का मार्ग अपनाना पड़ता है। ईश्वर से प्रेरणा की कातर याचना करनी पड़ती है। उसके दिखाए मार्ग पर चलने पर साहस जोड़ना पड़ता है। अपने लक्ष्य एवं इष्ट को सामने रखकर ही प्रत्येक क्रियाकलाप करें। यही सुख-शांति का वास्तविक मर्म है। आत्मपरिष्कार और आत्मविकास के तत्वदर्शन को समझना सच्चा अध्यात्म है। ईश्वर के हाथों स्वयं को सौंपना सच्ची साधना है।

कर्म करने से पहले और घटना होने के पश्चात् के मध्य में जो समय है, वह बहुत छोटा है, उस समय में ही सजग हो जाना है। इसी समय में होश के साथ कर्म किया जा सकता है। हालांकि यह समय आपको बहुत

छोटा-सा लगेगा लेकिन यही समय कष्ट-मुक्ति का मार्ग है। घटना हो गई आपने प्रतिक्रिया दे दी तो अब उसे बदल नहीं सकते। कर्म करने के पहले, घटना होने के पश्चात् जो समय है, उस समय में सजग होने के लिये आपको अपनी संवेदनशीलता बढ़ानी चाहिए।

घटना होने के पश्चात् और कर्म करने के मध्य में जो स्थान है, वह छोटा या बड़ा आपकी भोग शक्ति के अनुसार लगाता है। कुछ लोग दाल पर भी लेख लिखते हैं। अगर आपके सामने दाल रखी और कहा, "इस दाल पर कुछ लिखें।" तो आप दाल पर नहीं लिख पाएंगे क्योंकि आपको उस पर लिखने के लिये जगह ही दिखायी नहीं देती। जो इंसान संवेदनशील होगा, वह कहेगा, दाल पर बहुत जगह है, उस पर हम लिख सकते हैं।" इसी प्रकार घटना होने के पश्चात् हम सोच-समझकर सही कर्म कर सकते हैं।

जैसा कि बुद्ध केसाथ होता है। उन्हें एक इंसान गाली देता है फिर भी बुद्ध आनन्द से बैठे हैं। सामने वाला मनुष्य बुद्ध से कहता है, "तुमने मुझे कुछ कहा क्यों नहीं? कुछ कहो।" तब बुद्ध उत्तर देते हैं, "तुमने अपना कर्म किया, अब मुझे जो करना है, वह मैं करूंगा, मैं तुम्हारा सेवक तो नहीं हूं, मेरे पास उत्तर देने के लिये बहुत समय है।" फ़िर थोड़ी देर के पश्चात् वह इंसान बुद्ध के पास आता है और कहता है, "मुझसे गलती हो गई, मुझे क्षमा करो।" बुद्ध को मौन देखकर वह व्यक्ति फिर से कहता है, "आप मुझे क्षमा क्यों नहीं करते? आपने मेरी परीक्षा ली और अब मुझे क्षमा भी नहीं कर रहे हैं।" बुद्ध कहते हैं, "बहुत समय है, पहले यह तो निश्चित करो कि तुमने कोई गलत कर्म किया है। क्षमा तो उसके पश्चात् आती है, पहले अशुभ कर्म करें। जो करना है हम अपनी समझ से करेंगे, हम आपके सेवक तो नहीं हैं।" इस उदाहरण द्वारा देखें कि बुद्ध द्वारा कैसे कर्म हो रहे थे?

बुद्ध, जीसस के कर्म देखकर आपको पता चलेगा कि कर्म कैसे बंधन न बने और क्या करने से बंधन नहीं बनेगा? घटनाओं में प्रतिसाद देने के लिये आपके पास पकड़ में आए। जो संवेदनशील होते हैं, उन्हें दाल का दाना भी बड़ा लगता है। उन्हें लगता है कि एक दाल के दाने पर भी काफी जगह है, इस पर लिख सकते हैं और संदेश भी भेज सकते हैं। पुण्य कर्म करने वाले को लिखने के लिये एक दाल का दाना काफी है। जो संवेदनशील है, ग्रहणशील है, वह यह बात पकड़ सकता है। जब आप इस प्रकार के संतों

का जीवन देखेंगे तब आपको पता चलेगा कि कर्म बंधन क्यों नहीं बनता होगा, क्योंकि वहां अव्यक्तिगत जीवन चल रहा है।

जब जातक के कर्म प्रतिक्रिया से मुक्त हो जाएंगे तब कर्म बंधन नहीं बनेगा। प्रतिक्रिया अर्थात् सामने वाले ने गाली दी इसलिए आपने भी गाली दी तो आप बंधन में हैं और आपका कर्म भी बंधन में है। बंधन में बंधा हुआ कर्म केवल दुःख ही लाएगा। जैसे कीचड़ से भरा हुआ इंसान बाजार से पोशाक लेकर आएगा तो वह कैसी पोशाक लेकर आएगा, यह आप जानते हैं। वह जो पोशाक लाएगा वह भी गंदगी से भर जाएगी। सबसे पहले कोई भी कर्म करते समय स्वयं पूछें, कि "यह कार्य मैं अपनी समझ से कर रहा हूं या सामने वाले के व्यवहार को देखकर कर रहा हूं?"

हमारे कर्म शुभ होंगे, हमारा आचरण पवित्र होगा तो शनि हमें भला कष्ट क्यों देगा?

ग्रह सम्राट के नौ पुत्रों में अपनी भीषणता के लिए शनि सर्वोपरि है। शनि के श्याम वर्ण को देखकर सूर्य ने एकबारगी तो उसे अपना पुत्र मानने से ही इंकार कर दिया था, संभवतः शनि की रूक्षता का एक कारण यह भी रहा—पौराणिक कथाओं के अनुसार संतानों के योग्य होने पर सूर्य ने प्रत्येक संतान के लिए एक-एक लोक की व्यवस्था की, किंतु पाप-प्रधान प्रकृति का होने के कारण शनि अपने एक लोक से पूर्णतया संतुष्ट नहीं हुआ। उसने अपने समस्त भाइयों के लोकों पर आक्रमण करने की योजना प्रारूपित की।

शनि की क्रूरता और अधोदृष्टि का रहस्य इसकी पत्नी द्वारा दिए गए श्राप में निहित है। सूर्यपुत्र महाबली शनि बाल्यकाल में ही भगवान श्री कृष्ण के प्रति अगाध आस्था रखता था। अहोरात्रि उनकी अर्चना में लीन रहता था। योग्य होने पर सूर्य ने चित्ररथ की चरित्रवान्, तेज सम्पन्न तथा गुणवती कन्या से शनि का विवाह कर दिया।

एक बार ऋतुस्नान से निवृत होकर शनि की पत्नी पुत्राभिलाषा से उनकी सेवा में उपस्थित हुई। उस समय शनि समाधि में लीन थे। पत्नी का ऋतुकाल व्यर्थ चला गया। तब आहत पत्नी ने पति को शाप दिया कि भविष्य में तुम्हारे नेत्र निम्न ही रहेंगे। जिस पर तुम्हारी दृष्टि पड़ेगी, वो विनष्ट हो जाएगा। क्रोध शांत होने पर उसे पश्चात्ताप हुआ, किंतु शाप पूर्ण हो चुका था। उसके पश्चात् शनि की दृष्टि सर्वदा के लिए अधोमुखी हो गई।

'शनि' के नाम से ही मन में भय, आशंका और कष्ट का प्रादुर्भाव हो

जाता है। उस पर यदि यह कह दिया जाए कि—अमुक राशि वालों पर 'शनि की साढ़ेसाती' चल रही है या शनि की 'ढैया' चल रही है तो सुनने वाला समझ जाता है कि अब बुरे दिन आ गए हैं। इसलिए कि नवग्रहों में अपनी कुरूपता, तामसिक एवं मंद गति के लिए शनि की गणना सबसे प्रथम की जाती है।

शनि देव की 'क्रूर दृष्टि' का प्रभाव सर्वविदित है। इससे आक्रांत जातक अभिशापों की शृंखला में आबद्ध हो जाता है। शारीरिक कष्ट, व्यवसाय का सर्वनाश, धन का विनाश, सम्मान-क्षय, हर कार्य में बाधा, पलायन, निष्कासन, दरिद्रता, विभ्रम, शत्रुभय, मृत्युभय आदि अनेक दुःखद स्थितियां सामने आ खड़ी होती हैं। शनि पीड़ित व्यक्ति को दुर्भाग्य का असाध्य रोगी कहा जा सकता है। भले ही अन्य ग्रहों का सुप्रभाव अवलम्ब देता रहे, परंतु शनि का संत्रास (दंड) उसे अवश्य ही भोगना पड़ता है।

शनि ने भगवान शंकर पर जब अपनी कुदृष्टि डाली तो त्रिलोकेश्वर शिव को भी हाथी और बैल बनाकर जंगल की घास तक चरवा दी। इन्हीं की कुदृष्टि पड़ने से देवी भगवती माता पार्वती के पुत्र गणेश जी का सिर कटकर गिर गया था। इस समय आदिशक्ति पार्वती मां के शाप से शनि को 'खज्ज रोग' हो गया था। पुराणों के अनुसार, शनि का जन्म होते ही उसकी दृष्टि पिता सूर्य पर पड़ने मात्र से ही सूर्य को कुष्ठ रोग हो गया था, उनका सारथी 'अरुण' पंगु हो गया था और रथ का घोड़ा अंधा हो गया था।

'लंकापति महाराज' रावण पर जब इनकी कुदृष्टि पड़ी तो नितांत असहाय बना दिए और उनका समूल विनाश कर दिया। राजा नल परम गुणी एवं लोकप्रिय यशस्वी नरेश थे, परंतु शनि की कुदृष्टि ने उन्हें भी राह का भिखारी बना दिया। हरिश्चन्द्र जैसे प्रतापी महाराज को भी पत्नी और पुत्र को बेचने हेतु विवश कर दिया और स्वयं को चांडाल के हाथों बिकवा दिया।

इन सबका अर्थ यह निकलता है कि 'शनि' एक अत्यंत 'क्रूर ग्रह' हैं। असीम दुःखों के भण्डार पर इनका स्वामित्व है। अत्यंत दारूण दुःखों के दाता हैं। कहते हैं कि सांप का काटा और शनि का मारा पानी नहीं मांगता। लेकिन अगर कर्म शुभ हैं, आचरण पवित्र है तो शनि से भयभीत नहीं होना चाहिए।

❑❑❑

6

शनि ज्योतिष के आईने में

भौतिक वस्तुओं को संगृहीत करने में प्रवृत्त मानव समाज में कुछ ही ऐसे संस्कार हैं, जो मानव को समाज से बांधे हुए हैं अन्यथा आज समाज, समाज न होकर युद्ध का मैदान होता। इन संस्कारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार 'विवाह' है। यह बहुआयामी संस्कार है, जिसके द्वारा नर-नारी परिणय सूत्र में आबद्ध होकर मानव समाज में एक नई शृंखला का सूत्रपात करते हैं। विवाह के पश्चात् मानव जीवन का द्वितीय पक्ष प्रारंभ होता है। इस पक्ष का सुख किस व्यक्ति को कितना प्राप्त होगा, इसका निर्धारण ज्योतिषशास्त्र द्वारा संभव है।

जन्मपत्रिका में शनि का शुभग्रह से संबंध हो या अन्तर्दशा शुभ चल रही हो तो शनि का अशुभ प्रभाव कम होता है। अगर शनि जन्म के समय अशुभ ग्रह युति से युक्त हो तो अशुभ फल देता है। इसके कारण धनहानि, झगड़े, विघ्न, आय में कमी, अवन्नति, परिवार में कलह, चिन्ता, रोग आदि परेशान करते हैं। विवाह में कठिनाइयां आती हैं। शनि राशि से 3, 6, 11वें भाव में आकर शुभ प्रभाव देता है वहीं अगर शनि जन्मपत्रिका में लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11वें स्थान में स्थित हो तो सुख-संपत्ति प्राप्त होती है। व्यापार में लाभ होता है। विवाह में आने वाली बाधाओं का शमन होकर विवाह संपन्न होते हैं।

विवाह के उपरान्त दूसरी आवश्यकता घर की होती है। इसमें भी शनि महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वैदिक ग्रंथों में ग्रह के रूप में शनि की स्थिति गुरु बृहस्पति ग्रह से दो लाख योजन ऊपर की ओर मानी गई है। ज्योतिष

के अनुसार ये एक ही राशि पर दो वर्ष छह महीने तक स्थित रहते हैं। सूर्य से शनि की दूरी लगभग पन्द्रह लाख योजन मानी गयी है। आधुनिक खगोल शास्त्र के अनुसार, शनि की पृथ्वी से दूरी लगभग नौ करोड़ मील है। इसका व्यास एक लाख बीस हजार किलोमीटर है और इसका घनत्व पृथ्वी से पिचानवें गुना अधिक है। इसे सूर्य की परिक्रमा करने में उनतीस वर्ष लगते हैं। दूरबीन से देखने पर शनि की परिक्रमा करने वाले उपग्रहों की संख्या लगभग दस है। अंतरिक्ष में शनि सघन नील आभा से युक्त रश्मियां बिखेरता है। भारतीय ज्योतिष शास्त्र व पुराणों के अनुसार शनिदेव ग्रह रूप में वायु तत्व वाले हैं। इनका रंग काला है और ये पश्चिम दिशा के स्वामी हैं। भारत के सौराष्ट्र प्रदेश पर शनिदेव का विशेष प्रभाव व आधिपत्य है। वैसे भी शनिदेव रहस्यभरे स्थानों, घाटियों, वन-प्रांतरों व दुर्गम गुफाओं में स्थित होना अधिक पसंद करते हैं। मरूप्रदेश, श्मशान, कोयला खान क्षेत्र, बंजर, वीरान व अपवित्र भूमि में इनका निवास करना स्वाभाविक माना जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, शनि अस्त होने के अड़तीस दिनों के पश्चात् उदय होते हैं। उसके बाद ये एक सौ पैंतीस दिनों तक सामान्य गति से और एक सौ पांच दिनों तक वक्री गति से परिभ्रमण करते हैं।

भवन में पश्चिम दिशा पर शनि का आधिपत्य है। इस दिशा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता से इंकार नहीं किया जा सकता है। जिन लोगों का शनि शुभ होता है वे लोग प्रत्येक बात की गहराई में जाते हैं। वैराग्य अध्यात्म में वही मनुष्य जाता है जिसके ऊपर बहुत दुःख पड़ा है या उसने अन्य लोगों को बहुत दुःखी देखा है। उस दुःख को दूर करने के लिए अध्यात्म की शरण में जाता है। अपने दुःख को दूर करने के लिए लोग ज्योतिष विज्ञान को सीखते हैं जिससे वे अपने विपरीत ग्रहों के विषय में जान सकें तथा अपने कष्ट दूर कर सकें। जिन लोगों का शनि प्रधान होता है वे लोग प्रायः नौकरी करते हैं। अगर आप किसी नौकरी करने वाले व्यक्ति से बात करेंगे तो वह आपसे नीरस बात करेगा। शनि तो कर्म का कारक है इसलिए जो जातक जितना अधिक परिश्रम करता है शनि उसके ऊपर उतना ही प्रसन्न होते हैं। जो परिश्रमी होता है, अपने मन और भाषा पर संयम रखता है, अनुशासन में रहता है, जो काम करता है उसमें पूरी निपुणता प्राप्त करता है। बार-बार काम बदलता नहीं है बल्कि आदतों और स्वभाव में कमी है तो उसे दूर करने का प्रयत्न करता है, आलस्य एवं चोरी से दूर रहता है,

अपने काम को निरन्तर निष्ठापूर्वक करता है। सतर्क या सावधान रहता है, उनको शनिदेव सदैव सुख देते हैं। शनिदेव सबसे अधिक दण्ड उनको देते हैं जो कामचोर होते हैं, अभिमानी तथा अहंकारी होते हैं, काम में निपुणता या महारत प्राप्त नहीं करते हैं, शीघ्र निराश हो जाते हैं, लगातार काम के प्रति सतर्क या सावधान नहीं रह पाते हैं। शनि संघर्ष करने वाला ग्रह है और जो जातक जितना अधिक संघर्ष करता है शनि उनको उतनी ही सफलता देते हैं। जब किसी व्यक्ति की आयु 60 वर्ष से अधिक हो जाती है तब उस व्यक्ति को शनि से प्रभावित कहा जाता है क्योंकि उसे जीवन का वास्तविक अनुभव होता है।

शनि के यूं तो अनेक उपाय हैं, लेकिन प्रदोष व्रत सप्ताह के किसी भी दिन पड़ सकते हैं, लेकिन प्रायः द्वादशी और त्रयोदशी की तिथि को प्रदोष तिथि कहते हैं। शनिवार को पड़ने वाली शनि प्रदोष व्रत को सबसे उत्तम कहा जाता है। शनि प्रदोष व्रत लोगों के लिए मनोकामनापूरक व्रत है, जो शनि ग्रह से पीड़ित रहते हैं। प्रदोष व्रत संतानहीन दम्पतियों के लिए भी महत्वपूर्ण होता है, लेकिन इसके लिए निरन्तर 21 प्रदोष व्रत करने आवश्यक होते हैं। किसी भी प्रकार की संतान बाधा में शनि प्रदोष व्रत उपवास सबसे उत्तम उपाय है। शनिवार के दिन पति-पत्नी द्वारा प्रातः स्नान के उपरांत शिव, पार्वती और गणेश जी की संयुक्त आराधना के पश्चात् सारे दिन निर्जल रहना चाहिए। सायंकाल लोहे की कड़ाही में उड़द की दाल और चावल तथा तिल आदि मिलाकर खिचड़ी खानी चाहिए। इसका एक-चौथाई भाग कुत्ते या गाय को भी देना चाहिए। शनि प्रदोष व्रत के दिन शिव मंदिर, हनुमान मंदिर, भैरव मंदिर अथवा शनि मंदिर में पूजा करना भी लाभप्रद होता है। व्रतधारी को लोहा, तिल, काले उड़द, मूली, कंबल, जूता और कोयला आदि दान करना चाहिए। इससे शनि का प्रकोप काफी सीमा तक शांत हो जाएगा और रोग-व्याधि, अशांति, व्यापार में हानि आदि का निवारण सरलतापूर्वक हो जाता है।

वास्तव में शनि के विषय में जितनी भ्रान्ति फैली हुई है उतनी किसी अन्य ग्रह के विषय में नहीं है। आज से बीस वर्ष पहले पूरे भारतवर्ष में शनि के गिने-चुने मन्दिर थे, वहीं आज हर गांव, कस्बे, शहर में शनि मन्दिर खुल गये हैं। इसका कारण मनुष्य जीवन में अस्थिरता और आत्मविश्वास की कमी है। स्थिति यहां तक आ गई है कि लोग शनि मन्दिर में नियमित

रूप से जाते हैं। शनि शांति के लिए ज्योतिष नये-नये तरह के विधान बताते हैं। काले वस्त्रों का दान, काले तिल, तेल का दान, मछलियों को अन्न देना, काले जूतों का दान इत्यादि न जाने कितने उपाय।

वास्तव में ये सारे उपाय प्रभावशाली हैं, व्यक्ति यह उपाय कर स्वयं को कुछ समय के लिए प्रसन्न कर लेता है लेकिन इसका कोई स्थायी प्रभाव हो, ऐसा मेरे अनुभव से संभव नहीं है। शनि के दुष्प्रभाव को श्रेष्ठ रूप से परिणित करने हेतु शास्त्रों ने साधना का विधान ही सर्वश्रेष्ठ बताया है। शनि सूर्यपुत्र है अतः सूर्य साधना सम्पन्न करने से अनुकूलता प्राप्त होती है। सूर्य साधना में सूर्य को अर्घ्य, गायत्री मंत्र, सूर्य मंत्र का जप श्रेष्ठ माना गया है।

1. कोणस्थ, 2. पिंगल, 3. बभ्रु, 4. कृष्ण, 5. रौद्रअन्तक, 6. पिप्पला, 7. यम, 8. सौरि, 9. शनैश्चर, 10. मन्द—इन दसों नामों का उच्चारण जो व्यक्ति करता है, उसे शनिदेव पीड़ा नहीं देते। इसका इकतीस बार पाठ अवश्य करना चाहिए।

हाथ जोड़कर श्रद्धापूर्वक निम्न वन्दना करें—

नीलघुतिं शूलधरं किरोटिनं, गुध्रस्थितं त्रासकरं धनुर्द्धरम्।
चतुर्भुजं सूर्यसुतं प्रशान्तं, वन्दे सदाऽभीष्टकरं वरेण्यम्॥

आप अगर चाहें तो निम्न मंत्रों में से किसी एक मंत्र का जप कर सकते हैं—**ॐ शं शनैश्चराय नमः॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः॥ ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैय नमः॥** शनि स्तोत्र का पाठ करें।

[**नोट**—यंत्र बाजार से बनाबनाया खरीद सकते हैं या विद्वान् पण्डित से भी बनवा सकते हैं।]

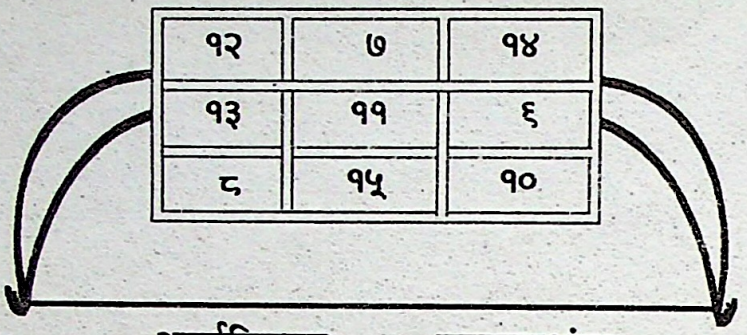
शनि यंत्र

नाम—पिता का नाम—गोत्र

१२	७	१४
१३	११	६
८	१५	१०

'श्नैश्चरं नमस्तुभ्यं नमस्तेतवथ राहेवे।
केतवेअथ नमस्तुभ्यं सर्वशान्ति प्रदो भव।'

अथवा



अर्काद्रिमन्वा स्मररूद्रअंका,
नागाख्यातिथ्यादश मद यंत्रम्।
विलिख्य भूर्जो परिधार्य मेतच्छनेः,
कृतारिष्ट निवारणम्।।

ऋषियों की महिमा से अपरिचित लोग भले ही ग्रह-दशाओं से मुक्ति पाने के लिए भ्रांति-भ्रांति के उपाय करें, पर पिप्पलाद ऋषि ने शनि को नीचे गिरा दिया था, शनि को आदेश दिया कि वह सोलह वर्ष की आयु तक के बालकों के कष्ट का कारण न बने। शनि की पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए फलित ज्योतिष में पिप्पलाद का स्मरण करने का भी विधान है।

पिप्पलाद दधीचि के पुत्र तथा अथर्ववेद के पहले संकलनकर्त्ता थे। पिप्पलाद विरचित संहिता को पैप्पलाद संहिता कहते हैं, संहिता का पहला मंत्र—'शन्नो देवी' है। पिप्पलाद द्वारा 'मोक्ष' की अवधारणा प्रस्तुत करने के कारण मोक्षशास्त्र का 'पैप्पलाद' कहा जाता था। प्रश्नोपनिषद् में कात्यायन प्रश्न करते हैं—किस मूल तत्व से सृष्टि संसार उत्पन्न हुआ? पिप्पलाद उत्तर देते हैं—रति (अचेतन) और प्राण के मिथुन से। सौर्यायाणी प्रश्न करते हैं—स्वप्न में कौन सोया और कौन जागा है? पिप्पलाद कहते हैं—आत्मा जागी है, शेष सब निद्रामग्न हैं।

भार्गव वैदर्भी ने पूछा—सृष्टि की धारणा कौन करता है? पिप्पलाद ने उत्तर दिया—प्राण के द्वारा सृष्टि की धारणा होती है। सुकेश ने पूछा—षोडश कला पुरुष का रूप क्या है? पिप्पलाद ने कहा—वह हर व्यक्ति के शरीर में निवास करने के कारण सर्वव्यापी है। नदी जैसे समुद्र में विलीन हो जाती है, वैसे ही समस्त सृष्टि उसी में विलीन हो जाती है।

प्रसंग है कि दधीचि की पत्नी प्रतिथेयी ने (दधीचि की मृत्यु के बाद) शिशु को पील के वृक्ष के नीचे रख दिया था। पिप्पलाद का शब्दार्थ है—पीपल के फल खाकर जीने वाला।

शनि पाया विचार

साढ़ेसाती के पाये का अर्थ यह है कि साढ़ेसाती किस धातु में आरंभ होती या बैठती है और धातु का निर्धारण साढ़ेसाती प्रवेश के समय गोचर चन्द्रमा जन्मकालीन राशि से किस स्थान पर है, के द्वारा होता है। इस आधार पर साढ़ेसाती के चार पाये होते हैं–

स्वर्ण-पाया : साढ़ेसाती के प्रवेश के समय जब चन्द्रमा स्वराशि, उससे छठी राशि अथवा ग्यारहवीं राशि में हो, तो साढ़ेसाती स्वर्ण के पाये में बैठती है।

रजत का पाया : साढ़ेसाती के आरंभ के समय जब चन्द्रमा स्वराशि से द्वितीय अथवा पंचम अथवा नवम राशि में भ्रमण कर रहा हो, तो साढ़ेसाती रजत के पाये में बैठती है।

ताम्र का पाया : साढ़ेसाती के आरंभ के समय जब चन्द्रमा स्वराशि से तृतीय अथवा सप्तम अथवा दशम राशि में भ्रमण कर रहा हो, तो साढ़ेसाती तांबे के पाये में बैठती है।

लोहे का पाया : साढ़ेसाती के आरंभ के समय यदि चन्द्रमा स्वराशि में चतुर्थ, अष्टम अथवा द्वादश राशि में भ्रमण कर रहा हो, तो साढ़ेसाती लोहे के पाये में बैठती है।

शनि के फल कथन में इन पायों का विशेष महत्व होता है।

साढ़ेसाती के प्रभाव से जातक को परिवार और समाज में अपयश, मानहानि एवं क्लेश का सामना करना पड़ता है। गृह क्लेश तो साढ़ेसाती का अपरिहार्य परिणाम है। इसे यूं भी कहा जा सकता है कि अगर आपके जीवन में गृह क्लेश से मुक्ति में भी इस माला ने चमत्कारिक प्रभाव दिखाया। सातमुखी रूद्राक्ष की एक माला रूद्राक्ष के छोटे दानों से बनी हुई है जिसके कारण इसे धारण करने में किसी प्रकार की असुविधा नहीं होती हैं।

इसके किसी भी प्रकार के दुष्प्रभाव नहीं मिलते हैं। यह शनि के शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए है। अगर आपकी जन्मपत्रिका में शनि शुभ भी हो, तो उसकी शुभता में और उसके शुभ परिणामों में यह वृद्धि करती है। सातमुखी रूद्राक्ष रत्न की भांति कार्य करता है।

इसे पहनने के कुछ दिन बाद ही इसका प्रभाव दिखने लग जाता है। सच की तो एक आयु होती है, किन्तु रूद्राक्ष की आयु असीमित है। एक

बार पहनने के पश्चात् इसे सदैव पहना जा सकता है।

ज्योतिष शास्त्र में शनि ग्रह को क्रूर कहा गया है। क्योंकि जब भी किसी पर शनि की ढैया अथवा साढ़ेसाती चलती है तो यह जातक को अनेक कष्ट देता है। उस समय में शनि जातक को असहाय और एकांकी कर देता है और अनेक प्रकार के झंझटों में फंसा देता है। इसलिए इसे क्रूर कहा जाता है। क्या शनि वास्तव में ही क्रूर होता है?

यह यक्ष प्रश्न मानव जाति को प्राचीन काल से ही कचोटता रहा है। एक समय की बात है, राजा दशरथ चिंता में पड़ गए। ज्योतिषियों ने उन्हें बताया कि शनि ग्रह जिस समय कृत्तिका नक्षत्र में घूमता हुआ रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करेगा, तभी 12 वर्ष का भयंकर सूखा पड़ेगा। धरती पर महाकाल का तांडव शुरू हो जाएगा और प्रजा कष्टों में डूब जाएगीं।

राजा दशरथ ने गुरु वशिष्ठ को बुलाकर उनसे इस संकट को दूर करने का मार्ग पूछा। वशिष्ठ ने कहा—"महाराज! आप तो वीरता में श्रेष्ठ हैं, आप चाहें तो सौरमंडल में जाकर क्रूर शनि की गति रोक सकते हैं। जब यह रोहिणी नक्षत्र में आएगा ही नहीं तो आपकी प्रजा संकट से मुक्त हो जाएगी।" अपनी प्रजा की रक्षा हेतु राजा दशरथ अपने दिव्य रथ पर सवार होकर चन्द्रलोक चले गए। चन्द्रमा के ऊपर रोहिणी नक्षत्र में उन्होंने अपने अनेक प्रकार के शस्त्रों से युक्त रथ को रोक दिया। शनि महाराज कृत्तिका नक्षत्र पार कर रोहिणी की और चले तो उन्हें आकाश में राजा दशरथ रथ पर सवार दिखाई दिए। सफेद घोड़ों वाले रथ पर खड़े महाराज दशरथ दूसरे सूर्य की तरह अपना प्रकाश चारों ओर फैला रहे थे। उनकी भवें क्रोध के कारण चढ़ गईं। वहां पर ज्योतिषियों द्वारा उन्हें शनि के प्रकोप का ज्ञान हुआ तब उन्होंने शनि व्रत आरम्भ किया। व्रत करने से शनि का प्रकोप जाता रहा और नल को पुनः अपना राज्य और समस्त वैभव प्राप्त हो गया।

जब किसी पर शनि की साढ़ेसाती अथवा ढैया चल रही हो तो जातक को चाहिए कि शनिवार को प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठकर शौचादि से निवृत हो, स्नानादि कर, भगवान शनिदेव का शुद्ध आसन तैयार करें। तख्त पर शनिदेव की मूर्ति स्थापित करें।

फिर पवित्र हो समस्त सामग्री पास रख कुशा के आसन या काले कम्बल के शुद्ध आसन पर बैठ जाएं, कंधे पर काला अंगोछा रख लें, तत्पश्चात् शनिदेव की कथा-पठन अथवा श्रवण करें, उसके बाद समस्त स्तोत्रों का

पाठ करें। साथ ही शनि चालीसा, हनुमाष्टक एवं हनुमान चालीसा का पाठ भी करें। पाठ समाप्ति के बाद शनिदेव की आरती करें। उसके बाद पीपल के वृक्ष के पास जल, गुड़ से उनके मूल में अर्घ्य दें। धूप, दीप दिखाएं तथा विधि-पूर्वक पूजन करें। तत्पश्चात् ब्राह्मण को भोजन कराएं।

उन्होंने कहा—"दशरथ! तुम्हारे पराक्रम और पौरुष को देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। सभी मुझे देखकर भय से कांपने लगते हैं। तुम मेरे सामने शस्त्र लेकर खड़े हो। मैं तुम्हारी इस प्रकार की वीरता से अत्यन्त प्रसन्न हूं। मैं तुम्हें वर देना चाहता हूं।"

पुराण के अनुसार, महाराजा दशरथ ने शनि से यह वर मांगा कि वे रोहिणी नक्षत्र में न आएं। शनि ने उन्हें वर तो दे दिया, लेकिन वह महाराज दशरथ के सामने अपनी पराजय को भुला नहीं पाए। उन्होंने समय आने पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर ही दिया। जंगल में शिकार खेलते समय महाराज दशरथ की आंखों में शनि सवार हो गए। राजा ने तपस्वी बालक श्रवण को जंगली जानवर समझकर, उन्हें छलनी कर दिया। श्रवण के अंधे माता-पिता ने दशरथ को ऐसा श्राप दिया कि उन्हें पुत्र का वियोग सहना पड़ा। दशरथ ने इसी वियोग में अपने प्राण त्याग दिए।

वास्तव में शनि एक सुधारक और कठोर शासक की तरह है। शनि भी जातक को दुःखों और कष्टों की आग में तपाकर उसमें से अभिमान को निकालता है। लोभ, मद, अहंकार के नशे में चूर जातक पर जब दुःख के कोड़े पड़ते हैं, तभी आँख खुलती है। इन्सान तब तक मनुष्य को मनुष्य नहीं समझता, जब तक वह स्वयं दुःखों को नहीं भोगता। जब तक जातक एकाकी नहीं होगा, तब तक कौन अपना और कौन पराया है, इसका ज्ञान नहीं होगा।

हमारे सौरमंडल के नौ ग्रहों में शनि ऐसे ग्रह हैं, जिनसे सभी जातक डरते हैं। वे स्वभाव से ही दंड देने वाले हैं। उनका प्रिय वाहन भेड़ा है। लेकिन भैंसा, सिंह, हाथी, हिरण , सियार, कुत्ता और गिद्ध पर भी सवार होते हैं। शनि जब हाथी पर सवार होते हैं तो जातक को प्रचुर लक्ष्मी देते हैं। वे गधे पर सवार होते हैं, तो हानि पहुंचाते हैं। वे सिंह पर सवार होते हैं, तो सभी काम बना देते हैं। वे सियार पर सवार होते हैं, तो जातक की बुद्धि नष्ट कर देते हैं। वे भेड़ा पर सवार होते हैं, तो घोर अपयश देते हैं।

अगर शनि महाराज हमारे कर्मों के फलों को न भुगतवाएं तो शिव

की गति बेढंगी हो जाएगी और सत्य, तप, दया और धर्म सब बेकार हो जाएंगे। फिर भला सत्य की दुहाई कौन देगा? यही कारण है कि शनि जातक के अशुभ कर्मों का फल प्रदान कर उनसे उनका प्रायश्चित्त कराते हैं। इसीलिए शनि जैसा जीव का हितैषी अन्य दूसरा ग्रह नहीं है।

शनि का रूप बहुत सुन्दर है। वे अपने सिर पर मणियों का मुकुट पहनते हैं। उनके गले में माला, हाथ में लोहे से बना अस्त्र, फरसा, गदा और त्रिशुल हैं। उनकी आंखों और शरीर से नीले प्रकाश की किरणें फूटती हैं। वे चार चरणों में जातक के जीवन पर अच्छा या बुरा प्रभाव डालते हैं। इन्हें लौह, स्वर्ण, रजत और ताम्र चरण कहा गया है। उनका लौह चरण जातक के लिए अनिष्टकारी होता है। सोने और चांदी का चरण लाभ पहुंचाता है। तांबे का चरण जातक को भरपूर सफलता देता है।

शनि को अर्कपुत्र, सौरि, आर्कि, यम, शनेश्चर, छायासुत नील, असित, क्रोण और तरपितानय जैसे नाम दिए हैं। उर्दू में इसे जुदलू केंदवाल कहते हैं। अंग्रेजी में इसे सैटर्न कहा जाता है।

सौरमंडल में सूर्य की परिक्रमा करने वाला शनि छठा ग्रह है। सौर-मंडल में इसे अधिक सुंदर माना जाता है, यह धीमी चाल से चलता है। सूर्य की एक परिक्रमा करने में इसे तीस वर्ष लगते हैं। इसीलिए इसे मंद गति से चलने वाला कहा गया है। इस ग्रह के चारों तरफ कंगन जैसे तीन वलय हैं। यह शनि के चारों तरफ चक्कर लगाते हैं।

ज्योतिषियों की मान्यता के अनुसार शनि गुरु बृहस्पति से अधिक ठंडा ग्रह है और शनि ग्रहों की अपेक्षा हल्का है। इसका व्यास 1 अरब 42 करोड़ 60 लाख किमी० है। यह सूर्य से 88 करोड़ 60 लाख मील दूर इसका चक्कर लगा रहा है। हमारी धरती से यह 79 करोड़ 10 लाख मील दूर है। हमारी धरती से शनि का गुरुत्वाकर्षण कई गुना अधिक है।

जन्मपत्रिका में शनि जिस भवन में बैठता है, वहां से तीसरे और दसवें घर को एकपाद दृष्टि से देखता है। वह पांचवें और नवें भाव को विपादर्श दृष्टि और सातवें, दसवें, तीसरे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। जातक के जीवन में 35 से 42 वर्ष की आयु में इसका विशेष प्रभाव दिखलाई देता है।

शनि अगर जन्मपत्रिका में बली उच्च राशि का और शुभ भाव में बैठा है तो वह जातक को सुखी बनाता है। लेकिन शनि अगर अशुभ भाव में

बैठा है तो वह घोर कष्ट देता है। वह तनाव, पीड़ा और भय उत्पन्न करता है। अगर जन्मपत्रिका में शनि निर्बल अथवा नीच राशि में बैठा है, तो वह जातक को दरिद्र और निर्बल बना देता है। वह चोर-भय, लकवा, पेट के रोग, आंख के रोग, चोट, अंग-भंग, दमा, गुप्त रोग, कुष्ठ, वायु विकार और कफ जैसे रोग देता है।

शनि को लोहा, भैंस, तेल, काले तिल, नमक, उड़द, नीलम, कील, पुराना लोहा, श्मशान, गंदी बस्ती, काले रंग का अधिपति माना गया है। इस ग्रह की अनुकूल या खिलाफ स्थिति के द्वारा शरीर का बल, संकट, दुःख, मोक्ष, यश, लोहे का व्यापार, साहस, रोग, शत्रु कार्यकुशलता, कारावास, जमींदारी, पैतृक व्यवसाय से संबंधित समस्याओं पर इसके आधार पर विचार किया जाता है।

शनि स्वभाव से क्रूर हैं। वे पापग्रह हैं। वह जातकों को कष्ट देते हैं, लेकिन उनकी कृपा अगर होती है तो जातक ऐसी सफलताएं प्राप्त कर लेता है, जिनके विषय में सरलता से सोचा भी नहीं जा सकता है। शनि जातक को धन, वैभव और यश से मालामाल कर देते हैं।

शनि को कालपुरुष का दुःख माना जाता है। सौरमंडल में यह सेवक माना जाता है। सौरमंडल की बारह राशियों में से मकर और कुंभ राशि इसके प्रभाव क्षेत्र में मानी गई हैं। तुला राशि के बीस अंश तक वह उच्च और मेष राशि के बीस अंश तक नीच का माना जाता है। कुमार बुध और शुक्र इसके मित्र हैं। गुरु बृहस्पति के साथ यह सम भाव रखता है। सूर्य, चंद्र और मंगल इसके शत्रु हैं। बुध के साथ शनि सात्विक प्रभाव उत्पन्न करता है। शुक्र के साथ यह राजस संबंध रखता है। यह कर्म और व्यय भाव का कारक है।

शनि एक ग्रह पर तीस माह तक रहता है। इसका प्रभाव जातक के जीवन के प्रारम्भ या अन्त में अधिक दिखलाई पड़ता है। यह आठ अंगों पर नियंत्रण रखता है। स्मरण रखें, शनि के कोप का भाजन वही जातक होते हैं जो गलत काम करते हैं। शुभ कार्य करने वालों पर शनि अति प्रसन्न व उनके अनुकूल हो जाते हैं। स्मरण रखें, वृषभ राशि को साढ़ेसाती का प्रारम्भ तब होगा जब शनि मेष राशि में बारहवें (व्यय भाव) भाव में आएगा और मिथुन राशि में जब तक शनि भ्रमण करेगा, वृष राशि के जातक को

शनि की साढ़ेसाती रहेगी। यानि मेष में 2 वर्ष 6 महीना, इस प्रकार शनि के साढ़ेसात वर्ष पूरे होंगे।

शनि की साढ़ेसाती के प्रथम चरण में शनि अपनी नीच राशि द्वादश भाव से गोचर कर रहा है। चंद्र कुंडली में शनि राजयोग कारक है, ऐसी स्थिति वाला ग्रह गोचर में शुभ फल देता है। द्वादश भाव से शनि अपनी तीन पूर्ण दृष्टियों से मिथुन, तुला व मकर राशि को देखता है। तुला राशि में शनि उच्च का होता है और मकर राशि स्वयं उसकी अपनी राशि है और मिथुन राशि भी शनि की मित्र राशि मानी गई है। इन सब युतियों और संबंधों के कारण साढ़ेसाती के इस प्रथम चरण में जातक को अधिक दुःख नहीं उठाना पड़ता। ऐसे समय में जातक अनावश्यक व्यय करता है और धोखेबाजी व पाखंड उसके जीवन का अंग बन जाता है। साढ़ेसाती के दूसरे चरण में अर्थात् ढाई वर्ष के पश्चात् शनि अपनी मित्र राशि वृषभ में प्रवेश करता है। यहां बैठकर शनि अपनी तीसरी, सातवीं व दसवीं दृष्टि से कर्क, वृश्चिक व कुंभ को देखता है। फलस्वरूप जातक मितभाषी बन जाता है।

शनि की अशुभ दशाओं में अगर रोग, दुर्घटना या संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाए तो महामृत्युंजय का जप कराना सटीक उपाय है। इस मंत्र का उपदेश शिव ने भगवान विष्णु को किया था।

किस ग्रह की शान्ति के लिए कौन-सा उपवास, पाठ, जप तथा दान आदि करना चाहिए, इसकी तालिका नीचे प्रस्तुत है—

सेनापति मंगल	शिव-स्तुति	मूंगा	तांबा, सोना, गेहूं, गुड़, चमकीला लाल वस्त्र, लाल चन्दन, लाल पुष्प, लाल वृषभ, लाल मसूर की दाल, भूमि।
कुमार बुध	अमावस्या का उपवास	पन्ना ओनेक्स	कांसा, हाथींदांत, पन्ना, हरा वस्त्र, मूंग सुवर्ण, देसी कपूर, शस्त्र, फल, घृत, सर्व पुष्प।

देवताओं के गुरु गुरु (बृहस्पति)	अमावस्या का उपवास	पुखराज सुनेहला	पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, गऊ-घृत, पीला अन्न, पीले पुष्प, पुखराज, अश्व, धार्मिक पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि, छत्र।
राक्षसों के गुरु शुक्र	गौ-पूजा	हीरा जिरकन	चांदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चन्दन, हीरा, सफेद अश्व, दही, गंध, द्रव्य, चीनी, गौ, भूमि।
क्रूर शनि	मृत्युंजय जप	नीलम नीली	तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, कुलथी, काली गाय, जूता, काला पुष्प, कस्तूरी, सुवर्ण।
छायाग्रह राहु	मृत्युंजय जप	फीरोजा	लोहा, काले तिल, नीला वस्त्र, छाग, उड़द, ताम्रपत्र, सप्त धान्य, गोमेद, काला पुष्प, तेल, कम्बल।
छायाग्रह केतु	मृत्युंजय जप	लहसुनिया	कस्तूरी, तिल, छाग, काला वस्त्र, ध्वजा, सप्त, धान्य, कम्बल, उड़द, वैदूर्य काला, पुष्प, तेल, सुवर्ण, लोहा, शस्त्र।

अगर शनि से पीड़ित जातक लम्बे मंत्रों और स्तोत्रों का विधिपूर्वक पाठ करने में असमर्थ है तो उसे चाहिए कि निम्नलिखित मंत्रों में से किसी एक मंत्र का यथासंभव अधिक-से-अधिक जप करे–

1. **ॐ शं शनैश्चराय नमः।**
2. **ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।**

उक्त मंत्रों का कम से कम 21 हजार जप करने का विधान है। शनि से पीड़ित जातक को शनिवार के दिन लोहा अथवा रांगे में उत्कीर्ण

का भौतिक विज्ञान भी नवग्रहों से संबंधित पौराणिक मान्यता को स्वीकार करता है। यांत्रिक परीक्षणों से भी सिद्ध हो चुका है, कि ग्रह की विशेष स्थिति में निःसृत किरणें सृष्टि को, जीवन जगत को एवं वनस्पतियों को भी निश्चित रूप से प्रभावित कर देती हैं। भौतिक विज्ञान आज चाहे जो कुछ कहता हो, कारण वह विदेशियों या कह सकते हैं—नास्तिकों की देन है, पर भारतीय धर्म-दर्शन और अध्यात्म में नवग्रहों को दैवी शक्ति सम्पन्न माना गया है और इस कारण इनकी पूजा-उपासना, दानादि का विधान किया गया है। महर्षियों की स्वानुभवाधारित यह मान्यता रही है कि ग्रहों के विकिरणीय प्रभाव को ध्वन्यात्मक प्रभाव से जप द्वारा वायु तरंगों में परिवर्तित करके उनकी प्रतिकूलता का निवारण किया जा सकता है। इसी आधार पर उन्होंने नवग्रहों की उपासनार्थ मंत्र-रचना की, उसके जप के प्रभाव से लाभान्वित होने की विधि से हमें अवगत कराया।

नवग्रहों का तेज सम्पूर्ण सृष्टि को प्रभावित करता है। यह प्रभाव एक के लिए अनुकूल तो दूसरे के लए प्रतिकूल भी हो सकता है। तेजोत्पन्न प्रभाव की सृष्टि में मुख्य कारक मुहूर्त होता है। समय चक्र की गति-अनुसार मुहूर्त बदलते रहते हैं। इसी कारण प्रतिकूल मुहूर्त में जन्में व्यक्ति ग्रहों के प्रतिकूल प्रभाव से त्रस्त रहते हैं। उस संत्रास को शांत करने के लिए महर्षियों ने दीर्घकालीन अनुसंधान के बाद यह सिद्धांत प्रतिपादित किया कि अमुक-अमुक ग्रह की प्रतिकूलता को शांत करके उनकी अनुकूलता पाने के लिए अमुक मंत्र का अमुक संख्या में जप तथा उसके उपाय द्वारा उपचार किए जा सकते हैं।

शनि ग्रह अपनी रूपरेखा में अद्‌भुत और अद्वितीय है। सौरमंडल के कक्षा-क्रम से यह छठा ग्रह है। गुरु और अरुण के मध्य अपने परिक्रमा-पथ पर यह वलयकारी ग्रह बड़ी मंद गति से चलता है। इस ग्रह के चारों ओर एक वृत्ताकार वलय है, जो उस ग्रह का आभामण्डल जैसा प्रतीत होता है। वस्तुतः यह लघुतम तारा पुंजों से निर्मित एक राशि रेखा है, जो पर्याप्त चौड़ी होने के कारण कंकण जैसी दिखाई देती है।

शनि को भानुपुत्र, अकंसुत, छायात्मज, नील, मंद, आसित और कोण आदि नामों से भी जानते हैं।

अत्यधिक मंद गति होने के कारण शनिश्चर कहा जाने वाला ग्रह वास्तव में चाहे जैसा हो, पृथ्वी तल से यह नीले रंग का दिखाई देता है।

आकार में गुरु बृहस्पति से थोड़ा छोटा है। इसका व्यास 1,4,2,30,00,000 किलोमीटर है। यह सूर्य की परिक्रमा करने में 29 वर्ष का समय लगा देता है। इसका व्यास 1,20,500 किलोमीटर है। गुरुत्व शक्ति की दृष्टि से यह पृथ्वी की अपेक्षा 95 गुनी अधिक शक्ति रखता है।

प्रायः शनि की नीलाभ कृष्ण ज्योति-रश्मियां तामसिक प्रभावों की सृष्टि करती हैं। वैसे किसी-किसी के लिए प्रकृति भेद के आधार पर शनि राशियां अत्यंत सुखद सिद्ध होती हैं।

जब शनि अस्त होता है, उदय-अस्त का अर्थ है—पृथ्वी तल से किसी ग्रह या तारे का दृष्टिगोचर होना। परंतु चूंकि पृथ्वी गोल है, अतः किसी ग्रह की उदयास्त स्थिति सार्वदेशिक नहीं मानी जाती। यहां भारतीय पक्ष में शनि 38 दिन बाद पुनः उदित होकर 135 दिन सामान्य गति से अपने परिक्रमा पथ पर अग्रसर रहता है। यह अवधि पूरी करने के बाद 105 दिन वक्री रहता है। इस समय यह पश्चिम में अस्त हो जाता है।

नवग्रहों में अपनी क्रूरता, कुरूपता, दुर्दम प्रभाव, तामसिक वृत्ति और मंदगति के लिए शनि की गणना पहले होती है। यह इतनी धीमी गति से चलता है कि एक राशि से अगली राशि तक जाने में इसे ढाई वर्ष तक का समय लग जाता है। यह जिस राशि पर भी होता है उससे पूर्ववर्ती व अगली राशि पर भी ढाई-ढाई वर्ष तक अपना प्रभाव बनाए रखता है। इस प्रकार हर राशि को यह साढ़ेसात वर्ष तक अपने प्रभाव में रखता है। जन्मांग में यह शुभ बहुत ही कम होता है। अन्यथा यह सदैव दुःख, दरिद्रता एवं विपत्तियों का कारण ही बनता है। यह पाप ग्रहों में माना जाता है। इसका दुष्प्रभाव इतना घातक माना गया है कि बड़े-बड़े सम्राट् भी इसकी चपेट में आने से बच नहीं सकते हैं। जिस पर यह कुपित हो जाए उनका सर्वनाश करके ही छोड़ता है।

आकार रूपेण यह भयानक, विरक्तकारी व कुरूप होता है कि जन-सामान्य में इनका नाम प्रतीक रूप में प्रयुक्त होने लगा है।

भारी-भरकम डील-डौल वाला न होकर भी यह अपने गहरे काले रंग के कारण भयानक प्रतीत होता है। यूं देहयष्टि से दुर्बल फिर लम्बी-लम्बी भुजाओं, मोटे बालों, पीली आंखों, दीर्घ दंत युक्त होने के कारण भयंकर प्रतीत होता है। इनमें क्रोध की मात्रा अधिक है। स्वभाव से मलिन,

पर-पीड़क, आलसी, पदोन्नति में बाधक, तीखे व चरपरे पदार्थों में रुचि रखने वाला, सिरका, मिर्ची, कड़वा तेल आदि पदार्थ इसे खूब प्रिय हैं। यह स्वयं में नपुंसक, बौद्धिकता की दृष्टि से नितांत वंचित, मूर्ख, आलस्ययुक्त, झगड़ालू, प्रतिशोध की भावना रखने वाला, सदैव उद्धत रहने वाला, तमोगुणी, मलिन, गंदा, वीभत्व होता है। मानव-देह के स्नायुतंत्र को नियंत्रित करने, नाड़ी-संस्थान व आंतों को प्रभावित करने में सदैव आगे रहता है।

रूपरेखा में यह चाहे जितना भयानक व वितृष्णकारी हो परंतु आराधना, उपासना को सभी ने महत्व दिया है। कारण, यह सौरमंडल का प्रभावी ग्रह है। अपनी असीम शक्ति से देवताओं को भी पराभूत कर देता है। इसकी प्रतिकूल दृष्टि जितनी सुखद है, अनुकूल दृष्टि उतनी ही सुख-वैभवशाली है।

मंद गति से चलने पर भी यह सम्पूर्ण ब्रह्मांड का भ्रमण करता रहता है। यूं उसका स्थायी वास पश्चिम दिशा में है। भारत भूमि पर इसका निवास गुजरात, काठियावाड़ हैं। नदी, पर्वत, घने जंगल, जनाकीर्ण नगर इसे रुचिकर नहीं है। यह ऊसर, बंजर व बीहड़ों में वास करता है। भ्रमण के समय जिन दिनों वह पश्चिम दिशा में स्थित होता है, पृथ्वी के पश्मिांचल के प्रदेशों को इसकी सीधी किरणें प्रधानतया प्रभावित-कारक हैं। इसकी रश्मियों से वितरित आभाजन्य प्रभाव भी होता है।

शनि मण्डल आकार में अत्यधिक छोटा है। आकृति है धनुषाकार। यह एकमात्र वलयकारी ग्रह है, दूरदर्शक यंत्रों के सहारे इसका वलयावृत्त देखा जा सकता है। अपने वलय के मध्य शनि एक नीलाभ रत्न की भांति जड़ा हुआ प्रतीत होता है। इसकी नीली आभा शुक्र की हल्की आभा से कई गुनी अधिक गहरे रंग वाली होती है।

आकार की दृष्टि से यह ग्रह लघुकाया ग्रह है। इसका माप पौराणिक मान्यतानुसार मात्र दो अंगुल है। इसकी यह लघुकाया भी इसको मंदगामी बनाने का एक कारण है। आकाश में 27 नक्षत्र और 12 राशियों का वृत्त अपनी परिक्रमा में पूरा करके अपने मूल स्थान पर पहुंचने में इसे 30 वर्ष का काल-खण्ड पार करना पड़ता है। एक राशि पर वह ढाई वर्ष रहता है। यह माप में मंगल से भी छोटा है।

शनि ग्रह का प्रभाव-क्षेत्र पश्चिम दिशा, भारत भूमि पर सौराष्ट्र प्रदेश है। जिस समय वह भूखंड शनि की सीधी रश्मियों से प्रभावित होता है, वहां के जन-जीवन और प्राकृतिक परिवेश में निश्चित रूप से कोई-न-कोई परिवर्तन अवश्य होता है। यह जब भी जिस राशि के क्षेत्र में चल रहा होगा उस राशि से संबंधित क्षेत्र और सृष्टि को भी प्रभावित करेगा। यह मनुष्य, जीव-जन्तु, वनस्पति, खनिज, पर्यावरण वह सब कुछ जो हमें प्रत्यक्ष देखते हैं, यही नहीं, आंतरिक रूप से भी पृथ्वी, समुद्र की तहों में तथा मानव के मन-मस्तिष्क तक पड़ता है। शनि-रश्मियों का स्पर्श होते ही जातक की विचार-शक्ति बदल जाती है। शनि-प्रभाव के परिणम का मूर्तरूप बनने वाली पृष्ठ-भूमि, जिस मानसिकता से निर्मित होती है, उसको गतिशील बनाने में ये रश्मियां सर्वाधिक होती हैं।

भारतीय मनीषियों में जिन्होंने अपनी तपस्या और ज्ञान-साधना के बल पर देवी-देवताओं का सामीप्य प्राप्त कर लिया था, महर्षि कश्यप को प्रमुख स्थान प्राप्त है। उसी की वंश-परम्परा में उत्पन्न होने के करण शनि को काश्यपेय कहा जाता है। कुछ लोग इसका प्रसंग काश्यपेय यज्ञ से भी जोड़ते हैं जिसके प्रमुख पुरोधा भी महर्षि कश्यप थे। जो हो, शनि को कश्यप गोत्र में उत्पन्न मानकर, तद्नुसार उसकी स्तुति में कश्यपेय महद् द्युतिम कहा जाता है।

शनि का शरीर, रूपाकार और वर्ण कुछ भी सुंदर, शोभन नहीं है। यह काले रंग का, अत्यंत कुरूप और भयोत्पादक ग्रह है। यही कारण है कि उसकी तुष्टि हेतु, उसके वर्ण-स्वभाव से समानता रखने वाले पदार्थ लोहा, कोयला, काला वस्त्र, तेल उसकी उपासना में प्रयुक्त होते हैं। गहरे नीलेपन की आभा जो काले रंग से मिलती-जुलती है, शनि का वर्ण है।

सौरमंडल में बाहर राशियां हैं। उनमें दो राशियां मकर और कुंभ शनि ग्रह के प्रभाव-क्षेत्र में हैं। इन्हीं दो राशियों पर शनि का प्रभुत्व है। यह तो नक्षत्रों के सामंजस्य और कुंडली की स्थिति पर निर्भर होता है कि कौन-सी राशि किस भाव में बैठी है और कौन-सा ग्रह कहां से, किसे और किस रूप में प्रभावित कर रहा है? प्रत्येक भाव का अपना प्रभाव-क्षेत्र है। उस प्रभाव-क्षेत्र को प्रभावित करने, उसके गुण-दोष को बढ़ाने में उस भाव तथा आस-पास अवस्थित राशियों और ग्रहों की स्थिति को प्रमुख कारक रूप

में विवेचित किया है। शनि का वाहन गीध (गिद्ध) नामक पक्षी है। यह अपनी तीव्र दृष्टि, शारीरिक बल, लम्बी व ऊंची उड़ान, मांसाहार व तामसी प्रकृति के लिए प्रसिद्ध है। स्वार्थी, तटस्थ, उदासीन, क्रोधी, हिंसक, आलसी, दीर्घाहारी और दूरदर्शी के रूप में यह समस्त पक्षी जगत में प्रसिद्ध हैं। यही सारी विशेषताएं शनि के स्वाभाविक गुणों से पूरी तरह मेल खाती हैं। इसी समय के कारण उसे शनि का वाहन घोषित किया है।

प्रत्येक ग्रह का शुभ प्रभाव जहां व्यक्ति के लिए कल्याणकारी और सुखद, मंगलकारी होता है, वहीं उस ग्रह की विपरीत स्थिति घातक और दुःखदायी होती है। शनि की विपरीतता तो बहुत ही पीड़ाकारक होती है। शनि की साढ़ेसात वर्ष वाली स्थिति जन्मकुंडली में शनि की स्थिति के अनुसार शुभ भी हो सकती है और अशुभ भी। प्रायः यह स्थिति क्लेशकारक होती है। अपवाद रूप में किसी-किसी की कुंडली में शनि को सुखद स्थिति में देखा जाता है। ग्रहों का दशानुसार भेद भिन्न-भिन्न होता है। शनि की महादशा का काल 19 वर्ष माना गया है।

शनि कभी-कभी शुभ व अनुकूल फल भी देता है। यद्यपि ऐसा बहुत कम होता है। शनि की प्रबलता के कारण अच्छे-अच्छे सम्राट भी धूल-धूसरित होते देखे गए हैं। देवता तक भी शनि से आतंकित रहते हैं। राजा हरिश्चंद्र, पांडव, राजा बालि, श्री रामचंद्र, महारथी रावण तक को शनि ने राहु का भिखारी बना दिया।

शनि का दुष्प्रभाव व्यक्ति को नाना प्रकार के कष्ट भोगने की स्थिति में पहुंचा देता है। मानसिक शांति नष्ट हो जाती है। सफलता में अवरोध, कार्य में विघ्न, प्रगति में बाधा, अवनति का प्रारंभ, शरीर कष्ट, हानि, सम्मान हानि, कार्यावरोध, पलायन, निष्कासन, जेल, दरिद्रता, भ्रम, शत्रु-भय की स्थिति बनती है। दुर्भाग्य से वह असाध्य रोगी भी हो जाता है। शनि, मंगल, राहु, केतु, अत्यंत उग्र, कष्टप्रद, अमंगलकारी और सशक्त ग्रह हैं। यह कष्ट व संकट के ही प्रतीक हैं। सूर्य भी उग्र है, पर वह इतना घातक नहीं है।

❑❑❑



शनि रत्न नीलम

शनि ग्रह की साढ़ेसाती का समय जातक के लिए कभी शुभ नहीं होता, इस तथ्य को सभी विद्वान स्वीकार करते हैं। अगर साढ़ेसाती अरिष्ट दे रही हो, तो इन्हें परामर्श है कि रत्नों में श्रेष्ठ चमत्कारी नीलम रत्न को धारण करने से आरिष्ट समाप्त हो जाता है या फिर उसके कुफल की तीव्रता गतिहीन हो जाती है। नीलम रत्न को शनि देव का प्रधान रत्न माना गया है। इसे संस्कृत में नीलमणि या इन्द्रनीलमणि, हिन्दी में नीलम, अंग्रेजी में सेफायर टरम्यूज और फारसी में नीलबिल याकृत के नाम से जाना जाता है। श्रेष्ठ नीलम के निम्नलिखित गुण होते हैं–

- अगर नीलम को गिलास में पानी भरकर डाल दिया जाये, तो उसमें से नीली रश्मियां चमकती दिखती हैं।
- नीलम में रेशा होता है।
- प्रायः नीलम धारण करने पर उसका अच्छा-बुरा प्रभाव 48 घंटे में स्पष्ट हो जाता है। नीलम का परीक्षण केवल शनिवार से मंगलवार तक ही कर सकते हैं।
- मोरपंख के रंग का नीलम श्रेष्ठ होता है।
- नीलम चमकदार होता है और इससे पतली नीली रश्मियां प्रस्फुटित होती हैं।

नीलम के गुण जान लेने के पश्चात् भी यह समस्या होती है कि वह वास्तविक है या नकली? इसकी पहचान निम्नवत् है–

- नीलम को सूर्य के प्रकाश में रखने से नीली रश्मियां फूटती दिखती हैं।
- नीलम साफ और पारदर्शी होता है।
- नीलम का पानी श्रेष्ठ होता है और कोण सुडौल।

- नीलम काफी चिकना होता है।

सुधि पाठक स्मरण रखें, रत्न लेते समय रंग, ढंग और संग देखना चाहिए। रंग साफ है या धुंधला, ढंग से अर्थ है—रत्न सुडौल है या फिर बेडौल, संग का तात्पर्य है—अंगूठी में कैसा लगेगा?

दोषयुक्त नीलम कभी भी धारण न करें। दोषयुक्त नीलम के दोष इस प्रकार बताये गये हैं—

- दुरंगा नीलम।
- दूधिया नीलम।
- जालायुक्त नीलम।
- गड्ढायुक्त नीलम।
- सफेद डोर वाला नीलम।
- काला, लाल, सफेद या चीरयुक्त नीलम।

शनि की ढैया या साढ़ेसाती में नीलम प्राण-प्रतिष्ठा कराकर धारण करने से शनि का अशुभ फल कम हो जाता है। प्रायः मेष, वृष, तुला और वृश्चिक लग्न वालों के लिए धारण करना शुभ होता है। लेकिन अगर नीलम धारण करने पर निम्न प्रभाव दिखें, तो उसे तत्काल उतार देना चाहिए—

- मुखाकृति में परिवर्तन होने पर।
- नेत्र रोग होने पर।
- बुरे स्वप्न आने पर।
- आकस्मिक दुर्घटना होने पर।
- रुपया खोने पर।
- रोग, शत्रु या दूसरी स्थितियां उत्पन्न होने पर नीलम उतार देना चाहिए।

प्रायः नीलम को शनिवार के दिन ही धारण करना श्रेष्ठ बताया गया है। सोमवार को नीलम प्रातः 9 बजे या रात्रि 2 बजे, मंगलवार को प्रातः 6 बजे से दोपहर 1 बजे के मध्य, बुधवार को प्रातः 4 बजे, दिन में ग्यारह बजे या फिर सायं 6 बजे, बृहस्पतिवार को प्रातः 7 बजे, दोपहर में 2 बजे और रात्रि में 9 बजे, शुक्रवार को प्रातः 11 बजे या सायं 4 बजे, रविवार को प्रातः 5 बजे या दोपहर 12 बजे—इस अवधि में नीलम धारण करना शुभ होता है। शनिवार को नीलम प्रातः 8 बजे, अपराह्न 3 बजे, रात्रि 10 बजे या फिर भोर में 3 बजे ही धारण करना श्रेयष्कर होता है। शनि की साढ़ेसाती के आरिष्ट से मुक्ति दिलाने में नीलम सर्वश्रेष्ठ रत्न है। शनि सबको बराबर कष्ट देता है, यह बात उचित नहीं है। वह कम कष्ट, कम

हानि भी देता है और जातक को बुरे समय से निकालकर लाभ भी देता है। हां इतना अवश्य है कि वह अपने समय में हर किसी को थोड़ा-बहुत झकझोरता अवश्य है। फिर भी इतना तय है कि किसी जातक का पूरा-का-पूरा समय खराब नहीं होता है।

पूर्णिमा की रात में दूध पर नीलम का प्रकाश डाला जाए, अगर नीलम के प्रकाश से दूध के पात्र पर नीली आभा छा जाए तो नीलम उत्तम जाति का समझा जाना चाहिए। उत्तम नीलम की एक विशेषता और है, वह यह है कि तिनका उसके समीप ले जाएं तो वह उससे चिपक जाता है।

नीले रंग की कटकिज मणि तथा कांच की अनुकृतियां भी बाजार में बिकती हैं। कृत्रिम नीलम में रंगों की मुड़ी हुई वक्र पट्टिकाएं होती हैं, पर असली नीलम में सीधी। स्वच्छ पानी के गिलास में नीलम डाल दिया जाए तो उसमें से नीली किरणें निकलती हुई-सी दिखाई देती हैं। नीलम समान्यतः अपने आकार से हल्का होता है। धूप में रखने पर इसकी चमक में वृद्धि होती है।

शनि दोष हो, साढ़ेसाती हो, रोग हो—तब शनिवार के दिन स्वाति, विशाखा, चित्रा, धनिष्ठा, श्रवण या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र हो तो एक ऐसे ही शुभ दिन को पांच धातु की अंगूठी में नीलम रत्न जड़वाएं।

जन्मकुंडली में शनि जिस राशि में हो उसी राशि के अनुसार नीलम का तौल होना भी शुभ माना गया है।

मेष	4 रत्ती	वृषभ	4 रत्ती
मिथुन	3 रत्ती	कर्क	7 रत्ती
सिंह	7 रत्ती	कन्या	3 रत्ती
तुला	4 रत्ती	वृश्चिक	9 रत्ती
धनु	5 रत्ती	मकर	9 रत्ती
कुंभ	9 रत्ती	मीन	5 रत्ती

इसके बाद धनुषाकर शनिमंडल बनाएं तथा उस पर शनि मंत्र अंकित कर **'ॐ शनि मंत्र'** का अभिलेख करें। तत्पश्चात् प्राण-प्रतिष्ठा कर शनि के वेदोक्त मंत्र से 23 बार जप करें। इसके बाद प्राण-प्रतिष्ठा करने पर मंत्र जाप करें—

ॐ शन्नो देवी रभिष्टया आथो भवन्तु प्रीतये शन्नोरमिश्रवतुनः।

इस रत्न को धारण करने के कुछ समय बाद ही इसका प्रभाव अनुभव

होने लगता है, अतः रत्न धारण करने से पूर्व इसकी परीक्षा कर लेनी चाहिए। रात में यदि शुभ स्वप्न आए तो नीलम अनुकूल समझना चाहिए और अशुभ स्वप्न आए तो प्रतिकूल समझना चाहिए। नीलम का पांच वर्ष तक प्रभाव रहता है। तदुपरांत पुनः प्राण-प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

पौराणिक कथाओं में शनि को सूर्य-पुत्र, यम का भाई, अपने भक्तों को अभयदान देने वाला, समस्त विघ्नों को नष्ट करने वाला एवं सिद्धियों को देने वाला कहा गया है। जबकि ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि में एक क्रूर एवं पाप ग्रह बताया गया है। कहा गया है कि यह क्रूर ग्रह एक ही क्षण में राजा को रंक बना देता है और जब बात आती है शनि की साढ़ेसाती अथवा ढैया की, तो हमारा भयभीत एवं चिंतित होना स्वाभाविक होता है और इसके लिए सबसे सरल उपाय है शनि साधना और रत्न धारण करना। आंप मेरी यह बात सदैव स्मरण रखें, लोग शनि से आपको भयभीत करेंगे। महंगे और श्रम साध्य उपाय बतायेंगे, अनेक प्रकार की कथाएं भी सुनायेंगे, पर आप भयभीत न हों क्योंकि शनि अशुभ ही नहीं कल्याणकारी ग्रह भी है। शनि की शांति तथा सुखों की इच्छा रखने वाले लोगों को शनिवार का व्रत करने से शनि-जनित दोष, रोग-शोक नष्ट हो जाते हैं, धन-लाभ होता है। स्वास्थ्य-सुख की वृद्धि होती है।

विश्व के समस्त कल-कारखाने, धातु उद्योग, लौह-वस्तु, तेल, काले रंग की वस्तु, काले जीव, अकाल, कारागार, रोग-भय, जुआ, लॉटरी, चोर-भय तथा क्रूर कार्यों के स्वामी शनि हैं। ग्रहों में अगर कोई ग्रह सबसे अधिक भयप्रद माना जाता है तो वह है शनि। साढ़ेसाती, ढैया अथवा दशा के रूप में शनि जातक के जीवन में अनेक बार आया करता है। मानव-जीवन में शनि प्रायः तीन बार ही आया करता है। प्रथम बार का शनि माता-पिता के आश्रय में आता है, द्वितीय बार का शनि जातक के जीवन को अस्त-व्यस्त कर देता है और तृतीय बार का शनि जीवन के सुख-चैन को समाप्त कर देता है और यदि कभी चौथी बार का शनि आ जाए तो मृत्यु से मिलन ही करा दिया करता है। शनिजनित कष्ट निवारण के लिए शनिवार का उपवास करना लाभप्रद है।

शनिवार का उपवास किसी भी शनिवार से आरम्भ किया जा सकता है। व्रती मनुष्य जल में स्नान करके, ऋषि-पितृ तर्पण करें, कलश भरकर लाएं, शनि अथवा पीपल के पेड़ के नीचे वेदी बनाएं, उसे गोबर से लीपें, काले लोह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत में स्नान कराकर काले चावलों

से बनाए हुए चौबीस दल के कमल पर स्थापित करें। काले रंग के गंध, काला कपड़ा, पुष्प, अष्टांग, धूप, फूल, सर्व प्रकार के नैवेद्य आदि से पूजन करें। शनि के दस नामों का उच्चारण करें। शनि अथवा पीपल के वृक्ष में सात सूत के धागों को लपेटकर सात परिक्रमा करें तथा पेड़ का पूजन करें। यह पूजन सूर्य उदय होने से पूर्व करें। शनिवार व्रत कथा को प्रेमपूर्वक सुनें। कथा कहने वाले को कुछ दान दें। तिल, जौ, उड़द, गुड़, लोहा, तेल व काले वस्त्र का दान करें। आरती करें और प्रार्थना करके प्रसाद बांटें।

पहले शनिवार को घी और पूरियों का भोग लगाएं। इस प्रकार शनिवार का व्रत करने से शनिदेव प्रसन्न होते हैं। सर्व प्रकार के कष्ट, आरिष्ट आदि व्याधियों का नाश होता है और अनेक प्रकार के सुख-साधनों की प्राप्ति होती है।

राहु-केतु और शनि के कष्ट निवारण हेतु शनिवार के उपवास का विधान है। इस उपवास में काले लोहे की शनि की, शीशे की राहु-केतु की आकृति बनवाएं। कृष्णवर्ण वस्त्र, दो भुजदंड और अक्षमालाधारी, काले रंग के आठ घोड़े वाले शीशे के रथ पर बैठे शनि का ध्यान करें। कराल वदन, खड्ग, चर्म और शूल से युक्त नीले सिंहासन पर विराजमान वरप्रद राहु का ध्यान करें।

इन्हीं स्वरूपों में मूर्तियों का निर्माण कराएं। काले रंग के चावलों से चौबीस दल का कमल बनाएं। कमल के मध्य में शनि, दक्षिण भाग में राहु और वाम भाग में केतु की स्थापना करें।

रक्तचंदन में केसर मिलाकर गंध; चावल में काजल मिलाकर काले चावल, काकामाची, कागलहर के काले पुष्प, कस्तूरी आदि से कृष्ण धूप और तेल आदि के मिश्रण से भोग अर्पण करें और **"शनैश्चर नमस्तुभ्यं नमस्तेत्वथ राहवे। केतवे नमस्तुभ्यं सर्वशांतिप्रिदो भव।"** से प्रार्थना करें।

इस प्रकार उपवास करें। शनि के लिए शनि मंत्र से शनि की समिधा में, राहु-केतु की समिधा में, केतु के लिए केतु मंत्र से कुशा की समिधा में जौ, शुद्ध घी, काले तिल की 108 आहुतियां प्रत्येक के लिए दें। इस प्रकार शनिवार के उपवास के प्रभाव से शनि, राहु, केतु-जनित कष्ट तथा सभी प्रकार के आरिष्ट-कष्ट और आधि-व्याधियों का सर्वथा नाश होता है।

❑❑❑



शनि-शांति के विशेष उपाय

ग्रहों के दोषों के निवारण के उपायों की दुनिया बहुत विचित्र है। विद्वानों द्वारा एक ही ग्रह की शांति हेतु तरह-तरह के उपाय बतलाए जाते हैं। कुछ वैदिक मंत्रों से, कुछ तंत्रों से, कुछ शाबर मंत्रों से, कुछ योग क्रियाओं के माध्यम से, कुछ दान उपवास के द्वारा ग्रह-शांति के तरीके अपनाते हैं।

प्रकृति ने अमीर या गरीब सभी के लिये ग्रह-शांति की व्यवस्था कर रखी है। एक धनाढ्य के लिये लाखों के शनि अनुष्ठान, तो दूसरी ओर एक निर्धन के लिये कच्ची घानी के सरसों के तेल से शनि को प्रसन्न करने के उपाय हैं। विद्वानों के यहां अनेक सार्थक तर्क हो सकते हैं मगर मैं इस विवाद में नहीं पड़ना चाहता हूं। मेरा उद्देश्य तो केवल शनि दोष निवारण के लिए उत्तम उपायों से है, जिन्हें अपनाकर शनि के दोष से ग्रस्त जातकों को लाभ मिल सके।

व्यवसाय या नौकरी में बाधक हो तो यह उपाय कर सकते हैं—शनिवार के दिन सिन्दूर, चाँदी का वर्क, पांच मोतीचूर के लड्डू, शुद्ध चमेली का तेल व एक देसी पान का बीड़ा। पान को पांच लौंग से बंद करके नियमित रूप से शनिवार के दिन हनुमान जी को अर्पण करें तथा हनुमान जी को चोला चढ़ायें। लाभ होगा।

विवाह में विलम्ब हो तो यह उपाय कर सकते हैं—250 ग्राम काले तिल, 250 ग्राम काले साबुत उड़द, 250 ग्राम तिल का तेल, सवा गज काला कपड़ा, एक जटावाला नारियल शनिवार के दिन शनि को अर्पण करें। ऐसा 9 शनिवार तक करें। विवाह में विलम्ब अथवा बाधा हुई तो दूर होगी।

साढ़ेसाती या ढैया दोष निवारण हेतु

शनि-साढ़ेसाती व ढैया में जातक उन्नीस हजार शनि मंत्र का स्वयं जप करे या किसी विद्वान से करवाये। या प्रतिदिन 108 बार शनि मंत्र का जाप करे या रात्रि में सोते समय 31 बार मंत्र का जाप अवश्य करे, लाभ मिलेगा। मंत्र नीचे दिये गये हैं। इनमें से किसी भी मंत्र का प्रयोग कर सकते हैं–

1. **ॐ शं शनैश्चरायः नमः।**
2. **ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैय नमः।**

शनि कवच धारण करें।

अब एक पात्र में अष्टगंध की स्याही गंगाजल या साफ जल में घोलकर लोहे की कलम से भोजपत्र पर निम्न शनि तैंतीसा यंत्र बना लें। यंत्र के नीचे अपना नाम, पिता का नाम एवं गोत्र आदि लिखें–

नाम–पिता का नाम–गोत्र

१२	७	१४
१३	११	६
८	१५	१०

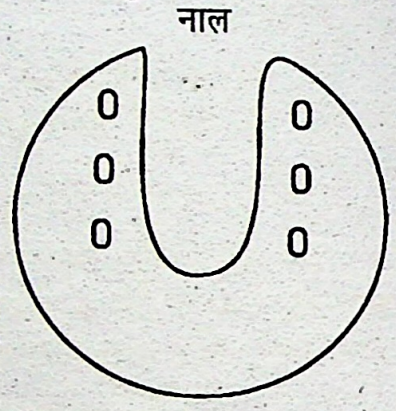
ॐ प्रां प्रीं प्रां सः शनैय नमः

अब इस यंत्र पर कुंकुम का छींटा दें, पुष्प अर्पित करें, काले तिल चढ़ायें, मोली 3 बार चढ़ायें, धूप-दीप दिखायें। सभी कार्य सम्पन्न करते समय '**ॐ शं शनैश्चरायः नमः**' मंत्र का जाप करते रहें। अब इस भोजपत्र पर बने यंत्र को इस प्रकार मोड़ें कि यह चाँदी के खोल में समा जाये। चाँदी के खाली खोल में डालकर इसे किसी चिपकाने वाले पदार्थ की सहायता से पूर्णतया चिपका दें, जिससे इसमें पानी नहीं जा सके। अब इसे गले में पहन लें।

काले घोड़े की नाल

कुदृष्टि, व्यापार-बाधा तथा शनि ग्रह जनित दोषों, कष्टों—शनि ग्रह की साढ़ेसाती, ढैया, दशा अथवा महादशा के निवारण हेतु घोड़े की नाल की आकृति में बने 'शनि रक्षा यंत्र' को घर में स्थापित करें।

अगर आप अपने व्यापार में कुछ रुकावट अनुभव करते हैं अथवा जन्मपत्रिका में शनि ग्रह की साढ़ेसाती, ढैया, दशा अथवा महादशा का प्रभाव है तो इस 'शनि रक्षा यंत्र' को अपने व्यापार अथवा घर के मुख्य प्रवेश द्वार के ऊपर बाहर की ओर यू के आकार में कम-से-कम चार कील लगाकर किसी भी शनिवार के दिन लगा दें। इसके शुभ प्रभाव से आपके कार्यस्थल अथवा घर की कुदृष्टि तथा शनि के प्रतिकूल प्रभाव से रक्षा होती है।



काले घोड़े की नाल की अंगूठी दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में शनिवार के दिन पहन लें। यह एक ऐसा उपाय है जो वर्ष में एक बार किसी भी पुण्य समय में किया जा सकता है और इस अवसर पर किया गया प्रयोग कई गुना फल प्रदान करता है।

प्रिय पाठकों! मेरी यह बात सदैव स्मरण रखें—आप सारे शुभ कार्य शुक्ल पक्ष में करें, शनि से सम्बन्धित उपाय सदैव कृष्ण पक्ष में ही करें।

पंचम स्थान में शनि हो एवं दश स्थान में कोई भी ग्रह न हो तो ऐसे जातक के प्रायः संतान नहीं होती। 48वें वर्ष में वह भवन निर्माण करता है। संतान तो होती है किंतु वह अल्पायु होती है। इस दोष के निवारणार्थ, गुड़, तांबा, चावल और शुद्ध मधु एक काले कपड़े में बांधकर मकान में टांग दें।

जन्मपत्रिका में शनि शुभ हो तो उसे और शुभ बनाने के लिए भवन में लोहे के फर्नीचर का प्रयोग करें। भोजन में काला नमक एवं काली मिर्च का प्रयोग अधिक करें। आंखों में काला सुरमा लगाएं। शनिवार को उपवास करें। शनिवार को पानी में दारू हल्दी डालकर उससे स्नान करें। शनिवार के दिन शनिदेव को उड़द चढ़ाएं।

एकादश भाव (आय भाव) में शनि एवं सप्तम स्थान में शुक्र हो तो ऐसा जातक बड़ा भाग्यवान् होता है। कोई भी कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व पानी से भरा घड़ा दान दें।

छठे भवन में शनि, गुरु बृहस्पति दोनों हों तो जातक पानी वाला नारियल जल में प्रवाहित करे। जातक 28वें वर्ष के पश्चात् ही विवाह करे।

सप्तम भवन में शनि हो और जातक शराब पीता हो तो तुरंत शराब पीना छोड़ दे।

शनि की अनिष्टता से होने वाले कष्ट कम करने के लिए भोजन के लिए थाली में परोसे सभी पदार्थ थोड़े-थोड़े कौओं को खिलाएं। संतति-प्राप्ति में शनि रोड़े अटकाता हो या गर्भपात होता हो तो ऐसी स्त्री भोजन से पूर्व भोजन की थाली में परोसे सभी पदार्थों से थोड़ा-थोड़ा निकालकर कुत्ते को खिलाए।

षष्ठम भाव में शनि हो एवं दूसरे भाव में कोई ग्रह न हो तो ऐसा जातक ब्याज का व्यवसाय, कारखाना, छापाखाना, तेल का व्यापार, लोहे की वस्तुओं का व्यापार, ऑयल मिल, पैट्रोल, मोबिल ऑयल, ग्रीस बेचने का धंधा करें। व्यवसाय प्रारंभ के पूर्व मिट्टी के मटके में राई का तेल डालकर उसका मुंह काले कपड़े से बांधकर वह मटका नदी में डाल दें।

चतुर्थ भाव में शनि हो, तो ऐसे जातक रात को दूध न पीएं। क्योंकि दूध शनि की अनिष्टता बढ़ाता है। चतुर्थ भवन में शनि हो, तो ऐसे जातक सांप की पूजा करें। भैंस को घास खिलाएं, मजदूरों को भोजन दें। सदैव धन की कमी रहती हो तो कुएं में कच्चा दूध डालें।

अशुभ शनि होने पर जिस जातक के भवन का द्वार पश्चिम दिशा में होता है, तो जातक की आयु के 36, 42, 45, 48वें वर्ष क्लेश देने वाले होते हैं। शिक्षा पूर्ण नहीं होती। अपचन की शिकायत रहती है। ऐसे जातक सुरमा खरीदकर धरती में गाड़ दें। सुरमा एवं बड़ की जड़ दूध में उबालकर उसका तिलक स्वयं के माथे पर करें। इससे मानसिक एवं आर्थिक अड़चनें दूर होती हैं।

सूर्य की युति, सप्तम या अष्टम भाव में शनि-मंगल या शनि-राहु की युति हो, नीचस्थ शनि, मारकेश शनि हो तो शनि की शांति के उपाय अवश्य करने चाहिएं—

- शनिवार को सायंकाल पीपल के वृक्ष के नीचे कच्ची घानी के सरसों के तेल का दीपक जलाएं।

- अपने भार के बराबर कच्चे कोयले किसी भी शनिवार को बहते जल में प्रवाहित करें।
- शनिवार को शनि चालीसा अवश्य पढ़ें।
- मंत्रों की माला का जाप अवश्य करें। मंत्र : **ॐ शं शनैश्चराय नमः।**
- काले घोड़े की नाल का छल्ला अपनी मध्यमा अंगुली में शनिवार को पहनें।
- शनि के प्रतिदिन 108 नामों का जप करें।
- शनि की शांति के लिए एक शनैश्च स्तवराज का वर्णन पुराण में किया गया है, जिसका पाठ करने से शनिकृत सभी कष्टों से मुक्ति मिलती है। धर्मराज युधिष्ठिर ने शनि शांति के लिए इसका पाठ किया था। परिणामतः उन्हें आज्ञातवास, वनवास एवं कष्टों से मुक्ति प्राप्त हुई थी। इस संदर्भ में कुछ विवरण प्रस्तुत है—

लाल किताब के अनुसार, भवन का कारक ग्रह शनि को माना गया है। व्यक्ति के जीवन में भवन का सुख होना या न होना, मकान बनने के पश्चात् उसका शुभ या अशुभ फल होना, मकान बनते समय परेशानियां आना, मकान का पूरा न होना, बिक़ जाना या हानि होना—यह सब शनि के अधीन हैं। हम देखते हैं कि कुछ लोगों के सामने मकान बनते ही अनेक तरह की समस्याएं सामने आती हैं और कुछ के जीवन में मकान बनते ही उन्नति के मार्ग खुलते दिखलाई देते हैं। किसी व्यक्ति को मकान बनाना चाहिए या नहीं, मकान बनाते समय क्या सावधानियां रखनी चाहिएं और मकान शुभ रहेगा या अशुभ? यह जानने के लिए लाल किताब के अनुसार जन्मकुंडली में शनि की स्थिति पर विचार किया जाता है।

प्रथम भाव में शनि स्थित हो और शत्रु या नीच राशि में होकर अशुभ हो तो भवन बनाना शुभ नहीं होता। यदि यहां शनि मित्र या उच्च राशिगत होकर शुभ हो और सातवां और दसवां भाव खाली हो तो मकान बनाना शुभ रहता है।

दूसरे भाव में शनि हो तो मकान जब और जैसे बने, बनने दें। इस प्रकार बना मकान पूरे कुटुंब के लिए शुभ होता है।

तीसरा भाव मंगल का कारक है और तीसरे भाव में शनि होने से शनि-मंगल का अशुभ संबंध मकान के फल को शुभ नहीं रहने देता। उपाय के तौर पर एक काला कुत्ता घर में रखना चाहिए।

चौथे भाव में शनि की स्थिति से भवन बनते ही व्यक्ति की अपनी मानसिक स्थिति, माता और नाना के परिवार, दादी, सास आदि पर अशुभ प्रभाव होता है। इस अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए कुएं में दूध गिराना चाहिए।

पांचवें भाव में शनि की स्थिति से, अपना बनाया मकान व्यक्ति के पुत्र के लिए अशुभ कहा गया है। उपाय के तौर पर मकान बनाने से पहले शनि की जीवित वस्तुएं; जैसे—भैंसा—दान स्वरूप देना चाहिए।

छठे भाव में शनि होने से 39 वर्ष के पश्चात् भवन निर्माण शुभ रहता है। उपाय के लिए सरसों के तेल का बर्तन तालाब में दबाना चाहिए।

सातवें भाव में शनि उच्च और बली माना जाना है और व्यक्ति को जीवन में कई बनेबनाये मकान मिलते हैं जो उसके लिए शुभ रहते हैं। अगर किसी कारण से शनि का फल खराब होने लगे तो सबसे पुराने भवन की दहलीज कायम रखने से मकान फिर बनने लगते हैं।

आठवें भाव में शनि का होना भवन के विषय में अशुभ है। कुंडली में राहु-केतु की स्थिति शुभ होने की स्थिति में ही व्यक्ति का मकान बनाना शुभ होता है। उपाय के लिए चाँदी का चौकोर टुकड़ा पास रखना चाहिए।

नौवें भाव में शनि स्थित हो और ऐसे व्यक्ति के घर में कोई स्त्री गर्भवती हो, उस समय मकान बनाने से घर के बुजुर्गों पर अशुभ प्रभाव होता है। शनि नवें भाव में हो तो उपाय के तौर पर साबुत हल्दी या केसर पीतल के बर्तन में डालकर घर में रखना चाहिए।

दसवें भाव में शनि भवन बनने तक खूब धन-दौलत देता है। मकान बनने के पश्चात् कष्ट या धन-दौलत के मार्ग में कुछ अड़चनें आती हैं।

ग्यारहवें भाव में शनि होने से व्यक्ति को अपने माता-पिता से सम्पत्ति प्राप्त होती है। अपना भवन अधिकतर देरी से 52 वर्ष की आयु के पश्चात् बनता है। शनि 11वें भाव में हो तो दक्षिण दिशा का दरवाजा धन और स्वास्थ्य सबको अशुभ प्रभाव देता है।

बारहवें भाव में शनि वाले व्यक्ति के भवन स्वयं ही बनते हैं, जोकि शुभ प्रभाव देने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति के लिए शरीर पर सोना धारण करना शुभ रहेगा।

सप्तमेश षष्ठस्थ हो तथा अष्टमेश सप्तम भाव में हो और सप्तमेश पर शनि का प्रभाव हो तो जातक को जीवनपर्यन्त भवन-सुख की प्राप्ति नहीं होती।

शनि की अनिष्टता दूर करने के उपाय

- हनुमान जी की आराधना करें।
- नीलम या काले घोड़े की नाल का छल्ला मध्यमा अंगुली में शनिवार को सायंकाल पहनें।
- शनि संबंधी वस्तुओं का दान करें।
- शनिवार के दिन हनुमान जी के मंदिर में चमेली के तेल का दीपक जलाएं।
- चाँदी का चौकोर टुकड़ा सदैव अपने पास रखें।
- शनि के प्रभाव को कम करने के लिए भैरो जी की आराधना भी कर सकते हैं। बंदरों को गुड़ और चने खिलाएं।
- शनिवार का उपवास करना लाभदायक रहेगा।

इन उपायों में से आप किसी भी उपाय को अपनी सामर्थ्य तथा इच्छा के अनुसार करें तो शीघ्र ही शनि आपको सुखी एवं सम्पन्न व सबल बनायेंगे।

अतः शनिदेव बुरे ही नहीं अच्छे भी हैं। लोगों में फैली हुई भ्रान्तियां सही नहीं हैं कि शनि क्रूर ग्रह हैं। शनि को दण्डनायक मानकर इनकी बुराइयों को नकार दें तथा अच्छाइयों को स्वीकार करें, तो अवश्य ही आपके जीवन में शुभ परिवर्तन आयेगा।

अब ज्योतिषियों ने गणना की तो पाया कि शनैश्चर कृत्तिका के अंत में जा पहुंचे हैं। अतः उन्होंने महाराज दशरथ को सूचित किया—"राजन्! इस समय शनि रोहिणी का भेदन करके आगे बढ़ेंगे, यह उग्र शाकट नामक योग है जो सभी के लिए भयंकर है, इससे भयानक दुर्भिक्ष फैलेगा।"

यह सुनकर राजा दशरथ ने मंत्रिपरिषद् की बैठक की, उन्होंने महर्षि वशिष्ठ से पूछा—"इस संकट को रोकने के लिए क्या उपाय किया जाये?"

वशिष्ठ जी ने उत्तर दिया—"राजन्! यह रोहिणी प्रजापति ब्रह्माजी का नक्षत्र है, इसका भेद हो जाने पर प्रजा कैसे रह संकती है? ब्रह्मा और इंद्र आदि के लिए भी यह योग असाध्य है।" महर्षि वशिष्ठ जी की बात सुनकर दशरथ असमंजस की स्थिति में पहुंच गये। अंत में, उन्होंने मन में साहस किया तथा दिव्य धनुष लेकर रथ में आरूढ़ हो वे अत्यंत वेग से नक्षत्रमंडल में पहुंच गये, रोहिणी-पृष्ठ सूर्य से सवा लाख योजन ऊपर है। वहां पहुंचकर दशरथ ने धनुष को खींचा और उस पर संहारास्त्र का संधान कर दिया।

वह अस्त्र अति भयंकर था। उसे देखकर शनि भयभीत हो गये फिर उन्होंने हँसते हुए महाराज दशरथ से कहा—"राजन्! आपका महान् पुरुषार्थ शत्रु को भय पहुंचाने वाला है, मेरी दृष्टि में आकर देवता, असुर, मनुष्य सब-के-सब भस्म हो जाते हैं लेकिन आप बच गये। अतः राजन्! आपके तेज, पौरुष और वीरता से मैं प्रसन्न हूं। आप वर मांगिये, आप जो कुछ मांगेंगे, मैं अवश्य दूंगा।"

तब दशरथ ने कहा—"शनिदेव! जब तक नदियां और समुद्र हैं, जब तक सूर्य और चंद्रमा सहित पृथ्वी स्थित है—तब तक आप रोहिणी का भेदन करके आगे न बढ़ें, साथ ही कभी दुर्भिक्ष न करें।"

शनि ने वरदान देते हुए कहा—"एवमस्तु।"

दो वर पाकर महाराज दशरथ बड़े ही प्रसन्न हुए। अत्यधिक प्रसन्नता के कारण उनके शरीर में रोमांच हो आया। उन्होंने रथ के ऊपर ही धनुष डाल दिया। फिर रथ से नीचे उतरकर वे शनिदेव की स्तुति करने लगे।

महाराज दशरथ के स्तुति करने पर शनि ने कहा—"हे राजेन्द्र! आपकी स्तुति से मैं प्रसन्न हूं आप वर मांगिये, मैं अवश्य दूंगा।"

तब दशरथ ने हाथ जोड़कर कहा—"हे सूर्यनंदन! आज से आप किसी भी प्राणी को पीड़ा न दें।"

शनि बोले—"राजन्! मृत्युस्थान, जन्मस्थान या चतुर्थ स्थान में मैं रहूं तो उसे मृत्यु का कष्ट दे सकता हूं, लेकिन जो श्रद्धा से युक्त, पवित्र और एकाग्रचित्त होकर मेरी लोहमयी प्रतिमा का शमी-पत्रों से पूजन करके तिलमिश्रित उड़द-भात, लोहा, काली गौ या काला वृषभ ब्राह्मण को दान करता है तथा विशेषतः मेरे दिन को मेरे स्तोत्र से मेरी पूजा करता है, पूजन के पश्चात् भी हाथ जोड़कर मेरे स्तोत्र का जप करता है, उसे मैं कभी पीड़ा नहीं दूंगा। गोचर में, जन्मलग्न में, दशाओं तथा अंतर्दशाओं में ग्रह-पीड़ा का निवारण करके मैं सदा उसकी रक्षा करूंगा। इसी विधान से सारा संसार पीड़ा से मुक्त हो सकता है।"

शनिदेव से तीनों वरदान पाकर राजा दशरथ ने स्वयं को धन्य माना। फिर शनैश्चर को नमस्कार करके और उनकी आज्ञा लेकर रथ पर सवार हो, वे अयोध्या लौट गये। यही स्तोत्र आगे के पृष्ठों में प्रस्तुत है।

❑❑❑



शनि स्तोत्रम्

अस्य श्री शनैश्चरस्तोत्रस्य दशरथ ऋषिः शनैश्चरो देवता, त्रिष्टुपछन्दः शनैश्चरप्रीत्यर्थे जपेविनियोगः।

दशरथ उवाच

कोणाऽन्तको रौद्रयमोऽथवभ्रुः, कृष्णः शनिः पिंगलमन्दसौरिः।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीड़ा, तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥

दशरथ बोले—कोण, अंतक, रौद्रयम, वभ्रु, कृष्ण, शनि, पिंगल, मंदसौरि—इन नामों का नित्य स्मरण करने से जो पीड़ा का नाश करता है, उस शनिदेव को नमस्कार है।

सुरासुराः किम्पुरुषोरगेन्द्रा, गन्धर्वविद्याधर पन्नगाश्च।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन, तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥

देवता, असुर, किन्नर, सर्पराज, गंधर्व, विद्याधर, पन्नग—ये सभी शनि के विपरीत होने पर पीड़ित होते हैं, ऐसे शनि को नमस्कार है।

नरा नरेन्द्राः पाशवो मृगेन्द्रा, वन्याश्च ये कीट पतंगभृंगाः।
पीड्यन्ति सर्वे विषम स्थितेन, तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥

राजा, मनुष्य, सिंह, पशु और भी जो वनचर हैं, इनके अतिरिक्त कीड़े, पतंगे, भौंरे आदि सभी शनि के विपरीत होने पर पीड़ित होते हैं। ऐसे शनिदेव को नमस्कार है।

देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र, सेनानिवेशाः पुरपत्रनानि।
पीड्यन्ति सर्वे विषमास्थितेन, तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥

देश, दुर्ग, वन, सेनाएं, नगर, महानगर भी शनि के विपरीत होने पर पी न होते हैं, ऐसे शनिदेव को नमस्कार है।

तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानै, र्लोहेन नीलाम्बर दानतो वा।
प्रीणाति मन्त्रैर्निजवासरे च, तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥

तिल, जौ, उड़द, गुड़, अन्न, लोहा, नील वस्त्र के दान और शनिवार के दिन अपने स्तोत्र के पाठ से जो प्रसन्न होता है, उस शनि को नमस्कार है।

प्रयागकुले यमुनातटे वा, सरस्वती पुण्य जले गुहाय।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपिसूक्ष्म, तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥

प्रयाग में यमुना-तट पर सरस्वती के पवित्र जल में या गुफा में जो योगियों के ध्यान में गया हुआ सूक्ष्मरूपधारी शनि है, उसको नमस्कार है।

अन्यप्रदेशात् स्वगृहं प्रविष्ट, स्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात्।
गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति, तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥

दूसरे स्थान से यात्रा करके शनिवार के दिन अपने घर में जो प्रवेश करता है वह सुखी होता है और जो अपने घर से बाहर जाता है वह शनि के प्रभाव से पुनः लौटकर नहीं आता, ऐसे शनिदेव को नमस्कार है।

स्त्रष्टा स्वयमूर्भुवनत्रयस्य, त्राता हरीतो हरेत पिनाकी।
एकास्त्रिधा ऋग्यजुः साममूर्ति, तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥

यह शनि स्वयंभू हैं, तीनों लोकों के सृष्टिकर्त्ता और रक्षक हैं, विनाशक हैं तथा धनुषधारी हैं। एक होने पर भी ऋग, यजु तथा साममूर्ति हैं, ऐसे सूर्यसुत को नमस्कार है।

शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रयाते, नित्यं सपुत्रैः पशुबान्धवैश्च।
पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः, प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्ते॥

शनि के इन आठ श्लोकों को जो अपने पुत्र, पत्नी, पशु और बांधवों के साथ प्रतिदिन पढ़ता है, वह इस लोक में सुख भोग प्राप्त कर अंत में मोक्ष प्राप्त करता है।

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः॥
एतानि दश नामानि पातरुत्थाय यः पठेत्।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कादाचिद् भविष्यति॥

कोणस्थ, पिंगल, बभ्रु, कृष्ण, रौद्र, अंतक, यम, सौरि, शनैश्चर, यम इस प्रकार पिप्पलाद ने स्तुति की। इन 10 नामों को प्रातःकाल उठकर जो पढ़ता है उसको शनि ग्रह का कष्ट कभी भी नहीं होता।

स्तोत्रम्

श्री गणेशाय नमः।

ॐ अस्य श्री शनि स्तोत्रमन्त्रस्य कश्यप ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सौरिदेवता, शं बीजम्, निःशक्तिः, कृष्णवर्णेति कीलकं धर्मार्थं काममोक्षात्मक चतुर्विधपुरुषार्थं विद्धयर्थे जपे विनियोगः।

करादिन्यास

शनैश्चराय अंगुष्ठाभ्यां नमः।
मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः।
अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः।
कृष्णांगाय अनामिकायभ्यां नमः।
शुष्कोदराय कनिष्ठकाभ्यां नमः।
छायात्मजाय करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

शनैश्चराय हृदयाय नमः।
मन्द गतये शिरसे स्वाहा।
अधोक्षजाय शिखायै वषट्।
कृष्णांगाय कवचाय हुम्।
शुष्कोदराय नेत्रत्रयाय वौषट्।
छायात्मजाय अस्त्राय फट्।
ॐ भुर्भुवः स्वः इति दिग्बन्धनम्।

ध्यानम्

नीलद्युतिं शूलधरं किरीटिन, गृध्रंस्थितं त्रासकरं धनुर्धरम्।
चतुर्भुजं सूर्यसुतं प्रशान्त वन्दे सदाभीष्टकरं वरेण्यम्॥

कथा

प्रणम्य देवदेवेशं सर्वग्रहनिवारणम्।
शनैश्चर प्रसादार्थं चिन्तयामास पार्थिवः॥

सभी ग्रहों के कष्टों को दूर करने वाले, देवताओं के भी स्वामी गणेश को प्रणाम करके शनि देवता को प्रसन्न करने के लिए राजा सोचने लगे!

रघुवंशेषु विख्यातो राजा दशरथः पुरा।
चक्रवर्ती स विज्ञेयः सपतद्वीपाधिपोऽभवेत्॥

प्राचीनकाल में रघुवंश में सुप्रसिद्ध सातों द्वीपों के स्वामी दशरथ नाम के एक चक्रवर्ती राजा हुए।

कृत्तिकान्ते शनिं ज्ञात्वा दैवज्ञैर्ज्ञापितो हि सः।
रोहिणीं भेदयित्वा तु शनिर्यास्यति साम्प्रतम्॥

एक बार ज्योतिषियों ने कृत्तिका के अंतिम चरण में शनि को देखकर राजा से कहा कि अब यह शनि रोहिणी का भेदन कर जाएगा।

शकटं भेद्यमित्युक्तं सुरासुरभयंकरम्।
द्वादशाब्दं तु दुर्भिक्षं भविष्यति सुदारुणम्॥

इसको रोहिणी शकटभेदन कहते हैं। यह देव-दानवों के लिए भयप्रद होता है और इसके बाद बारह वर्ष तक भयंकर अकाल पड़ता है।

एतच्छुत्वा तु तद्वाक्यं मन्त्रिभिः सह पार्थिवः।
व्याकुलं च जगद्दृष्टवा पौरजानपदादिकम्॥

ज्योतिषियों की इस बात को मंत्रियों के साथ राजा सुनकर नगर और जनपद-वासियों को व्याकुल देखकर—

ब्रुवन्ति सर्वलोकाश्च भयमेतत् समागतम्।
देशाश्च नगर ग्रामा भयभीतः समागताः॥

उसी समय नगर और ग्रामवासी भी—सभी लोग भयभीत होकर कहने लगे—

पप्रच्छ प्रयतो राजा वसिष्ठ प्रमुखान् द्विजान्।
समाधानं किमत्रास्ति ब्रूहि मे द्विजसत्तमः॥

प्रजावर्ग की व्याकुलता को देखकर राजा दशरथ ने वशिष्ठ आदि ब्राह्मणों से पूछा—'हे ब्राह्मणों! इसका क्या समाधान है, मुझे उसका उपदेश दीजिए।'

वशिष्ठ उवाच

प्राजापत्ये तु नक्षत्रे तस्मिन् भिन्ने कुतः प्रजाः।
अयं योगोह्यसाध्यश्च ब्रह्मशक्रादिभिः सुरैः॥

इस प्रजापति के नक्षत्र (रोहिणी) में यदि शनि का शकट-भेदन करता है तो प्रजाओं का शुभ कैसे हो सकता है?

यह योग तो ब्रह्मा, इंद्रादिक देवताओं के द्वारा भी असाध्य है।

तदा सञ्चिन्त्य मनसा साहस परम ययौ।
समाधाय धनुर्दिव्यं दिव्यायुधसमन्वितम्॥

तब कुछ विचार कर राजा परम साहस को प्राप्त कर दिव्य धनुष तथा दिव्य आयुधों से युक्त होकर–

रथमारुह्य वेगेन गतो नक्षत्र मण्डलम्।
सपादयोजनं लक्षं सूर्यस्योपरि संस्थिताम्॥

रथ पर चढ़कर सूर्य से ऊपर सवा लाख योजन पर स्थित नक्षत्र मंडल में अत्यंत वेग से गए।

रोहिणी पृष्ठामासाद्य स्थितो राजा महाबलः।
रथे तु काञ्चने दिव्ये मणिरत्नविभूषिते॥

मणि तथा रत्नों से सुशोभित सोने के रथ में बैठकर महाबली वह राजा रोहिणी पृष्ठ को पाकर स्थित–

हंसवर्णहयैर्युक्ते महाकेतु समुच्छिते।
दीप्यमानो महारत्नैः किरीट मुकुटोज्ज्वलैः॥

सफेद घोड़ों से युक्त ऊंची भावनाओं से सुशोभित मुकुट आदि में जड़े गए बहुमूल्य रत्नों में प्रकाशमान वह राजा उस समय–

व्यराजत तदाऽऽकाशे द्वितीय इव भास्करः।
आकर्ण चापमाकृष्य सह शस्त्रं नियोजितम्॥
कृत्तिं कान्तं शनिर्ज्ञात्वा प्राविशतां च रोहिणीम्।
दृष्ट्वा दशरथं चाग्रे तस्थौ तु भृकुटि मुखः॥
संहारास्त्रं शनिर्दृष्ट्वा सुरासुरनिषूदनम्।
प्रहस्य च भयात् सौरिदिं वचनमब्रवीत्॥

आकाश में दूसरे सूर्य के समान चमक रहा था। शनि को कृत्तिका नक्षत्र के बाद रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश का इच्छुक देखकर दशरथ बाणयुक्त धनुष को कान तक खींचकर भौंहों को कुटिल करके सामने खड़ा हो गया। देव-दानवों के विनाशक संहारास्त्र को देखकर शनि डरकर, पर कुछ हँसकर उनसे कहने लगा–

शनि उवाच

पौरुषं तव राजेन्द्र! मया दृष्टं न कस्यचित्।
देवासुर मनुष्याश्च सिद्ध विद्या धरोरगाः॥

मयाविलोकिताः सर्वे भयं उच्छन्ति तत्क्षणात्।
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र! तपसा पौरुषेण च।
वरं ब्रूहि प्रदास्यामि स्वेच्छया रघुनन्दनः॥

शनि ने कहा—हे राजेन्द्र! मैंने तुम्हारे जैसा पुरुषार्थ अन्य किसी में नहीं देखा। क्योंकि देवता, असुर, मनुष्य सिद्ध-विद्याधर तथा सर्प जाति प्राणी मेरे देखने मात्र से ही भयभीत हो जाते हैं। हे राजेन्द्र! मैं तुम्हारी तपस्या और पुरुषार्थ से प्रसन्न हूं। हे रघुनंदन! अपनी इच्छा से वर मांगो, मैं तुम्हें दूंगा।

दशरथ उवाच

प्रसन्नो यदि मे सोरे! एकश्चास्तु वरः परः।
राहिणीं भेदयित्वा तु न गन्तव्यं कदाचन॥
सरितः सागरा यावद् यावच्चन्द्रार्कमेदिनी।
याचितं तु महासौरे नान्यमिच्छाम्यहं तरम्॥
एवमस्तु शनि-प्रोक्तं वर लब्ध्वा तु शाश्वतम्।
प्राप्यैवं तु वरं राजा कृतकृत्योऽभवत्तदा॥
पुनरेवाऽब्रवीत्तुष्टो वरं वरम सुब्रत्।

हे शनिदेव! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मैं केवल एक ही वर मांगता हूं। आप जब तक नदी, समुद्र, चंद्रमा और सूर्य तथा पृथ्वी पर रहें, जब तक रोहिणी शकट का भेदन करने न जाएं। यही मेरा वर है। मैं और कुछ नहीं चाहता हूं। शनि ने 'एवमस्तु' कहा। इस प्रकार शनि से वर पाकर राजा का मनोरथ सफल हुआ। शनि ने उनसे पुनः प्रसन्न होकर वर मांगने के लिए कहा—

प्रार्थयामास हृष्टात्मा वरमन्यं शनिं तदा।
न भेतव्यं न भेतव्यं त्वया भास्करनन्दनं॥
द्वादशाब्दं तु दुर्भिक्षं न कर्त्तव्यं कदाचन।
कीर्तिरषा मदीया च त्रैलोक्ये तु भविष्यति॥
एवं वरं तु सम्प्राप्य हृष्टरोमा सपार्थिवः।
रथोपरि धनुः स्थाप्य भूत्वा चैव कृताञ्जलिः॥
ध्यात्वा सरस्वती देवीं गणनाथं विनायकम्।
राजा दशरथः स्तोत्रं सौरेरिदमथाऽकरोत्॥

प्रसन्न होकर राजा ने शनि से दूसरा वर मांगा, तब शनि ने कहा—हे सूर्यवंशियों के पुत्र! तुम निर्भय रहो, निर्भय रहो। बारह वर्षों तक तुम्हारे राज्य में अकाल नहीं होगा। यह यश तीनों लोकों में होगा। ऐसा वर पाकर प्रसन्न होकर राजा ने अपना धनुष-बाण रथ पर रखकर हाथ जोड़कर सरस्वती, गणेश का ध्यान करके शनि की इस प्रकार स्तुति की।

दशरथ उवाच

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च।
नमः सुरुपगात्राय स्थूलरोम्णे नमो नमः॥
नमो नित्यं क्षुधार्ताय ह्यतृप्ताय च वै नमः।
नमः कालाग्निरूपाय कृष्णांगाय च वै नमः॥

दशरथ ने कहा—कृष्ण एवं नीलवर्ण वाले तथा शिवरूपधारी, तुमको नमस्कार है। सुरूप शरीर वाले, स्थूल रोमों वाले तुम्हें नमस्कार है। सदा भूखे तथा अतृप्त रहने वाले तुमको नमस्कार है।

नमो दीर्घाय शुष्काय काल दृष्टे नमो नमः।
नमोऽस्तु कीटरक्षाय दुर्भिक्षाय च वै नमः॥
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय कपालिने।
नमो मन्दगते तुभ्यं भास्करे भयदायिने॥
अधोदृष्टेनमस्तेऽस्तु संवर्तकमयाय च।
तपसा दग्ध देहाय नित्यं योगरताय च॥
ज्ञान चक्षुर्नमस्तेऽस्तु कश्यपात्मजसूनवे।
तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्॥

दीर्घ, शुष्क, कालदृष्टि, कीटरक्षक, दुर्भिक्षकारक, घोर, रौद्र, भीषण खप्परधारी मन्दगति, सूर्य-पुत्र प्राणियों को भयकारक तथा अधोदृष्टि वाले तुमको नमस्कार है। प्रलयकारक, तपस्या से जिसने शरीर को जला दिया है, सदा तपस्या में लगे रहने वाले और कश्यप-पुत्र सूर्य, उसके पुत्र तुम्हें नमस्कार है। तुम प्रसन्न होने पर राज्य देते हो और रुष्ट हो जाने पर सभी सम्पत्तियों का विनाश कर देते हो।

सूर्य पुत्रः! नमस्तेऽस्तु सर्वभक्षाय वै नमः।
देवासुर मनुष्याश्च पशु पक्षि सरीसृपाः॥
त्वया विलोकिताः सर्वेदैन्यमाशु ब्रजन्ति ते।
ब्रह्मा शक्रो हरिश्चैव ऋषयः सप्ततारकः॥

राज्यभ्रष्टाः पतान्त्येते त्वचा दृष्ट्याऽवलोकिताः।
देशाश्च नगरग्रामा द्वीपाश्चैव तथा द्रुमाः।
त्वया विलोकिताः सर्वे विनश्यन्ति समूलतः।
प्रसादं कुरु हे सौरे ! वरदो भव भास्करे॥

सभी का विनाश करने वाले हे सूर्य-पुत्र! तुम्हें नमस्कार है। देवता, असुर, मनुष्य, पशु-पक्षी, सर्पादि प्राणी तुम्हारी दृष्टि मात्र से ही दुःखी हो जाते हैं। ब्रह्मा, इंद्र, विष्णु, सप्तर्षि—इन पर भी तुम्हारी जब दृष्टि जाती है तो ये भी अपने मदों से च्युत हो जाते हैं। देश, नगर, गांव, द्वीप तथा वृक्षादि भी तुम्हारी दृष्टि पड़ने पर समूल नष्ट हो जाते हैं। अतः हे सूर्य पुत्र! हमारे ऊपर प्रसन्न होकर शुभ वर दो।

एवं स्तुतस्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबलः।
अब्रवीच्च शनिर्वाक्यं हृष्टरोमा च पार्थिव॥
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र! स्तोत्रेणानेन सुव्रत।
एवं वरं प्रदास्यामि य ते मनसि वर्तते॥

इस प्रकार दशरथ के द्वारा स्तुति किए जाने पर महाबलवान् ग्रहों के राजा शनि ने प्रसन्न होकर कहा—हे राजेन्द्र! मैं तुम्हारे इस स्तोत्र से प्रसन्न हूं, अब मैं तुमको ऐसा वर दूंगा जो तुम्हारे मन में है।

प्रसन्नो यदि मे सौरे! बरं देहि ममेप्सितम्।
अद्य प्रभृति पिंगाक्ष! पीड़ा देयान कस्यचित्।
प्रसादं कुरु मे सौरे! वरोऽयं महोसितः।

दशरथ ने कहा—हे शनिदेव! तुम यदि मुझ पर प्रसन्न हो तो मेरा इच्छित वर मुझे दो। तुम आज से किसी को कष्ट मत देना। हे शनिदेव! यही मेरा प्रिय वर है।

शनि उवाच

अदेयस्तु वरोऽस्माकं तुष्टोऽं च ददामि ते॥
त्वया प्रोक्तं च मे स्तोत्रं ये पठिष्यन्ति मारवाः।
देवासुर मनुष्याश्च सिद्धविद्याधरोरगा॥
न तेषां बाधते पीडा मत्कृता वै कदाचन्।
मृत्युस्थाने चतुर्थे वा जन्मव्ययद्वितीयगे॥
गोचरे जन्मकाले वा दशास्वन्तर्दशासु च।
यः पठेद् द्वित्रिसंध्यं वा शुचिर्भूत्वा समाहितः॥

न तस्य जायते पीडा कृपा वै मम निश्चिलम्।

शनि ने कहा—यद्यपि ऐसा वर मैं किसी को नहीं देता हूं किंतु प्रसन्न होने के कारण तुमको दे रहा हूं। तुम्हारे द्वारा कहे गए इस स्तोत्र को जो मनुष्य, देवता, असुर, सिद्ध, विद्याधर, सर्पादि पढ़ेंगे उन्हें शनि-बाधा नहीं होगी। जिनके जन्मकाल में, गोचर में, महादशा में या अंतर्दशा में अथवा लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, अष्टम, द्वादश स्थान में शनि हो, वे पवित्र होकर यदि प्रातः मध्याह्न और सायंकाल इस स्तोत्र को ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे। उनको निश्चित ही मेरी पीड़ा नहीं होगी।

प्रतिभां लोहजां कृत्वा मम राजन् चतुर्भुजाम्॥
वरदां च धनुः शूलबाणाङ्कतरां शुभाम्।
अयुतमेकजप्यं च तद्दशांशेन होमतः॥
कृष्णैस्तिलैः शमीपत्रैर्घृतवाक्तैर्नील पङ्कजैः।
पायसं शर्करायुक्तं घृतमिश्रं च होमयेत्॥
ब्राह्मणान् भोजयेत् तत्र स्वशक्त्या घृतपायसैः।
तैले वा तिलराशौ वा प्रत्यक्षं वा यथाविधिः॥

हे राजन्! वर देने वाली एक लोहे की प्रतिमा को बनाएं, उसके चार हाथ हों और उन्हें धनुष, शूल, बाण, धारण किए हों। तदनंतर 10,000 जप करें, उसका दशांश काले तिल, शमीपत्र, घी, नीलकमल, खीर, चीनी मिलाकर होम करें। उसके बाद घी और दूध देने वाले पदार्थों से ब्राह्मणों को भोजन कराएं। उक्त शनि की लोह-मूर्ति को तिल के तेल में या तिलों के ढेर में रखकर विधिपूर्वक—

पूजनं चैव मन्त्रेण कुङ्कमाद्यं च लेपयेत्।
नील्या वा कृष्ण तुलसी शमीपत्रादिभिः शुभैः॥
दद्यान्मे प्रीतये यस्तु कृष्ण वस्त्रादिकं शुभम्।
धेन्वां वृषभं चापि सवत्सां च पयस्विनीम्॥
एवं विशेष पूजा च मद्द्वारे कुरुते नृप।
मन्त्रोद्धारविशेषण स्तोत्रेणानेने पूजयेत्॥
पूजयित्वा जपेत् स्तोत्रं भूत्वा चैव कृतांजलिः।
तस्य पीड़ां च चैवाहं करिष्यामि कदाचनं॥
रक्षामि सततं तस्य पीड़ा चान्यग्रहस्य च।
अनेनैव प्रकारेण पीड़ामुक्तं जगद् भवेत्॥

मंत्र के द्वारा पूजन करें, कुंकुम आदि को चढ़ाएं। नीली, काली तुलसी, शमीपत्र आदि को मेरी प्रसन्नता के लिए अर्पित करें। काला वस्त्र, बैल, दूध देने वाली गाय, इनको दान में दें। इस प्रकार हे राजन्! मेरे द्वार पर जो विशेष पूजा मंत्रोच्चारपूर्वक इस स्तोत्र से करता है और पूजा करके इस स्तोत्र का हाथ जोड़कर पाठ करता है, उसको किसी प्रकार की भी मैं पीड़ा नहीं होने दूंगा। अपितु मैं अन्य ग्रहों की पीड़ा से भी उसकी रक्षा करता हूं। इस प्रकार करने से सम्पूर्ण जगत पीड़ा से मुक्त हो जाता है।

वरद्वयं तु सम्प्राप्य राजा दशरथस्थदा।
मत्वा कृतार्थ मात्मानं नमस्कृत्य शनैश्चरम्॥
शनैश्चराभ्यनुज्ञातो रथमारुहय वीर्यवान्।
स्वस्थानं च गतौ राजा प्राप्त कामोऽभवत्त।
सर्वसिद्धिमवाप्याय विजयी सर्वदाऽभवतदा॥
कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्राऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलाश्रय संस्थित॥
एतादि शनिनामानि जपेदश्वत्थ सन्निधौ।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाचित् भविष्यति॥

शनि से दो वर प्राप्त कर राजा दशरथ अपने को धन्य समझकर और शनि को प्रणाम कर उससे अनुमति पाकर रथ पर चढ़कर अपने राज्य में आकर मनोरथ पूर्ण हुए। इसी प्रकार की सिद्धि को प्रापत कर सदा विजयी हुए। 1. कोणस्थ, 2. पिंगल, 3. बभ्रुः, 4. कृष्ण, 5. रौद्रान्तक, 6. यम, 7. सौरि, 8. शनैश्चर, 9. मन्द, 10. पिप्लाश्रय संस्थित—इन दसों नामों को पीपल वृक्ष के समीप जो जपेगा उसको शनि का कष्ट कभी नहीं होगा।

अल्पमृत्यु विनाशाय दुःखस्योद्धरणाय च।
स्नातव्यं तिलतैलेन धान्यमाषादिकं तथा।
लोहं देयं च विप्राय सुवर्णेन समन्वितम्॥
शनिस्तोत्रं पठेत् यस्तु शृणुयाद वा समाहितः।
विजयं चार्थकामौ च सुखमारोग्यमाप्नुयात्॥

अपमृत्यु के नाश के लिए और दुःखों को दूर करने के लिए तिल, तेल से स्नान करें। धान्य, उड़द, लोहा, सुवर्ण का दान करें। इस शनि स्तोत्र का स्वयं पाठ करें या ब्राह्मण द्वारा सुनें, ऐसा करने से सर्वत्र विजय, अर्थ, काम, आरोग्य, सुख की प्राप्ति होती है।

❑❑❑

10

शनि मंत्र

अब क्रूर एवं पाप ग्रह शनि के कुछ शीघ्र प्रभावी मंत्र प्रस्तुत हैं–

तंत्रोक्त मंत्र

ॐ शं शनैश्चराय नमः।

वैदिक मंत्र

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।

शनि गायत्री

ॐ भगभवाय विद्म हे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शौरिः प्रचोदयात्।

शनि के अन्य मंत्र

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
ॐ खां खीं खौं सः शनैश्चराय नमः।
ॐ नमो भगवते शनैश्चराय सूर्यपुत्राय नमः।
ॐ नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
ॐ नमः दाया मार्तण्ड सम्भूतम् नमामि श्री शनैश्चरम्।

शनि प्रकोप होने पर शनि के निम्न दस नामों का उच्चारण करने से शांति मिलती हैं–

1. कोणस्थ	2. पिंगलो	3. बभ्रु	4. कृष्ण
5. रोद्रांतको	6. यम	7. सौरि	8. शनैश्चर
9. मंद	10. पिप्पला		

❑❑❑

11

विशिष्ट शनि-पूजन

पूजन पद्धतियों में इसका विशिष्ट स्थान है। इसे सुयोग्य आचार्य द्वारा सम्पन्न कराएं। स्वयं करें तो पूजनोपरांत दक्षिणा आदि ब्राह्मण को दान दें।

यह पूजन मंत्र के जप से पूर्व करें। मंत्र अपनी सुविधानुसार चयन करें।



पूजन-स्थल की शुद्धि के पश्चात् जल पूरित तांबे का कलश बालूमिश्रित यवान्न (जौ) के ऊपर संस्थापित करें। कलश में पांच आम्र पल्लव एवं उस

पर लाल वस्त्र से आवर्तित नारियल रखें। काष्ठपट्टिका का एक काला कपड़ा बिछाकर शनि-प्रतिमा को स्थापित करें।

दक्षिण एवं वाम भाग में क्रमशः देशी घी तथा सरसों के तेल का दीपक प्रज्वलित करें।

नवग्रह एवं गौरी-गणपति स्थापन करें। तदुपरांत पीपल-वृक्ष के नीचे दीपक जलाएं, श्यामा गाय का पूजन करें। कुत्ते के लिए चार लड्डू एवं बंदरों के लिए गुड़-चना अलग रखें या खिलाएं।

किसी शुद्ध ब्राह्मण को तिलक लगाएं, हाथ में मौली (कलावा) बांधें, विधिवत् सम्मान—दक्षिणादि प्रदान करें। ब्राह्मण देव पूजनकर्त्ता को तिलक लगाकर कलावा हाथ में बांध दें। पीले वस्त्र एवं पीला यज्ञोपवीत धारण कर पूर्वाभिमुख हो गणपति स्मरण एवं संकल्प आदि करें।

इसके पश्चात् निम्नांकित मंत्र का पाठ करें—

***ततः त्रिराचम्य—*ॐ केशवाय नमः। ॐ माधवाय नम। ॐ नारायणाय नमः** *(हस्तौ प्रक्षाल्य)*। **ॐ हृषीकेशाय नमः ततः प्राणानायम्य-शरीरमार्जनम्।**

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि ब्रा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु इत्यात्मानं पूजा-सामग्री च सम्प्रोक्ष्य। यजमानस्तके स्वस्ति तिलकं कुर्यात्। ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु।

❑❑❑



शनि-साधना

शनि-साधना में श्रद्धा-कर्मठता, शुद्ध सांगोपांग प्रक्रिया एवं प्रसन्न उच्चारण का विशेष महत्त्व है, अतः मात्र पुस्तकों से ज्ञान-प्राप्ति की अपेक्षा सद्गुरु की शरण ग्रहण करना भी अपेक्षित है। यहां यह स्मरणीय है कि प्रत्येक ग्रह का अपना दिन सुनिश्चित है।

वस्तुतः शनि ग्रह का अपना दिन शनैश्चर या शनिवार है, इसलिए यदि शनि की साधना शनिवार को की जाए तो साधना का सर्वोत्तम फल प्राप्त होता है।

शनि-साधना में श्याम वर्ण अथवा गहरे वर्ण की सामग्री प्रयुक्त होती है, जो निम्न है—

लोहा, उड़द, कड़वा तेल, काला वस्त्र, काले अथवा पीले रंग के पुष्प, श्यामली गाय, काले कंबल का आसन एवं नीलम रत्न हैं। कस्तूरी, कुलथी एवं स्वर्ण का प्रयोग भी अनुमोदित है। मंत्र जप हेतु शमी या रुद्राक्ष की माला उत्तम है।

शनिवार को उपवास रखकर मध्याह्न 12 बजे से 3 बजे के मध्य नमक एवं मसाले से रहित खिचड़ी का भोजन करना अपेक्षित है। सूर्यास्त के पश्चात् अन्न-जल ग्रहण करना वर्जित है।

रविवार को सूर्यदेव को अर्घ्य प्रदान करके व्रतपारण करना चाहिए।

अपनी सुविधानुसार पीपल-वृक्ष के नीचे स्थान-शुद्धि करने के उपरांत उसकी जड़ के पास शनि की मूर्ति, यंत्र अथवा लोहे पत्र पर उत्कीर्ण शनि

मंत्र काले वस्त्रासन पर प्रतिष्ठित करें। काली वस्तुओं से विधिवत् पूजन करें।

कड़वे तेल के दीपक से आरती उतारें। तत्पश्चात् पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर *(मध्य में पीपल हो)* मंत्र साधना प्रारंभ करें।

संकल्पित संख्या में मंत्र जप के पश्चात् पीपल को प्रणाम करें। शेष पूजन सामग्री पीपल की जड़ पर अर्पित करनी चाहिए। मंत्रानुष्ठान शनिवार को ही पूर्ण होना चाहिए, इसके अनुरूप मंत्र संख्या सुनिश्चित करें। पूर्ण होने पर काली वस्तुओं का दान उचित व्यक्ति को करें।

तत्पश्चात् उसी मंत्र से दशांश अथवा 108 बार हवन करें। साधनाकाल में देह-शुद्धि, चित्त-शुद्धि, प्रयोग-शुद्धि अत्यंत आवश्यक हैं।

शनि शांति उपासना

शनि निसर्गतः भयावह, क्रूर अथवा पापवृत्तिपूरित ग्रह है। मानव-जीवन पर इसका शुभ या अशुभ प्रभाव अति शीघ्र पड़ता है।

कृपालु हो जाने पर यह व्यक्ति को यश, धन और वैभव सभी कुछ प्रदान करता है तथा रुष्ट होने पर राजा को भी रास्ते का भिखारी बना देता है। इसे शांत, संतुष्ट, प्रसन्न एवं अनुकूल करने के निमित्त तंत्र, मंत्र का आश्रय लिया जाता है।

हनुमान उपासना, सूर्य उपासना एवं शिव उपासना द्वारा शनि को प्रभावित व प्रसन्न किया जाता है।

हनुमान उपासना तो विशेष प्रभावी है। कारण हनुमान जी ने ही शनि को रावण की कैद से मुक्त किया था।

शनि के पिता सूर्य हैं, इसलिए सूर्य उपासना भी शनि-शांति में फलित होती है।

शनि के गुरु शिव हैं, अतः शिव की पूजा-उपासना विशेष फलदायी है।

❑❑❑



शनि मृत संजीवन जप

जपकर्ता आचमनं प्राणायामंच कृत्वा श्रीमन्महा० इत्यारभ्य सर्व कार्याथसिद्धये इत्यंत पठित्वा संकल्प कुर्यात्॥ विष्णुर्विष्णुः। श्रीमद भगवतो० एवं गुण विशेषेण विशिष्टयां शुभ पुण्य तिथौ मम (यजमानस्या वा) आत्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त पुण्य फव प्राप्तिपूर्वक शरीरे सज्जातानां तापाद्य खिल महारोगाणामुशमानार्थ सर्वारिष्टशान्त्यर्थंच षट्प्रणन संयुक्तस्य श्री महामृत्युंजय (मृतसंजीवन) गन्त्रस्ये अमुक संख्याकं जप (ब्राह्मण द्वारा वा) महं करिष्ये॥

पुनर्जलं गृहीत्वा

संकल्प करें–अस्य श्री मृत्युंजय मन्त्रस्य वशिष्ट ऋषिः। श्री मृत्युंजयरुद्रो देवता। अनुष्टुप्छन्दः हौं बीजम्। जूं शक्तिः। सः कीलकम्। श्री पत्युंजय प्रीतये मम (यज्ञभानस्य वा) अभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः॥

ऋष्यादिन्यास

वशिष्ठ ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप्छन्से नमो मुखे।
श्रीमृत्युंजय रुद्रदेवतायै नमो हृदये।
हौं बीजाय नमो गुह्ये।
जूं शलेय नमः पादयोः।
सः कीलकाय नमः सर्वांगेपु॥

करादिन्यास

ॐ त्रयम्बकम् अंगष्ठाभ्यां नमः।
ॐ जजा महे तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ सुगन्धि पुष्टिवर्धन मधयमाभ्यां नमः।
ॐ उर्वारुकमिव बन्धनातद् अमाभिकाभ्यां नमः।
ॐ मृत्यांर्मुक्षीय कनिष्टिकाभ्यां नमः।
ॐ मामृतात् करतरलकर पुष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

ॐ त्रयम्बकं हृदयाय नमः।
ॐ यजा महे शिरसे स्वाहा।
ॐ सुगन्धि पुष्टिवर्धन शिरवायै वषट्।
ॐ उर्नारुकमिव बन्धनात् कवचाय हुम्।
ॐ मृत्योर्मुक्षीय नेत्र त्रयाय लौषट्ट।
ॐ मामृतात् अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

चन्द्रोद्वाहसत मूर्धजं सुरपति पीयूषमात्रं
मध्द्ध स्तो गेन दधन्सुदिव्य ममलं हस्तास्य पंकेरुहम्।
सूयेन्द्वग्रि विलोचनं करतलै, पाशाक्ष सूत्रांकुशाम्भोर्जं।
बिम्रत मक्षयं पशुपति मृत्युंजय संस्मरे।
मानसोपचारैः सम्पूज्य म। लांच सम्पूज्य जपं कुर्यात्।

जप

ओ३म् हौं जूं सः ओउम् भुभूर्वः स्वः ओ३म् त्रयम्बकं ज्जामरे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनम् उव्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात्। आउनृ स्वः भुवः भूः ओ३म् सः जूं हौं ॐ

जपानन्तरं पूववन्नया सान्कृत्वा हस्ते जलं गृहीत्वा। अनेन अमुक

संख्या ककृतेन श्री महामृत्युंजय मन्त्र जप कर्मणा श्री इमहामृत्युंजय पीयताम्।

साधना विधि

कृष्ण पक्ष के शनिवार को प्रातः जब नभ में तारे खिले हों और आकाश में निर्मल चन्द्रमा हो, उठकर नित्यकर्म से निवृत हो निम्न स्तोत्र का श्रद्धापूर्वक पाठ करें, यह पाठ 21 शनिवार नियमपूर्वक करना है।

शनि मृत्युंजय स्तोत्र

नीलाद्रि शोभांचित दिव्य मूर्तिः
खड़गी त्रिदंडी शर चाप हस्तः
शर्म्भू महाकाल शनि
पुरारिर्जयत्य शेषा सुर नाश कारी॥
मेरुप्रष्ठे समासीनं सामरस्ये स्थितं शिवम्।
प्रणम्य शिरसा गौरी पृच्छतिस्म जगद्धितम्
पार्वत्युवाच भगवन! देवदेवेश! भक्तानुग्रहकारक!
अल्पमृत्युविनाशाय यत्वया पूर्व सूचितम्॥
तदेवत्वं महाबाहो! लोकानां हितकारकम्।
तव मूर्ति प्रभेदस्य! महाकालस्य साम्प्रातम्॥
शनेमृत्युञ्जयस्तोत्रं बूहि मे नेत्रजन्मनः।
अकाल मृत्युहरणमपमृत्यु निवारणम्॥
शनिमन्त्रप्रभेदा ये तैर्युक्तं यत्सतवं शुभम्।
प्रतिनाम चतुर्थ्यन्तं नमोऽन्तु मनुनायुतम्॥

श्रीश्वर उवाच

नित्ये प्रियतमे गौरि सर्वलोकहितेरते।
गुह्याद्गुह्यतमं दिव्यं सर्वलोकहितेरते॥
शनि मृत्युंज्यस्तोत्रं प्रवच्यामि तवाऽधुन।
सर्वमंगलमांगल्यं सर्वशत्रु विमर्दनम्॥

सर्वरोगप्रमनं सर्वापद्विनिवारणम्।
शरीरारोग्यकरणमायुर्वद्धिकरं नृणाम्॥
यदि भक्तासि मे गौरी गोपनीयं प्रयत्नतः।
गोपितं सर्वतन्त्रेषु तच्छृणुष्व महेश्वरी॥
ॐ अस्य श्रीमहाकालशनिमृत्युञ्जयस्तोत्रमन्त्रस्य।
पिप्पलादऋषिरनुष्टुप्छम्दो महाकालशनिर्देवता शां॥
बीजमायसी शक्ति कालपुरुषायेति कीलकं मम कालाय।
मृत्युनिवारणार्थे पाठे विनियोगः॥
ऋषिन्यासं करन्यासं देहन्यासं समाचरेत्।
महोग्रं मूर्च्छिन विन्यस्य मुखे वैवस्वतं न्यसेत्॥
हृदि न्यसेत्तमहाकालं गुह्ये कृशतनुं न्यसेत्।
जान्वोस्तूडुचरं न्यस्य पादयोस्तु शनैश्चरम्।
गले तु विन्यसेन्मन्दं बाह्योर्महाग्रहं न्यसेत्।
एवं न्यासविधिं कृत्वा पश्चात् कालात्मनः शनेः॥
न्यासं ध्यानं प्रवक्ष्यामि तनौ ध्यात्वा पठेश्वरः।
कल्पादियुगमेदांश्च कराङ्गन्यास्वरूपिणः॥
कालात्मनो न्यसेद गात्रे मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते।
मन्वन्तारिण सर्वांगि महाकालस्वरूपिणः॥
भावयेत्प्रांति प्रत्यङ्ग महाकालस्य ते नमः
भावयेत्प्रभवाधाब्दान् शीर्षेकालजिते नमः॥
नमस्ते नित्यसेव्याय विन्यदयने भ्रुवोः।
सौरये च नमस्तेतु गण्डयोर्विन्यसेत्॥
नमो वै दुर्निर्शच्याय चाश्विनं विन्यसेन्मुखे।
नमो नीलमयूखाय ग्रीवायां कार्तिकं न्यसेत्॥
मार्गशीर्ष न्यसेद्बहोर्महारौद्राय ते नमः।
उद्र्ध्वलोकनिवासाय पौषं तु हृदये न्यसेत्॥
नमः कालप्रबोधाय माघं वै चोदरेन्यसेत्।
मन्दगाय नमो मेढे न्यसेद्वै फाल्गुनं तथा॥
ॐ वोर्न्यसेच्चैत्रमासं नमः शिवोऋवाय च।
वैशाखं विन्यसेज्जान्वोनमः संवर्त्तकाय च॥

जंधयोभवियेज्जयेष्ठं भैरवाय नमस्तथा।
आषाढ़ं पाद्योश्चैव शनये च नमस्तथा॥
कृष्णपक्षं च क्रूराय नमः आपादमस्तके।
न्यसेदाशीर्ष पादान्ते शुक्लपक्षं ग्रहाय च॥
न्यसेन्मूलं पादयोश्च ग्रहाय शनये नमः।
नमः सर्वजिते चैव तोयं सर्वागुलौ न्यसेत्॥
न्यसेद्शुल्फद्वये विश्वं नमः शुष्कतराय च।
विष्णुयं भावयेज्जंधोभये शिष्टताभाय ते॥
जानुद्रये धनिष्ठां च न्यसेत् कृष्णारूचे नमः।
पूर्वभाद्रं च करालाय नमस्तथा॥
उरूद्वये वारूर्णान्यसेत्कालभृते नमः।
पृष्ठउत्तरभाद्रं च करालाय नमस्तथा॥
रेवतीं च न्यसेन्नाभो नमो मन्दचराय च।
गर्भदशे न्येसेत्राभो नमो श्यामतराय च॥
नमो भोगिस्त्रजे नित्यं यमं स्तनयुगे न्यसेत्।
न्यसेत्कृतिका हृदये नमस्तैल प्रियाय च॥
रोहिणीं भावयेद्धस्ते नमस्ते खड्गधारिणो।
पुनर्वसुमूर्ध्वणामे नमो वै बाणधारिणे॥
मृगं न्यसेद्वामहस्ते त्रिदण्डोल्लासिताय च।
दक्षोद्र्ध्वे भावयेद्रैदं नमो वै बाणधारिणे॥
तिष्यं न्यसेद्धक्षबाहौं नमस्ते हर मन्यवे।
सार्प न्यसेद्वामबाहौ चोग्रचापाय ते नमः॥
मघां विभावयेत्कण्ठे नमस्ते भस्मधारिणे।
मुखे न्यसेद्भगर्च नमः क्रूरग्राहाय च॥
भावयेद्दत्तनासायामर्यमाणश्व योगिने।
भावयेद्वामनासायां हस्तज्ञ धारिणे नमः॥
त्वाष्ट्रं न्यसेद्दज्ञकर्णे नमो ब्रह्मयाय ते।
विशाखां च दज्ञनेत्रे नमस्ते ज्ञानदृष्टये॥
विष्कुम्भं भावयेच्छीर्षसन्धौ कालाय ते नमः।
प्रीतियोगं भ्रवोः सन्धौ महामन्द! नमोस्तुते॥

नेत्रयोः सन्धावायुष्मधोगं भीष्माय ते नमः।
सौभाग्यं भावयेत्रासासन्धौ फलाशनाय च॥
शोभनं भावयेत्कर्णो सन्धौ पुष्यात्मने नमः।
नमः कृष्णायातिण्डं हनुसन्धौ विभावयेत्॥
नमो निर्मांसदेहाय सुकर्माणं शिरोधिरे।
धृति न्यसेद्ववातौ पृष्ठे छायासुताय च॥
तन्मूलसन्धौ शूलं च न्यसेद्ग्राय ते नमः।
तत्कूर्पर न्यसेद्गण्डे नित्यानन्दाय ते नमः॥
हर्षाण तन्मूलसन्धौ भूतसन्तापिने नमः।
तत्कूर्पर न्यसेद्वज्रः सानन्दाय नमोस्तुते॥
सिद्धि तन्मरिणबन्धे च न्यसेत् कालाग्नये नमः।
व्यतीपातं कराग्रेषु न्यसेत्कालकृते नमः॥
वरीयांसं दज्ञपार्श्वसन्धौ कालात्मने नमः।
परिधं भावयेद्वामपार्श्वसन्धौ नमोस्तु ते॥
न्यसेद्दक्षोरूसन्धौ च शिवं वै कालसाक्षिणे।
ताज्जानौ भावयेत्सिद्धिं महादेहाय ते नमः॥
साध्यं न्यसेच्च तद्गुल्फसन्धौ धोराय ते नमः
न्यसेत्तदंगुलीसन्धौ शुभं रौद्राय ते नमः॥
न्यसेद्वामोरूसन्धौ च शुक्लकालविदे नमः।
ब्रह्मयोगं च तज्जानौ न्यसेत्सधोगिने नमः॥
ऐन्द्रः तदगुल्फसन्धौ च योगाउवीशाय ते नमः।
न्यसेत्तदंगुलीसन्धौ नमोः भव्याय वैधृतिम्॥
चर्मणि बवकरणं भावयेद्यज्वने नमः।
वालवं भावयेद्रकते नमो भव्याय वैधृति॥
कौलवं भावयेदस्थिन नमस्ते सर्वभक्षिणो।
तैतिलं भावयेन्मांसे आममांसप्रियाय ते॥
गर न्यसेद्वसायं च सर्वग्रासाय ते नमः।
न्यसेद्वण्ज्मं च सर्वग्रासाय मज्जयां सर्वान्तकः नमोस्तुते॥
विर्येभावयेद्विष्टि नमो मन्यूग्रतेजसे।
रूद्रमित्रः पितृवसुवारीयेतांश्च पञ्च च॥

मुहूर्ताश्च दक्षपादनखेषु भावयेन्नाम।
पुरूहूर्ताश्चं वामपादनखेषु भावयेन्नाम्॥
सत्यव्रताय सत्याय नित्यसत्याय ते नमः।
सिद्धेश्वरः नमस्तुभयं योगेश्वर! नमोस्तुते॥
वाग्निक्तं चरांश्चैव वरूणर्यमयोनिकान्।
मुहूर्ताश्च दक्षहस्तनखेषु भावयेन्नमः।
लग्नोदयाय दीर्घाय मार्गिवे दक्षदृष्टये।
वक्राय चातिक्रूराय नस्ते वामदृष्टये॥
वामहस्तनखेषवन्तयवर्णेशाय नमोस्तुते।
गिरिशाहिर्बुध्न्यपूषाजपच्छस्त्रांश्च भावयेत्॥
राशिभोक्ते राशिगाय राशिभ्रमणकारिणे।
राशिनाथाय राशीनां फलदात्रे नमोस्तुते॥
यमाग्निचन्द्रादितिकविधतृंश्च विभावयेत्।
ऊर्ध्वस्तदक्षनखेष्वन्यत्कालाय ते नमः॥
तुलोच्चस्थाय सौम्याय नक्रकुम्भगृहाय च।
समीरत्वष्ट्जीवांश विष्णु तिग्मं धुतोन्नसयेत्॥
ऊधर्ववामहस्तष्बन्यग्रह निवारिणे।
तुष्टाय च वरिष्ठाय नमो राहुसखाय च॥॥
रविवारं ललाटे च न्यसेद्भीमद्दशे नमः।
सोमवारं न्यसेत्सवान्ते नमो जीवस्वरूपिणे॥
भौमवार गुरु न्यसेत्सावन्ते नमो मृतप्रियाय च।
मेढ्रे न्यसेत्सौम्वारं नमो जीवस्वरूपिणे॥
वृषणे गुरुवारे च नमो मन्त्रस्वरूपिणे।
भृगुवारं मलद्वारे नमः प्रयलयकारिणे॥
पादयो शनिवारं च निर्भासय नमोस्तुते।
घटिकां न्यसेत्केषु नमस्ते सूक्ष्मरूपिणे॥
कालरूपित्रमस्तेअस्तु सर्वपापप्रणाशक।
त्रिपुरस्य वर्धाधाय शम्भू जाताय ते नमः॥
नमः कालशरीराय कालनुत्राय ते नमः।
कालहे तो! नमस्तुभ्यं कालनन्दाय तै नमः॥

अखण्डदण्डमानाय त्वनाद्यन्ताय वै नमः।
कालदेवाय कालाय कालकालाय ते नमः॥
निमेषादिमहाकल्पकालरूपं च भैरवम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
दातारं सर्वभव्यानां भक्तानामभयंकरम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
कर्त्तारं सर्वदुःखानां दुष्टानां भयवर्धनम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
इत्तरिं ग्रहजातानां फलानामधकारिणाम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
सर्वेषामेव भूतानां सुखदं शान्तिभव्ययम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
कारणं सुखदुःखानां भावाऽभावस्वरूपिणाम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
अकालमृत्युहरणम्पमृत्यु निवारणम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
कालरूपेण संसार भक्षयन्त महाग्रहम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
दुर्निरीक्षयं स्थूलरोमं भीक्षणं दीर्घ लोचनम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
कालस्य वशगाः सर्वे न कालः कस्यचिद्वशः।
तस्मात्त्वां कालपुरुषं प्रणतोऽस्मि शनैश्चरम्॥
कालादेव जगस्सर्व काल एव विलीयते।
कालरूपः स्वयं शम्भु कालात्मा ग्रह देवता॥
चण्डीशो रूद्रडाकिन्याक्रान्त श्रण्डीश उच्यते।
विद्युदाकलितो नद्यां समारूदो रसाधियः॥
चण्डीशः शुकसंयुक्तो जिव्हया ललित पुनः।
चतजस्तामसी शोभी स्थिरात्मा विधुता युतः॥
नमोऽन्तो मनुरित्येष शनितुष्टिकरः शिवे।
आद्यन्तेऽष्टोत्तरशतं मनुमेन जपेच्चरः॥
यः पठेच्छृणुयाद्धाऽपि ध्यात्त्वा सम्पूज्य भक्तितः।
तस्य मृत्येर्भयं नैव शतवर्षावधिप्रिये॥

ज्वराः सर्वे निश्यति दद्रु-विस्फोटकच्छुका।
दिवा सौरि स्मरेत् रात्रौ महाकालं यजन पठेत॥
जन्मर्दो च यदा सौरिर्यपेदेतत्सहस्त्राकम्।
वेधगे वामवेधे वा जपेदर्द्वसहस्त्रकम्॥
द्वितीये द्वाद्शे मन्दे तनौ वा चाष्टेऽपि वा।
तत्तद्राशौ भवेद्यावत् पठेत्तावद्दीनावधि॥
चतुर्थे दशमे वाऽपि सप्तमे नवपममे।
गोचरे जन्मलग्नेशो दशास्वान्तर्दशासु च॥
गुरुलाधवज्ञानेन पठेत्तावद्दीनावधि।
शतमेकं त्रयं वाडय शतयुग्मं कदाचन॥
अपदस्तस्य नश्यन्ति पापानि च जयं भवेत।
महाकालालये पीठे हृथवा जलसन्निधौ॥
पुण्यक्षेत्रेऽश्वत्थमूले तैलकुम्भाग्रतो ग्रहे।
नियमेवैकमत्तेन ब्रह्मचर्येश मौनिना॥
श्रीतव्यं पठितव्यं च साधकानां सुखावहम्।
परं स्वस्त्ययनं पुण्यं स्तोत्रं मृत्युञ्जयांभिधम्॥
कालक्रमेण कथितं न्यासक्रम समन्वितम्।
प्रातःकाले शुर्चिभूत्वा पूजायां च निशामुखे॥
पठतां नैव दुष्टेभ्यो व्याघ्रसर्वादितो भयम्।
नाग्नितो न जलाद्वायोर्देशे देशान्तरेऽथवा॥
नाडकाले मरणं तेषां नाऽपमृःत्युभयं भवेत्।
आयुर्वषशतं साग्रं भवन्ति चिरजीविन॥
नाडतः परतरं स्तोत्रं शनितुष्टिकरं महत्।
शान्तिकं शीघ्रफलदं स्तोत्रमेतन्मयोदितम्॥
तस्यमात्सर्वप्रयत्लेन यरीच्छेदात्मनो हितम्।
कथनीयं महादेवि! नैभाभक्तस्य कस्यवित्॥

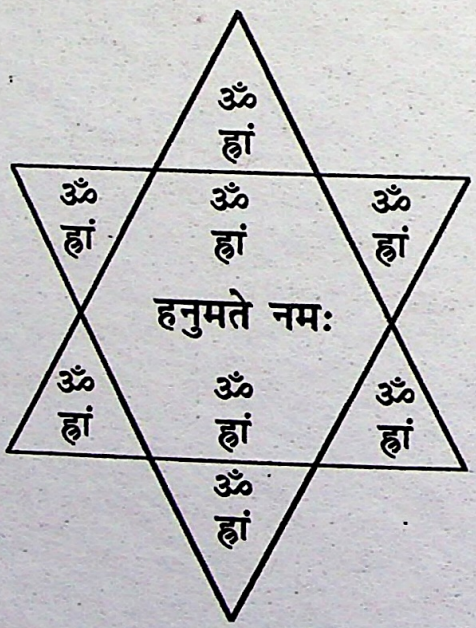
❑❑❑

14

वीरबाहुक प्रयोग

शनि की शांति के लिए यह अत्यंत प्रभावशाली है। सबसे पहले स्वर्ण या चाँदी ताम्रपत्र पर निम्नांकित यंत्र को उत्कीर्ण कराएं। फिर लाल वस्त्र पर यंत्र की स्थापना करके गंगाजल से कुश द्वारा मार्जन करें। इसके बाद यंत्र के मध्य दाहिने हाथ का अंगूठा रखकर प्रतिष्ठा का यह मंत्र पढ़ें–

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्य प्राण प्राण इह प्राणाः पुनः ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्य



सर्वेन्द्रयाणि वांगमनस्त्वक् चक्षुः श्रोयजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्स्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमन्दधातु विश्वदेवा स इहमादयान्तामों प्रतिष्ठ। प्रधानपीठादियंत्ररूपं श्रीहनुमानदेवता सुप्रतिष्ठतो वर दो भवतु॥

षोडशोपचार पूजनोपरांत श्रीराम मंत्र **'ॐ नमो भगवते रामाय महापुरुषाय नमः'** का न्यूनतम एक माला जप करें।

नैवेद्य में लडडू, मालपुआ या पंचमेवा हो।

यंत्र को गुग्गुल की धूप दें तथा माला **'ॐ हनुमते नमः'** का जप करते हुए गोदुग्ध में निर्मित हविष्यान्न से 108 आहुतियां दें। इसके पश्चात् यंत्र की उपस्थिति में एक माह हेतु नित्यप्रति चार पाठ हनुमान बाहुक के करने हेतु विधिवत् संकल्प करें।

पाठारंभ और पाठांत में श्री राम के मंत्र का जप अभीष्ट है। इससे संपूर्णतः शनि की साढ़ेसाती के प्रकोप का निवारण होता है।

सिंधु-तरन, सिय-सोच-हरन, रवि-बालबरन-तनु।
भुज बिसाल, मूरति कराल, कालहु को काल धनु॥
गगन-दहन-निरदहन-लंक निःसंक, बंक-भुव।
जातु-धान-बलवान-मान-मद-दवन पवनसुख॥
कह तुलसीदास सेवन सुलभ, सेवक हित संत्त निकट।
गुनत, नमत, सुमिरत, जपत, समन-सकल-संकट-विकट॥

❑❑❑



शनि पाताल क्रिया

यह एक विलक्षण एवं दुर्लभ प्रयोग है। इसके द्वारा शनिजनित उत्पीड़न स्थायी रूप से परिशांत हो सकता है। सबसे पहले शनि की निर्दोष प्रतिमा का निर्माण उत्तराभाद्रपद, पुष्य या अनुराधा नक्षत्र में कराना अपेक्षित है। तत्पश्चात् सविधि लोहे से निर्मित शनि-प्रतिमा पूजन एवं प्राणप्रतिष्ठापन करें। इसके उपरांत शनि-प्रतिमा के सम्मुख शनि के निम्नलिखित मंत्र का 12 हजार की संख्या में जप करें–

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपो भवंतु पीतये।
शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः॥

जप पूर्ण होने पर दशांश हवन एवं मार्जन विधि अनुसार करें। तत्पश्चात् विधिवत् बलि प्रदान करें। इसके उपरांत पाताल-क्रिया प्रारंभ हो जाती है। साधना-स्थल पर एक गहरा गड्ढा खुदवाएं। फिर अत्यंत गोपनीय विधि से इस गड्ढे में शनि-प्रतिमा को उल्टा करके मिट्टी से भली-भांति दबा दें एवं गड्ढा समतल कर दें।

शनि-प्रतिमा का शीश नीचा होने से पाताल की ओर प्रस्थापित होगी तथा जातक आजीवन शनि संताप से मुक्त रहेगा।

जिन लोगों पर साढ़ेसाती शनि का प्रकोप हो, उन्हें शिकार आदि पर नहीं जाना चाहिए, कोई दुर्घटना घट सकती है। यदि फिर भी जाना आवश्यक पड़ जाए तो निम्नलिखित मंत्र को प्रतिदिन तीनों संध्याकाल में जप कर, अपनी छाती पर फूंक मारें। इस क्रिया से हर प्रकार की दुर्घटना से बचाव हो जाता है।

ॐ आं ह्रीं क्लीं श्री द्रूं द्रं हुं फट्।
रक्ष रक्ष कालिके कुंडलिके निगुटे॥
अस्त्र शस्त्र मार्जार व्याघ्र कुडदंष्ट्रिभ्यो।
विषेभ्यो शनुभ्यो सर्वेभ्यो द्री दूं स्वाहा॥

शनि प्रकोप से बचाव के लिए यह प्रयोग अद्वितीय है।

❑❑❑



शनैश्चरस्तवराजः

निम्न शनैश्चरस्तवराजः के नियमित पाठ से शनि ग्रह शांत तो होता ही है साथ ही समस्त मनोकामनाएं भी पूर्ण होती हैं–

ध्यात्वा घणपतिं राज धर्मराजो युधिष्ठिरः।
धीरः शनैश्चरस्तवराजं चकार स्तवमुत्तमम॥
शिरो मे भास्करिः पातु भालं छायासुतोऽवतु।
कोटराक्षो दृशौ पातु शिखिकंडनिभः श्रुती॥
घ्राणं मे भीषणः पातु मुखं बलिमुखोऽवतु।
स्कन्धौ संवर्तकः पातु भुजौ मे भयदोऽवतु॥
सोरिर्मे हृदयं पातु नाभिं शनैश्चरोऽवतु।
ग्रहराजः कटिं पातु सर्वतो रविनन्दनः॥
पादौ मन्दगतिः पातु कृष्णः पात्वलिखं वपुः।
रक्षामेतां पठेन्नित्यं सौरेर्नामबलैर्युताम्॥
सुखी पुत्री चिरायुश्च स भवेन्नात्र संशयः।
ॐ सौरिः शनेश्चरः कृष्णो नीलोत्पलनिभः शनिः॥
शुष्कोदरो विशालाक्षो दुर्निरीक्ष्यो विभीषणः।
शितिकंठनिभो नीलश्छायाहृदयनन्दनः॥
कालदृष्टिः कोटराक्षः स्थलरोमा बलीमुखः।
दीर्घो निर्मासगात्रस्तु शुष्को गोरो भयानकः॥
नीलांशुः क्रोधनो रौद्रो दीर्घश्मश्रुर्जटाधरः।
मन्दो मन्दगतिः खंजोऽतृप्तः संवर्तको यमः॥
ग्रहराजः करालो च सूर्यपुत्रो रविः शशी।
कुजो बुधो गुरुः काव्यो भानुजः सिंहिकासुतः॥

केतुर्देवपतिर्बाहुः कृतान्तो नैर्ऋतस्तथा।
शशी मरुत्कुबेरश्च ईशानः सुर आत्मभूः॥
विष्णुर्हरो गणपतिः कुमारः काम ईश्वरः।
कर्ता हर्ता पालयिता राज्युभग् राज्यदायकः॥
छायासुतः श्यामलांगो धनहर्ता धनप्रदः।
क्रूरकर्मविधाता च सर्वकर्मावरोधकः॥
तुष्टो रुष्टः कामरूप कामदो रविनन्दनः।
ग्रहपीडाहरः शान्तो नक्षत्रेशोग्रहेश्वरः॥
स्थिरासनः स्थिरगतिर्महाकायो महाबलः।
महाप्रभो महाकाल, कालात्मा कालकालकः॥
आदित्यभयदाता च मृत्युरादित्यनन्दन।
शतभिरुक्षदयितः त्रयोदशितिथिप्रियः॥
तिथ्यात्मा तिथिगणो नक्षत्रगणनायकः।
योगराशिर्मुहूर्तात्मा कर्ता दिनपतिः प्रभुः॥
शमीपुष्पप्रियः श्यामस्त्रैलौक्याभावदायकः।
नीलवासाः क्रियासिन्धुर्नीलांजनचयच्छविः॥
सर्वरोगहरो देवः सिद्धो देवगणस्तुतः।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां सौरेश्छायासुतस्य यः॥
पठेन्नित्यं तस्यं पीडा समस्ता नश्यति ध्रुवम्।
कृत्वा पूजां पठेन्मर्त्यो भक्तिमान् यः स्तवं सदा॥
विशेषतः शनिदिने पीड़ा तस्य विनश्यति।
जन्मलग्ने स्थितिर्वापि गोचरे क्रूरराशिगे॥
दशासु च गते सौरेस्तदा स्तवमिमं पठेत्।
पूजयेद्यः शनिं भक्त्या श्मोपुष्पाक्षताम्बरैः॥
विधाय लोहप्रतिमां नरो दुःखाद्विमुच्यते।
बाधा त्वन्यग्रहाणां च यः पठेत्तस्य नश्यति॥
भीतो भयाद्विमुच्येत बद्धो मुच्येत बंधनात्।
रोगी रोगाद्विमुच्येत नरः स्तवमिमं पठेत॥
पुत्रवान्धनवान् श्रीमांजायते नात्र संशय।
स्तवं निशम्य पार्थस्य प्रत्यक्षोऽभूच्छनैश्चरः॥
दत्ता राज्ञे वरं कामं शनिश्चान्तर्दधे तदा॥



शनि के 108 नाम

ॐ शनैश्चराय नमः। ॐ शान्ताय नमः। ॐ सर्वाभीष्टप्रदायिने नमः। ॐ शरण्याय नमः। ॐ वरेण्याय नमः। ॐ सर्वेशाय नमः। ॐ सौम्याय नमः। ॐ सुरवन्द्याय नमः। ॐ सुरलोकविहारिणे नमः। ॐ सुखासनोपविष्टाय नमः। ॐ सुन्दराय नमः। ॐ घनाय नमः। ॐ घनरूपाय नमः। ॐ घनाभरणधारिणे नमः। ॐ घनसारविलेपाय नमः। ॐ खद्योताय नमः। ॐ मन्दाय नमः। ॐ मन्दचेष्टाय नमः। ॐ महनीयगुणात्मने नमः। ॐ मर्त्यापावनपादाय नमः। ॐ महेशाय नमः। ॐ छायापुत्राय नमः। ॐ शर्वाय नमः। ॐ शततूणीरधारिणे नमः। ॐ चरस्थिरस्वभावाय नमः। ॐ अचंचलाय नमः। ॐ नीलवर्णाय नमः। ॐ नित्याय नमः। ॐ नीलाञ्जननिभाय नमः। ॐ नीलांबरविभूषायं नमः। ॐ निश्चलाय नमः। ॐ वेधाय नमः। ॐ विधिरूपाय नमः। ॐ विरोधाधारभूमये नमः। ॐ भेदास्पदस्वभावाय नमः। ॐ वज्रदेहाय नमः। ॐ वैराग्यदाय नमः। ॐ वीराय नमः। ॐ वीतरोगभयाय नमः। ॐ विपत्परपरेशाय नमः। ॐ विश्ववंद्याय नमः। ॐ गृध्रवाहाय नमः। ॐ वरदाय नमः। ॐ कूर्माडाय नमः। ॐ कुरूपिणे नमः। ॐ कुत्सिताय नमः। ॐ गुणादयाय नमः। ॐ गोचराय नमः। ॐ अविद्यामूलनाशाय नमः। ॐ विद्याविद्यास्वरूपिणे नमः। ॐ आयुष्यकारणाय नमः। ॐ आपदुद्धर्त्रे नमः। ॐ विष्णुभक्ताय नमः। ॐ वशिने नमः। ॐ विविधागमवेदिने नमः। ॐ विधिस्तुत्याय नमः। ॐ वन्द्याय नमः।

ॐ विरूपाक्षाय नमः। ॐ वरिष्ठाय नमः। ॐ गरिष्ठाय नमः। ॐ वज्रांकुशधराय नमः। ॐ वरदाभयहस्ताय नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ ज्येष्ठापत्नीसमेताय नमः। ॐ श्रेष्ठाय नमः। ॐ मितभाषिणे नमः। ॐ कष्टौधनाशकर्त्रे नमः। ॐ पुष्टिदाय नमः। ॐ सस्तुत्याय नमः। ॐ स्तोत्रगम्याय नमः। ॐ भक्तिवस्याय नमः। ॐ भानवे नमः। ॐ भानुपुत्राय नमः। ॐ भव्याय नमः। ॐ पावनाय नमः। ॐ धनुर्मण्डलसंस्थाय नमः। ॐ धनदाय नमः। ॐ धनुष्यमते नमः। ॐ तनुप्रकाशदेहाय नमः। ॐ तामसाय नमः। ॐ विशेषफलदायिने नमः। ॐ वशीकृतजनेशाय नमः। ॐ पशूना पतये नमः। ॐ अशेषजनवान्द्याय नमः। ॐ विशेषफलदायिने नमः। ॐ वशीकृतजनेशाय नमः। ॐ खेचराय नमः। ॐ खगेशाय नमः। ॐ घननीलांबराय नमः। ॐ काठिन्यमानसाय नमः। ॐ आर्यगणस्तुत्याय नमः। ॐ नीलच्छत्राय नमः। ॐ नित्याय नमः। ॐ निर्गुणाय नमः। ॐ गुणात्मने नमः। ॐ निरामयाय नमः। ॐ नन्द्याय नमः। ॐ वन्दनीयाय नमः। ॐ धीराय नमः। ॐ दिव्यदेहाय नमः। ॐ दीनातिर्हरणाय नमः। ॐ दैत्यानाशकराय नमः। ॐ आर्यजनगणायाय नमः। ॐ क्रूराय नमः। ॐ क्रूरचेष्टाय नमः। ॐ कामक्रोधकराय नमः। ॐ कलत्रपुत्रशत्रुत्वकारणाय नमः। ॐ परिपोषित भक्ताय नमः। ॐ परभीतिराय नमः। ॐ भक्तसंघमनोभीष्टफलदाय नमः। ॐ यमाग्रजाय नमः।

❑❑❑



शनि वज्र पंजर कवच

अथ विनियोगः

अस्य श्रीशनैश्चरकवचस्तोत्रमंत्रस्य कश्यप ऋषिः।
अनुष्टुपछन्द शनैश्चरो देवता शीं शक्तिः
शूं कीलकम् शनैश्चरप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

विनियोग पढ़कर पंचपात्र में से अथवा दाहिनी अंजुलि में लिया गया जल भूमि पर छोड़ दें, इसके पश्चात् कवच पाठ करें–

नीलाम्बरो नीलवषुः किरीटी,
गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यस्तः प्रसन्नः।
सदा मम स्याद्वरदः प्रसान्तः॥

ब्रह्मोवाच

श्रृणुध्वमृषयः सर्वे शनिपीडाहरं महत्।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम्॥
कवचं देवतावासं वज्रपंजरसंज्ञकम्।
शनैश्चरप्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम्॥
ॐ श्रीशनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनंदनः।
नेत्रे छायात्मजः पातु पातु कर्णौ यमानुजः।
नासां वैवस्वतः पातु मुखं से भास्करः सदा।

स्निग्धकंठश्च मे कंठं भुजौ पातु महाभुजः॥
स्कंधौ पातु शनिश्चैव करौ पातु शुभप्रदः।
वक्षः पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा॥
नाभिं ग्रहपतिः पातु मंद पातु कटि तथा।
उरू ममांतकः पातु यमो जानुयुगं तथा॥
पादौ मंदगतिः पातु सर्वांगं पातु पिप्पलः।
अंगोपांगानि सर्वाणि रक्षेन्मे सूर्यनंदनः॥
इत्येतत्कवचं दिव्यं पठेत्सूर्यसुतस्य यः।
न तस्य जायते पीड़ा प्रीतो भवति सूर्यजः॥
व्ययजन्मद्वितीयस्थो मृत्युस्थानगतोऽपि वा।
कलत्रस्थो गतो वापि सुप्रीतस्तु सदा शनिः॥
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितीयगे।
कवचं पठते नित्यं न पीड़ा जायते कवचित्॥
इत्येतत्कवचं दिव्यं सौरेर्यन्निर्मितं पुरा।
द्वादशाष्टमजन्मस्थदोषन्नाशयते सदा।
जन्मलग्नस्थितान्दोषान् सर्वान्नाशयते प्रभुः॥

❑❑❑

19

श्री शनि भार्या स्तोत्र

यः पुरा राज्य भ्रष्टाय नलाय प्रददो किल स्वप्ने शौरिः स्वयं मन्त्रं सर्वकाम फल प्रदम् कोडं नीलांजन प्रख्यं नील जी भूत सन्नि मम्। छाया मार्तण्ड सम्भूतं नमस्यामि शनैश्चरम्।



ॐ नमोऽस्तु प्रेत राजाय कृष्ण वर्णाय ते नमः

शनैश्चराय क्रराय सिद्धि-बुद्धि प्रदायिने यः एभिर्नामभिः स्तौति। तस्य तुष्टोभवाम्यहम् मामकानां भयं तस्य स्वप्रेष्वपि न जायते। गार्ग्ये कौशिक्स्यापि पिप्पलादो महामुनि। शनैश्चर कृतापीड़ा न भवति कदाचन् क्रोडस्तु पिंगलो वभ्रुः। कृष्णोरौद्रोऽन्तको यम शौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पला देन संयुक्तः। एतानि शनि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् तस्यशौरेः कृतापीड़ा न भवति कदाचनः।

धवजनी धामनी चैव कंकाली कलह प्रिया कलही कष्टकी चापि अजा महिषी तरंगमा नामानि शनि भार्यायाः। नित्यं जपति य पुमान तस्य दुःखाः विनश्यन्ति सुख सौभाग्यं वर्द्धते।

यह उपासना शांति समाधान हेतु और विशेष रूप से साढ़ेसाती पीड़ा के निवारण के लिए भी कर सकते हैं। कम-से-कम इक्कीस सोमवार यह उपासना अवश्य करें।

शिवलिंग का यथा शक्ति पूजन करें, हो सके तो जलाभिषेक करें। पांच श्वेत पुष्प और एक बिल्व पत्र चढ़ाएं तथा निम्न शिव मंत्र का जप करें, फिर प्रार्थना करें–

ॐ श्री शंकराय नमः श्री कैलाश पतये नमः।
श्री पार्वती पतये नमः श्री विघ्न हर्ताय नमः।
श्री सुख दात्रे नमः ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

फिर शांति स्तोत्र का पाठ करें। इस प्रकार प्रार्थना कर 1008 बार शनि मंत्र **'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः'** का जप करें।

फिर 108 बार शनि गायत्री **'ॐ भग-वाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्'** का जप करें, फिर शनि को प्रणाम कर अपराध-क्षमा मांगें।

शनि के द्वारा प्रदत्त कष्टों को दूर करने के लिए महामृत्युंजय स्तोत्र एवं हनुमान पूजा, कवच, बजरंग बाण उपासना रामबाण की तरह कार्य करती हैं, क्योंकि शनि के द्वारा दिए गए कष्टों को शनि के गुरु भगवान शिव ही दूर कर सकते हैं।

❑❑❑



शनि की ढैया एवं साढ़ेसाती के विशेष उपाय

इस सृष्टि में ग्रहों का प्रभाव ही दृष्टिगोचर होता है। सूर्यास्त के समय पक्षियों का शोर तथा सूर्योदय के समय, प्राण वायु का संचार, मध्य दिन में सूर्य का ताप, रात्रि में रात की रानी की सुगंध तथा कुमुदनी का खिलना— सभी कुछ आकाशीय ग्रह, नक्षत्रों पर निर्भर है।

अब यह तो लगभग निश्चित है कि ग्रहों का जीवन पर प्रभाव अवश्य ही पड़ता है, इसलिए ज्योतिषी कुंडली में शुभ ग्रहों की अपेक्षा पापग्रहों का विवेचन विस्तार से करते हैं। जातक का जीवन शुभ है, इसमें इन चार विशेष ग्रहों का कितना प्रभाव पड़ेगा और ये ग्रह जीवन में किस प्रकार की कष्टदायक स्थितियां उत्पन्न करेंगे? इस विषय में विशेष विवेचन आवश्यक है। जीवन की आकस्मिक घटनाओं और समय-समय पर आने वाले कष्टों और रुकावटों को जीवन यात्रा में पड़ाव कहा गया है जिनसे जातक की जीवन शैली ही बदल जाती है।

शनि को पाप ग्रह माना गया है तो इसका प्रभाव भी अवश्य होता है। शनि वास्तव में परिश्रम, शक्ति, साहस, शौर्य, पापकर्म, शत्रुता, विलासिता, चिन्ता, दुर्भाग्य, संकट के अतिरिक्त आकस्मिक धन, राजनीति, उच्च पद, विदेश यात्रा और तीक्ष्ण बुद्धि का भी कारक है। आकस्मिकता शनि का विशेष गुण है, किसी कार्य को अचानक गति प्राप्त होना और किसी कार्य का अचानक रुक जाना शनि के प्रभाव का सूचक है। जिसके कारण जातक घबराहट का शिकार होता है।

यह अपूर्ण इच्छाओं और भ्रमित बुद्धि का भी प्रतिनिधित्व करता है, इस कारण इसका प्रत्येक दृष्टि से विवेचन आवश्यक है। क्रूर एवं पापग्रह होने के कारण इसके प्रभाव से जातक में निम्न विचार, अवसरवादिता, क्रूरता

शनैश्चरः प्रीतो शांतिं करोतु सदैव सुखं।
भवतु धारकस्य कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ नमः छाया मार्तण्ड सम्भूतम् नमामि श्री शनैश्चरम्।
ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
॥ॐ नमो भगवते शनैश्चराय सूर्य पुत्राय नमः॥ॐ॥



आती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह जन्मकुंडली में जिस भाव में होता है, उस भाव की बुद्धि में प्रायः अवरोध उत्पन्न करता है। आगे शनि के प्रत्येक भाव में स्थितिगत प्रभाव का विवरण दिया जा रहा है—

प्रथम भाव

- शनि पहले भाव में शुभ स्थिति में हो तो जातक दयालु होने पर धनी बनता है। मंगल व शुक्र भी अशुभ फलदायी होंगे। घर के सदस्यों को कष्ट होगा। जातक भाग्यहीन हो, शनि पहले भाव में अशुभ हो, साथ में मंगल हो तो जातक को संतान का सुख न मिलेगा।
- द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक को कुटुम्ब का सुख त्रुटिपूर्ण ढंग से मिलता है, बचपन में किसी-न-किसी प्रकार के रोगों का शिकार होता है। ऐसा जातक अपने पिता का व्यवसाय अपनाकर ही धन प्राप्त करता है। जातक को माता, मातृभूमि और घरेलू सुखों में कमी आती है। जातक कई बार गम्भीर झंझटों में फंस जाता है। उसकी आय भी अनियमित होती है।
- तृतीय भाव में शनि हो तो जातक को भाई-बहिनों की ओर से सदैव असन्तोष बना रहता है। जातक बुद्धिमान होता है, परंतु उसकी संतान जातक को सदा कष्ट देती रहती है। यद्यपि जातक का भाग्य निरन्तर साथ देता है, किंतु जातक व्यय से पीड़ित बन रहता है।
- पंचम भाव में शनि हो तो जातक की कम-से-कम एक संतान नष्ट होती है, या उसके लिए कष्टकारी होती है। जातक का दाम्पत्य जीवन भी संतोषजनक नहीं होता। विवाह भी विलम्ब से होता है। रोजगार के संबंधों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
- छठे भाव में अपनी उच्च राशि में स्थित शनि; जातक को सभी प्रकार के भौतिक सुख-साधन देने में समर्थ होता है, किंतु जातक को सदैव तनावग्रस्त रखता है। क्योंकि जातक खर्चीला होता हे, बाहरी संबंधों से हानि उठाता है। इसे भाई-बहिनों का सुख भी पर्याप्त नहीं मिलता। यद्यपि जातक प्रगति कर लेता है।
- सप्तम भाव में शनि हो तो जातक के विवाह में विलम्ब होता है, कई बार वैवाहिक संबंध होते-होते बिगड़ जाते हैं। जातक का भाग्य साथ देता है, सफलता भी मिलती है। दाम्पत्य जीवन में झंझटों का सामना करना पड़ता है। माता से असन्तोष रहता है।
- अष्टम भाव में शनि हो तो जातक का भाग्य साथ नहीं दे पाता, जबकि जातक धर्म का भी पालन नहीं कर पाता। ऐसे जातक को व्यावसायिक

सफलता तो मिलती है, किंतु जातक पिता एवं राज्य पक्ष से सहयोग के अभाव में प्रगति करता है।

- दशम भाव में शनि हो तो जातक के परिवार से संबंध ठीक नहीं रहते, कई बार माता मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। घरेलू सुखों का भी जातक अभाव अनुभव करता है। पिता से संबंध अनुकूल नहीं रहते। व्यय अधिक रहता है, मानसिक तनाव बना रहता है। दाम्पत्य जीवन में भी जातक असफल होता है। यदि शुक्र और मंगल भी अशुभ भवनों में हों तो जातक की पत्नी की मृत्यु हो जाती है या तलाक हो जाता है।
- द्वादश भाव में शनि हो तो जातक को अष्टम भाव के फल ही भोगने पड़ते हैं। इनके अलावा जातक शत्रुओं को परास्त करने में सफल हो जाता है, साथ ही मामा पक्ष लाभ उठाने वाला होता है। ऐसे जातक का भाग्योदय प्रायः विदेशों में होता है।

शनि अगर घूमता हुआ जन्मराशि में चौथे अथवा आठवें भाव में आता है तो लघु साढ़ेसाती अथवा लघु ढैया होती है। यह ढाई वर्ष तक रहती है।

शनि की ढैया

शनि जब किसी राशि में होता है तो कौन-सी राशि के जातक पर शनि की ढैया होती है? नीचे उसके बारे में उल्लेख किया जा रहा है—

- जब शनि कर्क और वृश्चिक राशि पर आता है तो मेष राशि के जातकों पर शनि की ढैया रहती है।
- शनि जब सिंह व धनु राशियों पर आता है तो वृष राशि के जातकों पर शनि की ढैया रहती है।
- शनि जब तुला और कुम्भ राशि पर आता है तो कर्क राशि वाले जातकों पर शनि की ढैया रहती है।
- शनि जब वृश्चिक व मीन राशि पर आता है तो सिंह राशि के जातकों पर शनि की ढैया रहती है।
- शनि जब धनु और मेष राशि पर आता है तो कन्या राशि के जातक पर शनि की ढैया रहती है।
- शनि जब मकर और वृषभ राशि पर आता है तो तुला राशि के जातकों पर शनि की ढैया रहती है।

- शनि जब कुंभ व मिथुन राशि पर आता है, तो वृश्चिक राशि के जातकों पर शनि की ढैया रहती है।
- शनि जब मीन व कर्क राशि पर आता है तो धनु राशि के जातकों पर शनि की ढैया रहती है।
- शनि जब मेष और सिंह राशि पर आता है तो मकर राशि के जातकों पर शनि की ढैया रहती है।
- शनि जब वृष और कन्या राशि पर आता है तो कुम्भ राशि के जातकों पर शनि की ढैया रहती है।
- शनि जब मिथुन व तुला राशि पर आता है तो मीन राशि के जातकों पर शनि की ढैया रहती है।

मेष राशि की ढैया : जातक के परिवार पर अनेक आपदाएं आने लगती हैं। इनका आगमन अचानक होता है—परिवार में किसी की भी मृत्यु हो जाए। घर-परिवार में आय बंद हो जाए। घर में मार्ग तक बन्द हो जाए। जातक की माता को कष्ट हो जाए।

- **वृषभ राशि की ढैया :** मकान अचानक गिर जाए। दूध देने वाले पशु मर जाएं। भाभी विधवा हो जाए। जातक को रोग हो जाए। शत्रु जातक पर हावी हो जाएं।
- **मिथुन राशि की ढैया :** जातक की पत्नी बीमार हो जाए। घर में परेशानियां आएं। जातक का पिता गम्भीर रोगी हो जाए। घर में आग लग जाए। जातक के पुत्र सम्पत्ति को लुटा दें।
- **कर्क राशि की ढैया :** जातक के संतान न हो। जातक व्यापार में घाटा उठाए। पत्नी रोगी हो जाए।
- **सिंह राशि की ढैया :** जातक दुर्घटनाग्रस्त हो जाए। भाई की मृत्यु हो जाए और मानसिक रोगी हो जाए।
- **कन्या राशि की ढैया :** जातक की सम्पत्ति नष्ट हो जाए। जातक के परिवार में मृत्यु हो। माता को कष्ट हो।
- **तुला राशि की ढैया :** पुत्र रोगी हो जाए। भाई से संबंधविच्छेद हो जाए। व्यापार में हानि हो जाए। पैतृक सम्पत्ति नष्ट हो जाए। संतान कष्ट देने वाली हो। पिता जातक के घर से दूर रहने लगे।
- **वृश्चिक राशि की ढैया :** माता की अचानक मृत्यु हो जाए। पत्नी बीमार हो। बना-बनाया काम बिगड़ जाए। मुकदमे में अधिक धन व्यय

हो जाए। शत्रु धोखा दें। मकान अचानक गिर जाए। पुत्री ससुराल में दुःखी हो। गायें दूध देना बन्द कर दें।

- **धनु राशि की ढैया :** माता को रोग हो जाए। पशु दूध देना बन्द कर दें। शत्रु नुकसान पहुंचाएं। पुत्री की ससुराल में किसी की मृत्यु हो जाए। ससुराल से संबंध बिगड़ जाएं। नौकरी छूट जाए। नाना रोगी हो जाए। मरी हुई संतान पैदा हो। घर में आग लग जाए। भाई के कारण व्यापार में घाटा हो जाए। जातक रोगी हो जाए।
- **मकर राशि की ढैया :** घर में चोरी हो जाए। शत्रु हानि पहुंचाएं। बहन विधवा हो जाए अथवा उसकी ससुराल में किसी की मृत्यु हो जाए। घर में आग लग जाए। पिता को कष्ट हो। जातक को घाटा हो। पुत्र घर से भाग जाए। ससुर से संबंध खराब हो जाएं। जातक को कारावास की सजा हो जाए।
- **कुम्भ राशि की ढैया :** पत्नी मर जाए। पिता को दृष्टिदोष हो। संतान को कष्ट हो। माता से विद्रोह हो जाए। धन नष्ट हो जाए। घर में आग लग जाए। जातक की फसल नष्ट हो जाए। जातक को घाटा हो जाए। नाना की मृत्यु हो जाए। पुत्र मर जाए।
- **मीन राशि की ढैया :** परिवार में किसी की मृत्यु हो जाए। माता व पिता को कोई नेत्र-दोष हो जाए। संतान रोगी हो जाए। पुत्री की ससुराल नष्ट हो जाए। कुर्की हो जाए। कारावास की लम्बी सजा हो। पिता सम्पत्ति को भाइयों के नाम कर दे। पत्नी से संबंध-विच्छेद हो जाए। व्यापार में घाटा हो और पुरखों का धन मिट्टी में मिल जाए। पुत्री को ससुराल में कष्ट हो।

शनि की साढ़ेसाती

ज्योतिष के अनुसार—गोचर में भ्रमण करता हुआ शनि जब जातक की जन्मराशि से बारहवें भाव में आता है—तब वहां ढाई वर्ष तक रहता है। इसके पश्चात् ढाई वर्ष तक जन्मराशि में रहकर शनि भ्रमण करता हुआ इसी प्रकार जन्मराशि से आगे बढ़ता है और वहां दूसरे भाव में भी ढाई वर्ष तक रहता है। इस प्रकार वह इन तीनों भावों में साढ़ेसात वर्ष तक रहता है। इसी को शनि की साढ़ेसाती कहा जाता है। ज्योतिष के अनुसार—ये साढ़ेसात वर्ष कष्ट एवं विपत्ति के होते हैं। इन वर्षों में दुर्भाग्य की छाया

बनी रहती है और जातक को विवश होकर दुर्भाग्यपूर्ण जीवन जीना पड़ता है।

विभिन्न राशियों पर साढ़ेसाती

- शनि जब मीन, मेष एवं वृषभ राशियों पर आता है तो मेष राशि के जातकों पर साढ़ेसाती होती है।
- शनि जब मेष, वृषभ एवं मिथुन राशि पर हो तो वृषभ राशि वालों पर साढ़ेसाती होती है।
- जब शनि वृषभ, मिथुन और कर्क राशि पर हो तो मिथुन राशि वालों पर साढ़ेसाती होती है।
- अगर शनि कर्क, सिंह और कन्या राशि वाले जातकों पर हो तो सिंह राशि वालों पर साढ़ेसाती होती है।
- अगर शनि सिंह, कन्या एवं तुला राशि के जातकों पर हो तो तुला राशि वालों पर साढ़ेसाती होती है।
- अगर शनि, तुला वृश्चिक और धनु राशि के जातकों पर हो तो वृश्चिक राशि पर साढ़ेसाती होती है।
- शनि जब वृश्चिक और धनु राशियों पर आता है तो धनु राशि वालों पर साढ़ेसाती होती है।
- शनि जब धनु, मकर एवं कुम्भ राशियों पर आता है तो मकर राशि वालों पर साढ़ेसाती होती है।
- शनि जब मकर, कुम्भ और मीन राशियों पर आता है तो कुम्भ राशि के जातकों पर साढ़ेसाती होती है।
- शनि जब कुम्भ, मीन और मेष राशियों पर आता है तो मीन राशि वाले जातकों पर साढ़ेसाती होती है।

ज्योतिष विज्ञान के अनुसार, साढ़ेसात वर्ष तक चलने वाली साढ़ेसाती जातक के लिए साढ़ेसात वर्ष तक अशुभ होती है; अर्थात् उतने समय के लिए जातक के लिए कोई ग्रह शुभ फल नहीं देता।

शनि की साढ़ेसाती जिस भी राशि पर हो, उस राशि के जातकों का भाग्य उसके काल तक साथ नहीं देता है। जिसके फलस्वरूप जातक को आर्थिक हानि होती है।

- साढ़ेसाती होने पर जातक के माता-पिता को दृष्टिदोष हो जाता है।

- जातक की पत्नी रोगी हो जाती है। इतने समय तक अर्थात् साढ़े सात वर्ष तक वह बिस्तर से नहीं उठती।
- शनि की साढ़ेसाती के कारण जातक की माता की मृत्यु हो जाए।
- जातक को अथक परिश्रम करने पर भी भरपेट रोटी न मिले, जातक सब ओर से निराश हो जाए।
- शनि साढ़ेसात साल के लिए जातक का धन नष्ट कर देता है। निकट-संबंधी भी उसकी कोई मदद नहीं करते।

अगर वृषभ राशि पर साढ़ेसाती हो तो पशु धीरे-धीरे मर जाएं। जातक के व्यापार में घाटा हो। पैतृक सम्पत्ति से अलग होना पड़े। शनि साढ़ेसात वर्ष के लिए जातक के लिए शत्रु सदृश्य हो। साढ़े सात वर्ष तक जातक की जमीन बंजर हो जाए।

मिथुन राशि की साढ़ेसाती में जातक के घर या दुकान में आग लग जाए। जुए में धन नष्ट हो जाए। संतान को कष्ट हो अथवा संतान बिगड़ जाए। जातक के परिवार में कोई मर जाए अथवा भाभी विधवा हो जाए। पुत्र को कोई रोग हो जाए।

कर्क राशि की साढ़ेसाती में जातक को व्यापार में हानि हो। परिवार में किसी की मृत्यु हो जाए। सिर के बाल उड़ जाएं। किसी दुर्घटना का शिकार हो। जुए में अपने धन को नष्ट कर दे।

सिंह राशि की साढ़ेसाती में उसके घर से लक्ष्मी रूठ जाती है। पशु मर जाएं। जातक पर चोरी का आरोप लगे। बहन की ससुराल में किसी की मृत्यु हो जाए।

कन्या राशि की साढ़ेसाती में जातक पर हर समय दुःख व परेशानियों के बादल छाए रहेंगे। घर में कलह रहे। जातक रोगी हो जाए, माता अधिक समय जीवित न रहे।

तुला राशि की साढ़ेसााती में सम्बन्धी की मृत्यु हो जाए। बहिन अथवा मौसी विधवा हो जाए। पत्नी रोगी हो जाए। पुत्री के कारण धन नष्ट हो जाए। कुर्की हो जाए। व्यापार में घाटा हो जाए।

वृश्चिक राशि की साढ़ेसाती में जातक दुर्घटना का शिकार होकर कोई अंग खो बैठे। जातक की संतान रोगी हो। साली बेघर-बार हो। जातक का व्यापार नष्ट हो जाए। पिता साढ़े सात वर्ष के भीतर मर जाए।

धनु राशि की साढ़ेसाती में जातक के नेत्रों की ज्योति चली जाए।

जातक की बहिन व माता को कष्ट होगा। जातक के घर में आग लग जाए। जिस कार्य में हाथ डाले उल्टा हो जाए। सजा भुगतनी पड़े। मुकदमों में धन नष्ट हो जाए। धनु राशि के जातक के पिता अथवा दादा की मृत्यु हो जाए। नौकरी चली जाए। घर में चोरी हो जाए। माता-पुत्र को कष्ट हो जाए। पैतृक सम्पत्ति नष्ट हो जाए। प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जाए।

कुम्भ राशि की साढ़ेसाती में जातक की नौकरी चली जाए। सश्रम कारावास की सजा हो जाए। मुकदमे में धन नष्ट हो जाए। जातक परेशानियों के कारण अपनी धन-सम्पत्ति नष्ट कर दे। जातक का भाई किसी दुर्घटना का शिकार हो जाए। माता व पिता को कष्ट हो।

मीन राशि की साढ़ेसाती में परिवार में किसी की मृत्यु हो जाए। पत्नी से संबंध-विच्छेद हो जाए। पुत्र रोगी हो। घर में शिशु पैदा न हो। माता व मामी को गम्भीर रोग हो जाए। जातक के घर में सारा रुपया-पैसा, जेवर सब खत्म हो। कोई संबंधी मुसीबत में काम न आए।

सामान्य जन-जीवन में जातक की स्थिति खराब होने पर कहावत रूप में कहा जाता है कि इसको तो शनि लग गया है। इस कहावत का कारण यह है कि इस ग्रह का प्रभाव प्रत्येक जीव के जीवन में अवश्य पड़ता है, जिस प्रकार ग्रहों में चंद्रमा, बुध, शुक्र केतु, बृहस्पति क्रमानुसार शुभ ग्रह माने जाते हैं, उसी प्रकार सूर्य, मंगल, शनि और राहु अधिकाधिक पापग्रह माने गए हैं; अर्थात् सूर्य से मंगल अधिक पापग्रह, मंगल से शनि और शनि से अधिक राहु पापग्रह है।

शनि सूर्य-पुत्र तथा मोक्षदाता ग्रह है। सामान्यतः शनि के विषय में अनेक भ्रांतियां हैं, परंतु यह शत्रु नहीं मित्र है, न्याय और संतुलन का ग्रह है, शनि भाग्यविधाता भी है परंतु सत्य यह है कि यह तपकारक ग्रह है तथा तप को यही परिपक्व करता है। शनि परम प्रतापी एवं कराल ग्रह हैं, परंतु यह न्यायप्रिय भी है, शनि की ही कृपा से जातक सफल साधक बनता है, शनि की कृपा से सभी सुख प्राप्त होते हैं और कुप्रभाव होने से दरिद्रता, मानहानि, पारिवारिक कलह एवं दाम्पत्य सुख समाप्त हो जाता है। इसका कार्य निरन्तर जातक को पश्चात्ताप कराकर शुद्ध करना ही रहता है। अनुभव से पाया गया है 70 प्रतिशत लोग प्रतिदिन शनि की चपेट में रहते हैं।

सभी प्रकार के दुष्कर्म, जासूसी, तस्करी, गठिया, वायु, बाजुओं में पीड़ा,

आयु, मृत्यु, द्रव्यहानि, घाटा, जेल, बंधन, दिवाला, मुकदमा, फांसी, राजभय आदि शनि के कार्य हैं। यह अशुभ ग्रह हैं, परंतु शुभ फल भी प्रदान करता है और यही अपार लक्ष्मीकारक ग्रह है।

जातक को राजसुख, भूमिपति, लखपति तथा न्यायाधीश बनाता है। भाग्यवृद्धि करता है और धर्म पर चलने की प्रेरणा देता है। जातक को महान तपस्वी बनाता है।

जातक को नीच मनोवृत्ति वाला, विवेकहीन चोर बनाता है, जातक को आर्थिक क्षति रहती है। जातक तरह-तरह के रोगों से ग्रस्त हो जाता है, उसे उन्माद संबंधी रोग, टी०बी० (राज्यक्षमा), गठिया, स्नायु, अल्सर, भगंदर, कैंसर आदि होते हैं। अब शनि शमन के उपाय प्रस्तुत कर रहा हूं–

- ग्यारह नारियल जटा सहित लें। एक-एक नारियल दाएं हाथ से पकड़ें व दाएं कान की तरफ बाईं ओर घुमाकर दोनों हाथ लगाकर बहते जल में प्रवाहित करें। ऐसा 21 बार करें।
- सवा किलोग्राम जौ चमकीले काले कपड़े में बांधकर पोटली बनाएं। अथवा सवा किलोग्राम चना काले कपड़े में, दो कोयले, दो लोहे की कील बांधकर पोटली बनाएं। अथवा सवा किलोग्राम कच्चा कोयला काले कपड़े में बांधकर पोटली बनाएं। सवा किलोग्राम रांगा (जस्ता) लेकर काले कपड़े में बांधकर पोटली बनाएं। श्रद्धापूर्वक गंगा स्नान करें। तदुपरांत उपरोक्त वस्तुओं को सिर पर से नारियल की तरह घुमाकर आदरपूर्वक जल में प्रवाहित करें।

  इस उपाय के पश्चात् शनि की शांति हो जाएगी।
- शराब न पीएं और मांस-मछली का सेवन न करें।
- मन्दिर या धर्मस्थल में नंगे पैर जाएं।
- मिट्टी के बर्तन में सरसों का तेल भरकर पानी के अन्दर दबाएं।
- काले घोड़े की नाल की अंगूठी का छल्ला मध्यमा उंगली में धारण करें।
- सूखे नारियल एवं बादाम का दान करें।
- कन्याओं की सेवा, दुर्गा-पूजन एवं दुर्गापाठ करें।
- बन्दर की सेवा करें (पालें) एवं गुड़ खिलाएं।
- गणेशजी की पूजा-पाठ, स्तोत्र, कवच व चालीसा-आरती का पाठ करें।
- भैरव जी के मन्दिर में शराब चढ़ाएं।

- सांपों को दूध पिलाएं।
- उड़द कम-से-कम आठ सौ ग्राम या अस्सी ग्राम बहते जल में बहाएं।
- सूखा नारियल एवं बादाम बहते पानी में बहाएं।
- भूरी (सफेद) भैंस की सेवा करें या पालें।
- शिवलिंग पर दूध चढ़ाएं।
- वीरान (सुनसान) जगह में सुरमा दबाएं।
- वट-वृक्ष की जड़ में मीठा दूध डालें और दूध से भीगी मिट्टी से तिलक करें।
- नारियल एवं बादाम का दान करें।
- चाल-चलन ठीक एवं सही प्रकार से रखें।
- जल में शराब बहाएं।
- छोटे-छोटे बच्चों को दो दुकानों से बराबर मात्रा में फल लेकर बांटें।
- काले भैंसे की नाल की अंगूठी धारण करें।
- सूखा नारियल या बादाम जल में बहाएं।
- मछलियों के लिए आटे की गोलियां बनाकर पुल से नीचे डालें।
- विवाह आदि के समय मीठे (मिठाइयों) के साथ-साथ नमकीन भी बांटें।
- हनुमान की उपासना, पूजा, कवच पाठ, बजरंग बाण, चालीसा आदि करें।
- नाव की कील की अंगूठी या छल्ला पहनें।
- मजदूरों की सेवा करें।
- दो दुकानों से आम लेकर बच्चों में बराबर मात्रा में बांटें।
- शनि की उपासना करें।
- बच्चों को दोपहर के समय हलवा बांटें।
- हनुमान जी को सिंदूर का चोला चढ़ाएं।
- कन्याओं की सेवा करें।
- कौओं को रोटी डालें।
- महामृत्युंजय मंत्र का जप करें। कम-से-कम तीन कुत्तों को रोटी डाल दें।
- कवच, अर्गला स्तोत्र व दुर्गापाठ करें।
- खुशी के समय मिठाई के साथ नमकीन भी बांटें।
- काले भैंसे की सेवा करें।

- शनि स्तोत्र का पाठ करें।
- नारियल के खोपरे में तिल एवं गुड़ भरकर जमीन में दबाएं।
- बावड़ी में चार तांबे के सिक्के गिराएं।
- सूर्योदय से पहले कच्ची शराब जमीन पर गिराएं।
- धर्मस्थल पर बादाम चढ़ाएं।
- हरा व काला रंग प्रयोग में न लाएं।
- कुएं में दूध डालें।
- काला कपड़ा न पहनें।
- मेहतर (सफाई कर्मचारी) अर्थात् भंगी की सेवा करें।
- बन्द गली के मकान में न रहें।
- चाँदी का चौकोर टुकड़ा पास में रखें।
- नंगे पैर जमीन पर न नहाएं।
- नहाते समय पांव का तलवा जमीन पर न लगाएं।
- भवन में दरारें पड़ जाएं, तो तुरंत मरम्मत कराएं।
- शनि की अशुभ दशा होने पर भवन-निर्माण न करें और न ही निर्मित भवन खरीदें।

❑❑❑

21

शनि-शांति के टोटके



निम्नलिखित टोटके करने से शनि की पीड़ा से शांति मिल जाती है—

- सुरमा, काले तिल, सौंफ, नागरमोथा एवं लोध मिले हुए जल से स्नान करें। आंखों में सुरमा लगाना और तेल मालिश करना भी लाभप्रद है।
- काली गाय के घी का दीपक रोज शाम को मंदिर में जलाएं।
- शनिवार के दिन अपने हाथ के नाप का उन्नीस हाथ लंबा काला धागा बटकर, माला की भांति गले में पहनने से शनि की अनिष्टता ही शांत हो जाती है।

- शुक्रवार की रात में काले चने पानी में भिगो दें। शनिवार को ये चने, कच्चा कोयला, हल्की लोहे की पत्ती एक काले वस्त्र में बांधकर मछलियों के मध्य डाल दें। पूरे एक वर्ष तक प्रत्येक शनिवार को यह क्रिया करें। इसके फलस्वरूप शनि-जनित कोप शांत होता है। जो व्यक्ति मछली-भक्षी हों, उन्हें प्रयोग-काल में भूलकर भी मछली का भक्षण नहीं करना चाहिए।
- बरगद के पेड़ पर दूध चढ़ाकर गीली मिट्टी से तिलक करें।
- मांसाहार व मदिरा के सेवन से बचें।
- शनिवार को वट एवं पीपल के वृक्ष के नीचे सूर्योदय से पूर्व कड़वे तेल का दीपक प्रज्वलित करके दूध एवं धूपादि अर्पित करना चाहिए।
- वीरान जगह पर जमीन में सुरमा दबाएं।
- काली गाय की सेवा करने से शनिदेव प्रसन्न होते हैं। उसके शीश पर रोली और सींगों में कलावा बांधकर धूप-आरती करनी चाहिए। फिर परिक्रमा करके गाय को बूंदी के चार लड्डुओं पर रोली और सींगों में कलावा बांधकर धूप-आरती करनी चाहिए। फिर परिक्रमा करके गाय को बूंदी के चारों लड्डू खिलाएं। बंदरों और काले कुत्तों को लड्डू खिलाने से भी शनि के कुप्रभाव का शमन होता है।
- शनि के प्रतिकूल होने पर दुर्घटना का भय सदैव बना रहता है। बचाव के लिए नीचे दिए मंत्र का सुबह, दोपहर और सायं जप करें—

ॐ आं ह्रीं क्लीं श्रीं द्रूं हुं फट्
रक्ष रक्ष कालिके कुंडलिके निगुटे
अस्त्र शस्त्र, मर्जार व्याघ्र कुदंष्ट्रिभ्यो
विषेभ्यो, शनुभ्यो सर्वेभ्यो द्री दूं स्वाहा॥

- कांसे की कटोरी में तेल भरें। उसमें अपना प्रतिबिम्ब देखकर तेल दान करें।

❑❑❑

22

शनि कवच

विनियोगः

अस्य श्री शनैश्चरकवच स्तोत्रमंत्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः शनैश्चरो देवता शीं शक्तिं शूं कीलकं शनैश्चर प्रीतयर्थं जपे विनियोगः।



ध्यानम्

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः॥

ब्रह्मा उवाच

शृगुध्वमृषयः सर्वे शनिपीडाहरं महतः।
कवचं शनि राजस्य सौरेदिमनुत्तममः॥

कवचं देवतावासं सर्वसौभाग्यदायकमः।
शनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनन्दनः।
नेत्रे छायात्मजः पातु पातु कर्णौ यमानुजः॥
नासां वैवस्वतः पातु मुखं मे भास्करिः सदाः।
स्निग्धकण्ठश्च मे कण्ठं भुजो पातु महाभुजः॥
स्कन्धौ पातु शनिश्चैव करो पातु शुभप्रदः।
वक्षः पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसिसस्थथाः॥
नाभिं ग्रहपतिः पातु मन्दः पातु कटिं तथाः।
उरू यमान्तकः पातु यमो जानुयुगं तथाः॥
पादौ मन्दगतिः पातु सर्वान्गं पातु थिप्पलः।
पादौ मन्दगतिः पातु सर्वान्गं पातु पिप्पलः।
अंगोपांगानि सर्वाणि रक्षेतु सूर्यसुतश्च मे॥
कवचं शनिदेवस्य यः पठेत्प्रयतः शुचिः।
न तस्य जायते पीड़ा प्रीतो भवित सूर्यजः॥
व्यय-जन्म-द्वितीयस्थो मृत्युस्थाज्ञनगतोऽपि वाः।
कलत्रल्थो गणे वाऽपि सुप्रीतस्तु सदा शनिः॥
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितोयगेः।
कवचं पठतो नित्यं न पीडा जायते क्वचित्॥
इत्येत्त कवचं द्वियं सौरेर्यन्निर्मितं पुराः।
द्वादशाष्टम-जन्मस्थ-दोषान्नाशयते सदाः।
जन्म लग्नस्थितान् दोषान् सर्वान्नाशयते प्रभुः॥

मंत्र शास्त्र में शनि कवच का विशिष्ट स्थान है। शरीर के अंगोपांगों की सुरक्षा हेतु इष्ट के पर्यायों का स्मरण अभीष्ट की संप्राप्ति में सहायक होता है।

❑❑❑



महाकाल शनि मृत्युंजय स्तोत्र

श्री गणेशाय नमः ॐ महाकाल शनिमृत्युञ्जयाय नमः।
नीलाद्रि शोभाञ्चित दिव्यमूर्तिः खंगोत्रिदण्डीश्यचाप हस्तः।
शंभुर्महाकालशनिः पुरारिर्जयत्यशेषा सुर नाशकारी॥
मेरु पृष्ठे समासीनं सामरस्ये स्थितं शिवम्।
प्रणम्य शिरसा गौरी पृच्छति स्म जगद्धितम॥

पार्वत्युवाच

भगवन् देवदेवेश भक्तानुग्रह कारक।
अल्पमृत्युविनाशाय यत्त्वया पूर्व सूचितम्॥
तदेव त्वं महाबाहो लोकानां हितकारकम्।
तव मूर्ति प्रभेदस्य महाकालस्य सांप्रतम्॥
शनेर्मृत्युञ्जयस्तोत्रं ब्रूहि मे नेत्र जन्मनः।
अकालमृत्युहरणमपमृत्यु निवारणम्॥
शनि मन्त्रप्रभेदा ये तैर्युक्तं यत्स्वं शुभम्।
प्रतिनाम चतुर्थ्यन्तं नमोन्तं मनुना युतम्॥

ईश्वर उवाच

नित्ये प्रियतमे गौरि सर्वलोकहिते रते॥
गुह्याद्गुह्यतमं दिव्यं सर्वलोकोपकारकम्।
शनि मृत्युञ्जय स्तोत्रं प्रवक्ष्यामि तवाधुना।
सर्वमंगलमंगल्यं सर्वशत्रु विमर्दनम्॥

सर्व रोग प्रशमनं सर्वापद्विनिवारणम्।
शरीरारोग्यकरणमायुर्वृद्धिकरं नृणाम्॥
यदि भक्तासि मे गौरी गोपनीयं प्रयत्नतः।
गोपितः सर्वतन्त्रेषु तच्छृणुष्व महेश्वरि॥

ॐ अस्य श्री महाकालशनिमृत्युञ्जय स्तोत्रमन्त्रस्य पिप्लादि ऋषिनुष्टप् छन्दो महाकालशनिदेवता शं बीजमायसी शक्तिः काल पुरुषायेति कीलकं ममाकालापमृत्यु निवारणार्थं पाठे विनियोगः।

ऋषि न्यासं करन्यासं देह न्यासं समा चरेत्।
महोग्रं मूर्च्छिन विन्यस्य मुखे वैवस्वतं न्यसेत्॥
गले तु विन्यसेन्मदं बाहवोर्महा ग्रह न्यसेत्।
हृदि न्यसेन्महाकालं गुह्ये कृशतनुं न्यसेत्॥
जान्वोस्तूडुचरं न्यंस्य पादयोस्तु शनैश्चरम्।
एवं न्यासविधिं कृत्वा पश्चात् कालात्मनः शनेः॥
न्यासं ध्यानं प्रवक्ष्यामि तनौ ध्यात्वा पठेन्नरः।
कल्पादियुगभेदांश्च करांगन्यास रुपिणः॥
कलात्मनो न्यासेद्गात्र मृत्युञ्जय! नमोऽस्तुते।
मन्वन्तराणि सर्वाणि महाकाल स्वरूपिणः॥
भावयेत्पति प्रत्यंगे महाकालाय ते न नमः।
भावयेत्प्रभवाद्यब्दान् शीर्षे कालजिते नमः॥
नमस्ते नित्यसेव्याय विन्यसेदयने भ्रुवोः।
सौरये च नमस्तेऽस्तु गण्डयोविन्यसे दृतून्॥
श्रावणं भावयेदक्ष्णोर्नमः कृष्ण निभाय च।
महोग्राय नमो भाद्रं तथा श्रवणयोर्न्यसेत्॥
नमो वै दुर्निरीक्षयाय चाश्विनं विन्यसेन्मुखे।
नमो नीलमयूखाय ग्रीवायां कार्तिकं न्यसेत्॥
मार्गशीर्षं न्यसेद्बाहवोम्रहारौद्राय ते नमः।
ऊर्ध्वलोकनिवासाय पौषं तु हृदये न्यसेत्॥
नमः काल प्रबोधाय माघं वै चौदरं न्यसेत्।
मन्दगाय नमो मेढं न्यसेद्वैफाल्गुनं तथा॥
ऊर्वौर्न्यसेच्चैत्रमासं नमः शिवोद्भवाय च।
वैशाखं विन्यसेज्जान्वोर्नमः संवर्तका च॥

जडधयोर्भावयेज्येष्ठं भैरवाय नमस्तथा।
आषाढं पादयोश्चैव शनये व नमस्तथा॥
कृष्णपक्षं च क्रूराय नमः आपाद मस्तके।
न्यसेदाशीर्ष पादान्ते शुक्लपक्ष ग्रहाय च॥
न्यसेन्मूलं पादयोश्च ग्रहाय शनये नमः।
नमः सर्वजिते चैव तोयं सर्वांग गुलौ न्यसेत्।
न्यसेद् गुल्फद्वये विश्वं नमः शुष्कतराय च।
विष्णुभं भावयेज्जाङ्योभये शिष्टतमाय ते॥
जानुद्वये धनिष्ठां च न्यसेत् कृष्णरुचे नमः।
अरुद्वये वारुणर्क्षं न्यसेत्काल भृते नमः॥
पूर्वभाद्रं न्यसेन्मेढे जटाजूटधराग्र च।
पृष्ठ उत्तरभाद्रं च करालाय नमस्तथा॥
रेवतीं च न्यसेन्नाभौ नमो मन्दचराय च।
गर्भदेशे च न्यसेद्वस्यं नमः श्वामतराय च॥
नमो भोगित्सयजे नित्यं यम स्तनयुगेन्यसेत्।
न्यसेत्कृत्तिकां हृदये नमस्तैलप्रियाय च॥
रोहिणीं भावयेद्धस्ते नमस्ते खंगधारिणे।
मृगं न्यसेद्वामहस्ते त्रिदण्डोल्लसिताय च॥
दक्षोर्ध्वे भावयेद्रौद्रं नमो वै वाणाधारिणे।
पुनर्वसुमूर्ध्ववामे नमो वै चापधारिणे॥
तिष्यंन्यसेद्दक्षबाहौ नमस्ते हरमन्यवे।
सार्पन्यसेद्वामबाहौ चोग्रचापाय ते नमः॥
मघां विभावयेत्कण्ठे नमस्ते भस्मधारिणे।
मुखेन्यसेद्भगर्क्षं च नमः क्रूरग्रहाय च॥
भावयेद्दक्षनासामर्यमाणञ्च योगिने।
भावयेद्वामनासायां हस्तर्क्षं धारिणे नमः॥
त्वाष्ट्रं न्यसेद्दक्षकर्णे कृशरान्न प्रियाय ते।
स्वातिं न्यसेद्वामकर्णे नमोब्रह्ममयाय ते॥

विशाखां च दक्षनेत्रे नमस्ते ज्ञान दृष्टये।
विष्कुम्भं भावयेच्छीर्षे सान्द्यौ कलाय ते नमः॥
(मैत्रन्यसेद्वामनेत्रे नमोऽन्धलोचनाय ते)।
शाक्रं न्यसेच्च शिरसि नमः सम्वर्तकाय च॥
प्रीतियोगं भ्रुवोः सन्धौ महामन्दं नमोऽस्तुते।
नेत्रयोः सन्धावायुष्मद्योगं भीष्माय ते नमः॥
सौभाग्यं भावयेन्नासासन्धौ फलाशनाय च।
शोभनं भावयेत्कर्णे सन्धौ पुण्यात्मने नमः॥
नमः कृष्णायातिगण्डं हनुसन्धौ विभावयेत्।
नमो निर्मांसदेहाय सुकर्माणं शिरोधरे॥
घृतिं न्यसेद्दक्षबाहौ पृष्ठे छायासुताय च।
तन्मूल सन्धौ शूलञ्च न्यसेदुग्राव ते नमः॥
तत्कर्पूरे न्यसेद्गण्डं नित्यानन्दाय ते नमः॥
तत्कर्पूरे न्यसेद्गण्डं नित्यानन्दाय ते नमः।
वृद्धिं तन्मणिबन्धे च कालज्ञाय नमो न्यसेत्॥
ध्रुवं तदंगुलीमूल सन्धौ कृष्णाय ते नमः।
व्याघातं भावयेद्वामबाहु पृष्ठे कृशाय च॥
हर्षण तन्मूल सनधौ भूतसन्तापने नमः।
तत्कर्पूरे न्यसेद्वज्रं सानन्दाय नमोऽस्तु ते॥
सिद्धि तन्मणिबन्धे च न्यसेत् कालाग्नये नमः।
व्यतीपातं करागे्रषु न्यसेत्कालकृते नमः॥
वरीयांसं दक्षपार्श्वे सन्धौ कालात्मने नमः।
परिधं भावयेद्वामपार्श्वं सन्धौ नमोऽस्तुते॥
न्यसेद्दक्षोरुसन्धो च शिवं वै कालसाक्षिणे।
तज्जानौ भावयेत्सिद्धिं महादेहाय ते नमः॥
साध्य न्यसेच्च तद्गुल्फन्धौ घोराय ते नमः।
न्यसेत्तदंगुली सन्धौ शुभं रौद्राय ते नमः॥
न्यसेद्वामोरुसन्धै च योगाऽधीशाय ते नमः।
ब्रह्मयोगं च तज्जानौ न्यसेत्सद्योगिने नमः॥

एन्द्रतद्गुल्फसन्धौ च योगाऽधीशाय ते नमः।
न्यसेत्तदंगुली सन्धौ नमो भव्याय वै घृतिम्॥
चर्मणि बवकरणं भावयेद्यज्वने नमः।
बालवं भावयेद्रक्ते संहारक नमोऽस्तु ते॥
कौलवं भावयेदस्थितं नमस्ते सर्वभाक्षणे।
तैत्तिल भावयेन्मासे आममांसप्रियाय ते॥
गरं न्यसेद्वपायां च सर्वग्रासाय ते नमः।
न्यसेद्वणिजं मज्जायां सर्वान्तक नमोऽस्तुते॥
वीर्यै विभावयेद्विष्टिं नमो मन्यूग्रतेजसे।
रुद्रमित्रपितृवसु वारीण्येतांश्च पञ्च च॥
मुहूर्ताश्चा दक्षापादनखेषु भावयेन्नमः।
खगेशाय च खस्थाय खेचराय स्वरूपिणे॥
पुरुहूतशतमखे विश्वेद्योविधूस्तथा।
मुहूर्ताश्च वाम पादनखेषु भावयेन्नमः॥
सत्यव्रताय सत्याय नित्यंसत्याय ते नमः।
सिद्धेश्वर नमस्तुभ्यं योगेश्वर नमोऽस्तुते॥
वह्निनक्तंचरांश्चैव वरुणार्यमयानकान।
मुहूर्ताश्चि दक्ष हस्तनखेषु भावयेन्नमः॥
लग्नोदयाय दीर्घाय मार्गिणे दक्षदृष्टये।
वक्राय चातिक्रूराय नमस्ते वाम दृष्टये॥
वामहस्तनखेष्वन्त्यवर्णेशाय नमोऽस्तुते।
गिरिशाहिर्बुध्न्यपूषाजपाद्धसतांश्च भावयेत्॥
राशिभोक्त्रे राशिगाय राशिभ्रमण कारिणे।
राशिनाथाय राशीनां फलदाये नमोऽस्तुते॥
यामाग्नि चन्द्रादितिज विधातृंश्च विभावयेत्।
ऊर्ध्वहस्तदक्षनखेष्वत्य कालायते नमः।
तुलोच्चस्त्राय सौम्याय नक्र कुम्भगृहाय च।
समीरत्वष्ट जीवाश्च विष्णुतिग्म द्युतीन्नयसेत्॥
ऊर्ध्ववामहस्त नखेष्वम्यग्रह निवारिणे।
तुष्टाय च वरिष्ठाय नमो राहुसखाय च॥

रविवारं ललाटे च न्यसेद्भीमदृशे नमः।
सोमवारं न्यसेदास्ये नमोमृतप्रियाय च॥
भौमवारं न्यसेत्स्वान्ते नमो ब्रह्मस्वरूपिणे।
मेढेन्यसेत्सौम्यवारं नमो जीवस्वरूपिणे॥
वृषणे गुरुवारं च नमो मन्त्र स्वरूपिणे।
भृगुवारं मलद्वारे नमः प्रलयकारिणं॥
पादयोः शनिवारं च निर्मांसस्य नमोऽस्तुते।
न्यसेत्केशेषु घटिकां नमस्ते सूक्ष्मरूपिणे॥
एवं न्यासविधिं कृत्वा ततो ध्यात्वा पठेन्नरः।
ध्यान तस्य महेशानि शृणु वक्ष्यामि वन्दिते॥
ध्यायेन्नीलं शनि घोरं त्रिपुरारिं त्रिदण्डकम्।
खड्गंहस्ते दधादन्तवाम दक्षिणयो क्रमात्॥
गृद्धोपरिगत शुष्कं दीर्घाङ्ग काललोचनम्।
महाकालं शनिं शम्भुं त्रिपुरातिं त्रिलोचनम्॥
महोग्रं क्रूर कर्माणं देवदेवं शनैश्चरम्॥
काल रूपिन्नमस्तेऽस्तु सर्वपाप प्रणाशकः।
त्रिपुरस्य बधार्थाय शंभुजाताय ते नमः॥
नमः कालशरीराय कालनुन्नायते नमः।
कालहेतो मनपस्तुभ्यं कालनुन्नायते नमः।
खण्डदण्मानाय त्वनाद्यन्ताय वै नमः।
कालदेवाय कालाय कालका लाभ ते नमः॥
निमेषादि महाकल्पकालरूपं च भैरवम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
दातारं सर्वभव्यानां भक्तानामभयंकरम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
कर्तारं सर्व दुःखानां दुष्टान् भय वर्धनम्।
मृत्युञ्जय महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
सर्वेषामेव भूतानां सुखदं शान्तमव्यम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥

कारणं सुखदुःखानां भावयावस्वरूपिणम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
अकाल मृत्युहरणमपमृत्यु निवारणम्।
मृत्युञ्जय महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
अकाल मृत्युहरणमपमृत्यु निवारणम्॥
कालरूपेण संसारं भक्षयन्तं महाग्रहम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
दुर्निरीक्ष्यं स्थूलरोमं भीषणं दीर्घलोचनम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
ग्रहाणां ग्रहभूतं च सर्वग्रह निवारणम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
कालस्यं वशगाः सर्वे न कालः कस्यचिद्वराः।
तस्मात्वां कालपुरुषं प्रणतोस्मि शनैश्चरम्॥
कालदेव जगत्सर्वं काल एवं विलीयते।
कालरूपं स्वयं शंभुः कालात्मा ग्रहदेवता॥
चण्डीशोरुद्रडकिन्या क्रांतश्चण्डीश उच्यते।
शिद्युदाकलितो निद्यां समारूढ़ो रसाधिपः॥
चण्डीशः शुक्रसंयुक्तो जिह्वया ललितः पुनः।
क्षतजस्तामसी शोभी स्थिरात्मा विद्युतायुतः॥
नमोन्तो मनुरित्येष शनितुष्टिकरः शिवे।
आद्यन्तेऽष्टोत्तरशतं मनुमेनं जेन्नरः॥
यः पठेच्छृणुयाद्वापि ध्यात्वा सम्पूज्य भक्तितः।
तस्य मृत्योर्भयं नैव शतवर्षावधि प्रिये॥
ज्वराः सर्वे विनश्यन्ति दद्रुविस्फोटकच्चुकाः।
दिवासौरिस्मरेत् रात्रौ महाकालं यजनपठेत्॥
जन्मर्क्षे च यदासौरिर्जपेदेतत्सहस्त्रकम्॥
द्वितीयेद्वादशे मन्दे तनौ वा चाष्टमेऽपिवा।
तत्तद्राशौ भवेद्यावत् पठेत्तावद्दिनावधि॥

चतुर्थे दशमेवापि सप्तमे नवपञ्चम।
गोचरे जन्मलग्नेशे दशास्वन्तर्दशासु च॥
गुरुलाघवज्ञानेन पठेदावृत्ति संख्यया।
शतमेकं त्र्यं वाथ शतयुग्मं कदाचन॥
आपदस्तस्य नश्यन्ति पापानि च जयं भवेत।
महाकालालये पीठे ह्यथ वा जल सन्निधौ॥
पुण्यक्षेत्रेऽश्वत्थमूले तैलकुंभाग्रतो गृहे।
नियमेनैकभक्तेन ब्रह्मचर्येण मौनिना॥
श्रोतव्यं पठितव्यं च साधाकानां सुखावहम्।
परं स्वस्त्ययनं पुण्य स्तोत्रं मृत्युञ्जयामिधम्॥
कालक्रमेण कथितं न्यासक्रम समन्वितम्।
प्रातःकाले शुचिर्भूत्वा पूजाया च निशामुखे॥
पठतां नैव दुष्टेभ्यो व्याघ्रसर्पादितोभयम्।
नाग्नितो न जलाद्वायोर्देशे देशान्तरेऽथवा॥
नाकाले मरणं तेषां नापमृत्युभयं भवेत्।
आयुर्वर्षशतं साग्रं भवन्ति चिरजीविनः॥
नातः परतरं स्तोत्रं शनितुष्टिकरं महत्।
शान्तिकं शीघ्रफलदं स्तोत्रमेतन्मयोदितम्॥
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन यदीच्छेदात्मनो हितम्
कथनीयं महादेवि नैवाभक्तरस्य कस्यचित्॥

❑❑❑

24

शनि : लाल किताब के आईने में

सूर्यपुत्र शनि न्यायकारी देवता हैं। यह बंधन और मोक्ष दोनों ही देने वाले हैं। शनि—जातक को उसके पूर्व जन्म में किए अशुभ कर्म, पापों का अनुभव दंड देकर करा देता है। राहु शनि के समान फल देता है, लेकिन अभूर्त ग्रह राहु शनि की तरह न्यायाधीश नहीं है। उसे केवल शनि के समान फल देने का अधिकार है।

चूंकि राहु एक भाव से दूसरे भाव में डेढ़ वर्ष में और शनि ढाई वर्ष में परागमन करता है। अतः उनकी गतिविधियां ज्योतिष में रुचि रखने वालों को सरलता से स्मरण रहती हैं। वास्तविक तिथियां, जिनमें वे अथवा अन्य ग्रह दूसरे भवनों में प्रविष्ट होते हैं; पंचांगों में लिखी होती हैं।

शनि का वृश्चिक में से परागमन शोचनीय स्वास्थ्य समस्या उत्पन्न कर देता है क्योंकि शनि शत्रु सूर्य के साथ-साथ न केवल परागमन कर रहा होगा जो लग्न का स्वामी है, अपितु सिंह लग्न पर 10वीं दृष्टि से कोप-दृष्टि भी डाल रहा होगा। अतः जब कभी लग्न व इसका स्वामी, दोनों ही किसी एक अथवा अनेक क्रूर ग्रहों द्वारा प्रभावित स्वामी मंगल होने के कारण जब यह ग्रह जन्मराशि के साथ 6 : 8 व 4 : 10 की योग स्थिति में होगा, तो उन सभी विषयों में चिन्ताएं उत्पन्न कर देगा।

राशि के विषय में ज्योतिषीय भविष्यवाणियां इस प्रकार की जाती हैं। स्वास्थ्य के संबंध में भविष्यवाणियां लग्न के स्वामी के संक्रमण का पता करके की जाती हैं। अगर लग्न सिंह है और शनि सिंह राशि में से परागमन

कर रहा है तो वह जातक शिथिलता, गठिया, सर्दी, भारीपन तथा इसी प्रकार ही उन अस्वस्थाओं से पीड़ित होगा जो ठंडे, शनि ग्रह द्वारा प्रकट होते हैं।

जब शनि उस भाव में से परागमन कर रहा हो जिसमें सूर्य स्थित है तो रोग अधिक शोचनीय होगा, क्योंकि ये दोनों शत्रु हैं। अगर मंगल लग्न का स्वामी हो और शनि इसमें से परागमन करे तो भी रोग उसी प्रकार गुरुतर होगा, क्योंकि मंगल एक आग्नेय ग्रह है जबकि शनि ठंडा ग्रह है।

अगर सिंह लग्न पर सूर्य की दृष्टि नहीं है (और जातक का स्वास्थ्य प्रारम्भ से ही कमजोर है) अथवा मेष-लग्न पर मंगल की दृष्टि नहीं है तो उन पर शनि का परागमन घोर चिन्ताएं उत्पन्न कर देगा। अगर उसी समय राहु भी उसी घर में परागमन कर रहा हो और अन्य ग्रह 4 : 10 अथवा 6 : 8 का योग बनाते हों तो दुर्घटना अथवा शारीरिक आघात इतना घोर होगा कि जीवन का ही अन्त हो जाएगा।

रवि, गुरु, शुक्र और चन्द्र नम्र, उन्नत, शुभ, कृपालु तथा मंगलकारी ग्रह समझे जाते हैं। अतः ये सब सुखदायक कहलाते हैं। शनि, राहु, केतु और मंगल कठोर, शत्रुत्वपूर्ण, राक्षसी, अभद्र, अशिष्ट, क्रुद्ध हैं। अतः ये सब दुःखदायक कहलाते हैं।

इन दुःखदायकों का परीक्षण यह है कि इनमें से एक भी राशि में चंद्र के साथ होने अथवा उस पर दृष्टि डालने से ही क्लेशयुक्त, चिन्तित मानस उपस्थित कर देते हैं। अनेक बार सूर्य को भी गलती से दुःखदायी ग्रहों में गिन लेते हैं, किंतु मैं उन विचारों से सहमत नहीं हूं। मैं तो इसे सुखदायकों में ही सम्मिलित करूंगा।

इस प्रकार हमें चार सुखदायक तथा चार दुःखदायक ग्रह प्राप्त होते हैं। शेष ग्रह अर्थात् बुध निर्जीव (नपुंसक) होने के कारण न तो सुखदायक है और न ही दुःखदायक है। किसी भी जन्मकुंडली में इसका गुण इसके साथ वाले ग्रह से निश्चित किया जाता है। दुःखदायकों के साथ होने पर यह दुःखदायक है। सुखदायकों के साथ एक ही भवन में स्थित होने पर यह सुखदायक होता है। बुध तो जल के समान है जो विष अथवा अमृत में बदला जा सकता है इसमें वैसी ही वस्तु मिलाकर।

जिन जातकों को जीवन में शुभ कार्य करने होते हैं, उनकी जन्मकुंडली में अधिकांश ग्रह परस्पर संबंधित होते हैं, चाहे वे उसी भवन में हों अथवा अपनी दृष्टि रखते हों। अन्य ग्रहों से बिल्कुल अलग, शनि ग्रह की विलक्षण

सामर्थ्य हैं। 3वें, 7वें और 10वें भवनों पर दृष्टि डालने के साथ-साथ जिस भाव में से यह परागमन कर रहा हो अथवा जन्म के साथ जिस भाव में हो, उसके आगे और पीछे के एक-एक भाव को भी यह दूषित करता है।

शनि प्रत्येक भवन में ढाई वर्ष रहता है। साढ़े सात वर्ष का समय, जब शनि चंद्र की उज्ज्वल कान्ति को अपनी छाया से दूषित रहता है, साढ़ेसाती (अर्थात् साढ़े सात वर्ष का समय) कहलाता है। जन्मकुंडली में साढ़ेसाती तब प्रारम्भ होती है, जब शनि मेष में प्रविष्ट होता है, क्योंकि ज्यों ही शनि मेष राशि में प्रवेश करेगा, त्यों ही इसकी किरणें एक भाव आगे प्रभावित करती हुई चंद्र को दूषित करने लगेंगी। ढाई वर्ष तक मेष में रहने के बाद शनि जब वृषभ में प्रवेश करेगा, तब भी वह चंद्र के साथ ढाई वर्ष के लिए और भी रहेगा। यह उस साढ़े सात वर्ष की मध्यावधि होगी।

साढ़ेसाती को प्रायः सभी जातक चिन्ता और क्षोभ की दृष्टि से देखते हैं। शनि रोगवर्धक तथा दुष्ट होने के कारण विपदा और दुःख को अपने साथ लाता है। चूंकि चंद्र मस्तिष्क का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए अपने साढ़ेसाती के प्रभाव से जब शनि चंद्र को दूषित करता है, जब जातक खेद, म्लान तथा मरणकाल अनुभव करता है। आमतौर से यह केवल एक शारीरिक परिवर्तन मात्र नहीं है। यह अधिकतर शैक्षिक परीक्षणों में विफलताओं, नौकरियों से निकाल दिए जाने, निकट-संबंधी की मृत्यु, चोरी अथवा शारीरिक अपघात के रूप में प्रकट होता है।

किंतु साढ़ेसाती अपरिहार्य और अवश्यम्भावी रूप से सभी लोगों को सम्पूर्ण अवधि के लिए ही अशुभ नहीं होती।

किसी जातक के लिए सम्पूर्ण साढ़ेसात वर्ष के लिए अथवा इसके कुछ भाग के लिए ही साढ़ेसाती खराब है—इसको परखने के लिए एक अत्यन्त सरल विधि है। यह निश्चित रूप से ही बहुत विपदाएं देने वाली होगी, यदि चंद्र पहले ही राहु, केतु और मंगल जैसे दुष्ट ग्रहों से ग्रसित है। अगर चंद्र मेष, सिंह तथा वृश्चिक में स्थित है तो साढ़ेसाती प्रायः विपदाएं लाएगी क्योंकि वे राशियां शनि के प्रति असहिष्णु हैं।

चूंकि शनि प्रत्येक राशि में ढाई वर्ष तथा गुरु 1 वर्ष रहता है। अतः अपने संक्रमण-काल में जब वे विरोधी स्थितियों में आ जाते हैं। तब वे

विनाश करते हैं, जिनका दीर्घकालीन प्रभाव होता है। जब जैसे मंगल, सूर्य, चंद्र, बुध और शुक्र ग्रहों के साथ अहितकार योगों का निर्माण करते हैं, तब वे अचानक हानि अथवा विपदा के देने वाले होते हैं।

जब किसी पर शनि की साढ़ेसाती अथवा ढैया चल रही हो अथवा शनि के किसी भी अनिष्टों से जातक पीड़ित हो तो निम्न विधि से शनि की साधना करने से समस्त दोष दूर हो जाते हैं—

किसी शुभ शनिवार के दिन प्रातःकाल उठकर शौचादि से निवृत्त हो स्नानादि कर शनि का; काले रंग में पेंट की हुई चौकी पर चमकीले काले कपड़े का आसन बिछाएं। आसन पर शनि की तस्वीर स्थापित करें। तत्पश्चात् शनि का पूजन सम्पन्न कराएं। धूप व सरसों के तेल का दीपक जलाएं। यंत्र के ऊपर एवं शनि की तस्वीर के ऊपर पुष्प व पुष्पमाला चढ़ाएं। इसके बाद बजरंग बाण का पाठ करे।। पाठ समाप्त होने के पश्चात् जिस दिन जप पूर्ण होता है, उस दिन जप वो मंत्र से 5 माला की दाने की संख्या के बराबर हवन में आहुतियां डालें।

हवन आम, आक या गूलर की लकड़ी पर आग जलाकर हवन सामग्री से आहुतियां डालें। हवन सामग्री में काले तिल का होना अनिवार्य है। हवन के बाद शनि की आरती करें। अनुष्ठान में जप करने हेतु मंत्र निम्न प्रकार हैं। इनमें से कोई भी मंत्र का जप सुविधानुसार कर सकते हैं—

1. **ॐ शन्नोदेवी रभिष्ठय आपो भवन्तु पीतये।**
   शंरूयोरभि श्रवन्तु नः॥
   (जप संख्या 31 हजार)
2. **ॐ शं शनैश्चराय नमः।**
   (जप संख्या 51 हजार)
3. **ॐ नीलंजन समाभासं रवि पुत्र यमाग्रजम।**
   छाया मार्त्रण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥
   (जप संख्या 21 हजार)

शनि अशुभ होने पर मकान गिर जाए, शरीर के बाल उड़ जाएं, भैंस मर जाती हैं और घर में आग लग जाती है।

शनि ग्रह के अनिष्टों के निवारण हेतु जो उपाय साढ़ेसाती व ढैया के लिखे गए हैं, वही उपाय हैं और पुनः जानकारी देने हेतु अग्रलिखित विस्तृत विवरण पेश कर रहा हूं। यह लाल किताब के उपाय हैं—

- शनिवार को उपवास रखें।
- कीकर की दातुन करें।
- काले घोड़े के पैरों की नाल या नाव की कील का छल्ला बाएं हाथ में सबसे बड़ी उंगली में धारण करें।
- नीलम 9 रत्ती मध्यमिका उंगली में (दाहिने हाथ में) चाँदी की मुद्रिका में जड़वाकर धारण करें।
- तेल से चुपड़ी रोटी कुत्ते अथवा कौओं को डालें।
- तेल एवं देशी शराब पेड़ों की जड़ में डालें।
- भैरव की साधना करें।
- तैंतालिस दिन तक लगातार कौओं को तेल से चुपड़ी रोटी डालें।
- अपने भोजन से कुत्ते का हिस्सा निकालकर, उसे भी भोजन डालें।
- लोहा या काले उड़द का दान करें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दो लोहे के टुकड़े या काले नमक के टुकड़े लेकर एक टुकड़ा अपने पास रखें।

शनि का रत्न नीलम है। नीलम के विभिन्न भाषाओं में नाम इस प्रकार हैं—हिन्दी में नीलम, संस्कृत में—इंद्रजीत मणि, फारसी में नीलाबिल याकूत व अंग्रेजी में सेफायर टरग्यूज।

नीलम का रंग नीलकमल के समान तथा इंद्रधनुष के बीच के नीले रंग अथवा मोर के गले के रंग के समान नीला रंग होता है।

नीलम रत्न धारण करने पर शनि ग्रह के अनिष्टों का नाश, धन-धान्य, सुख-सम्पत्ति, यश, मान-सम्मान, आयु-वृद्धि तथा वंश की वृद्धि करता है। रोग और दरिद्रता को दूर करता है। मुख की कान्ति और नेत्र की रोशनी को बढ़ाता है तथा इनसे अनेक मनोकामनाएं पूर्ण की जाती हैं। नीलम ही एक ऐसा रत्न है जो धारणकर्त्ता के ऊपर कुछ ही समय में अपना प्रभाव प्रकट करने लगता है। धारणकर्त्ता धारण करने वाले दिन के पूर्व रात्रि में काले कपड़े में नीलम को लपेटकर बाजू में धारण कर रात्रि में सोए, अगर रात्रि में बुरे स्वप्न या आकस्मिक दुर्घटना आदि हो जाए तो धारणकर्त्ता नीलम कभी न धारण करे। यदि शुभ स्वप्न आता है तो धारण कर ले।

अगर जातक की जन्मकुंडली में शनि की महादशा विपरीत हो, तो

25

विभिन्न नक्षत्रों में शनि की स्थिति

यह सर्वविदित है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर भ्रमण करती है और चंद्रमा पृथ्वी के चारों ओर भ्रमण करता है। वह जिस मार्ग से घूमता हुआ पृथ्वी का चक्कर लगता है अर्थात् भ्रमण करता है, उस मार्ग को 'क्रांतिवृत्त' कहते हैं। इसी क्रांतिवृत्त में लगभग समान दूरी पर अवस्थित 27 तारा-समूह हैं, जिन्हें नक्षत्र कहा जाता है। वृत्त 360 अंशों का होता है। 360 अंश में 27 का भाग देने से एक-एक नक्षत्र की दूरी 13 अंश 20 कला होती है। चंद्रमा इन्हीं नक्षत्रों से होकर भ्रमण करता है। इस प्रकार उसे एक-एक नक्षत्र तय करने में जो समय लगता है, उतने समय तक उस नक्षत्र में चंद्रमा की उपस्थिति समझी जाती है। 27 नक्षत्रों के नाम निम्नलिखित हैं—

1. अश्विनी, 2. भरणी, 3. कृत्तिका, 4. रोहिणी, 5. मृगशिरा, 6. आर्द्रा, 7. पुनर्वसु, 8. पुष्य, 9. आश्लेषा, 10. मघा, 11. पूर्वाफाल्गुनी, 12. उत्तराफाल्गुनी, 13. हस्त, 14. चित्रा, 15. स्वाति, 16. विशाखा, 17. अनुराधा, 18. ज्येष्ठा, 19. मूल, 20. पूर्वाषाढ़ा, 21. उत्तराषाढ़ा, 22. श्रवण, 23. धनिष्ठा, 24. शतभिषा, 25. पूर्वाभाद्रपद, 26. उत्तराभाद्रपद, 27. रेवती।

किसी समय वैदिककाल में उत्तराषाढ़ा और श्रवण के बीच 28वें नक्षत्र अभिजित् की भी गणना की जाती थी, किंतु अब कहीं-कहीं ही अभिजित् की चर्चा आती है। कारण यह है कि बहुत कम ज्योतिषी अपनी गणना

में इसका उपयोग करते हैं। विद्वान ज्योतिषियों ने 27 नक्षत्रों को ही भचक्र का आधार माना है। भचक्र का अर्थ है, नक्षत्रों का वह गोलाकार चक्र जिस पर कोई चीज घूमती हो। इसी नक्षत्र-चक्र पर पृथ्वी घूमती है। शनि पुष्य, अनुराधा और उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों का स्वामी है।

लौकिक भाषा में कहते हैं—'आपका जन्म-नक्षत्र क्या है?' इसका अर्थ है, जब आपका जन्म हुआ था, तब चंद्रमा किस नक्षत्र वाले आकाशीय विभाग में था। जन्म के समय चंद्रमा जिस नक्षत्र में हो, उसके अनुसार अक्षर चुनकर जन्म-नाम रखने की प्रथा है। प्रत्येक नक्षत्र का भाग 13 अंश 20 कला है। इसको 4 से भाग देने पर प्रत्येक का भाग 3 अंश 20 कला आता है। इस प्रत्येक भाग को पाद (पैर) या चरण कहते हैं।

अश्विनी नक्षत्र और शनि

शनि की उपस्थिति यदि अश्विनी नक्षत्र के प्रथम पाद यानी पहले चरण में हो तो जातक धीमी गति के साथ कार्य करने वाला, मंदबुद्धि होता है। ऐतिहासिक विषयों में उसकी गहरी रुचि होती है। उसे लेखन कार्य से ख्याति मिल सकती है। जीवन का प्रारम्भिक काल गरीबी में बिताकर भी वह प्रसन्न रहने का प्रयास करता है। वह लंबी आयु जीता है।

जन्म-समय में शनि दूसरे चरण में हो तो जातक दुबले-पतले शरीर का होता है। वह सामान्य बातों में बुद्धिहीन, व्यावहारिक ज्ञान में कमजोर, किंतु धन कमाने के मामले में चतुर होता है। ऐसा जातक क्रोधित हो जाने पर हिंसक हो जाता है। यदि तीसरे चरण में शनि हो तो जातक भ्रमणकारी, व्यापारिक कार्यों में चतुर, मातहतों से कार्य करने वाला, अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी तथा शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला होता है। वह सभी से मधुर संबंध बनाने का अभिलाषी होता है। चौथे चरण में शनि का प्रभाव हो तो जातक व्यसनी होता है, किंतु फिर भी वह सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

भरणी नक्षत्र और शनि

शनि इस नक्षत्र के पहले चरण में हो जातक मधुरभाषी तथा शिरोरोगी होता है। वह धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। शोधपूर्ण कार्यक्षेत्र में अत्यधिक धन अर्जित करता है और बुद्धिमान, कर्मठ लोगों से सम्मान प्राप्त करता

है। भरणी के दूसरे चरण में शनि हो तो जातक बहुत ही तीक्ष्ण बुद्धि का होता है। वह लापरवाह, आलसी, उच्चाधिकारी वर्ग का सलाहकार तथा चर्म रोगी होता है। उसका जीवन मुख्यतः सुखमय व खुशहाल रहता है।

शनि तीसरे चरण में हो तो जातक दूसरों पर आश्रित रहता है। उसका पालन-पोषण भी किसी दूसरे परिवार में होता है। ऐसे जातक के दो पिता अथवा दो माताएं होती हैं। माता-पिता में से कोई भी कए उसके बाल्यकाल में स्वर्ग सिधार सकता है। भरणी के चौथे चरण में शनि की उपस्थिति से जातक दूसरों पर आश्रित रहता है। उसके माता-पिता बाल्यकाल में ही बिछुड़ जाते हैं। वह स्वभाव से आलसी और अकर्मण्य होता है। उसे युवावस्था में सरकारी नौकरी मिलती है।

कृत्तिका नक्षत्र और शनि

शनि यदि कृत्तिका के पहले चरण में हो तो जातक दीर्घायु, आलसी, पिता से द्वेष रखने वाला, मध्यम धन-संपत्ति वाला, सांवले रंग का, शरीर से दुबला-पतला होता है। यह महत्त्वाकांक्षी, बड़े-बड़े कार्य करने वाला, कठोर हृदय का होता है। इसके दांत खराब होते हैं और अपच व अजीर्ण की शिकायत बनी रहती है। दूसरे चरण में शनि हो तो जातक पारिवारिक जीवन से दुखी, अशांत वातावरण में जीने वाला होता है। वह अधिक आयु की पत्नी वाला, अथवा विवाहेत्तर संबंध रखने वाला होता है।

तीसरे चरण में शनि होने से जातक नपुंसक और कमजोर इच्छा वाला होता है। कृषि द्वारा आय से उसकी आजीविका चलती है।

चौथे चरण में शनि होने पर भी जातक की स्थिति प्रायः यही होती है।

रोहिणी नक्षत्र और शनि

रोहिणी के पहले चरण में शनि हो तो जातक धन, जायदाद तथा वाहनादि अर्जित करने वाला, 35 वर्ष की आयु तक पारिवारिक जीवन से दुःखी, तदन्तर विवाह-विच्छेद से मानसिक तनाव प्राप्त करता है, किंतु उसके उपरांत उसके जीवन में सुधार उत्पन्न हो जाता है। उसकी दूसरी पत्नी बहुत सुन्दर और पतिव्रता होती है, पर वह सदा गंभीर रोगों से ग्रस्त रहती है।

दूसरे चरण में शनि जातक को पशुधन से लाभ होता है। इस चरण

में उत्पन्न जातक आकर्षक, मधुर वाणीयुक्त एवं विद्वान् होता है। गले के रोग से उसे भारी कष्ट होता है और समय से पहले ही उसके सिर के बाल उसका साथ छोड़ जाते हैं।

तीसरे चरण में शनि श्रेष्ठ फलदायक होता है। वह मीठा बोलने वाला, बौद्धिक विचारों का होता है। छोटी आयु में ही वो उचित शिक्षा ग्रहण करके यश और धन दोनों ही अर्जित कर लेता है।

चौथे चरण में शनि की उपस्थिति से जातक अपने जीवन में अनगिनत कठिनाइयों को भोगता हुआ, अंततः अपने लक्ष्य तक पहुंच ही जाता है और आगे चलकर कोई उच्चाधिकारी अथवा राजनेता बनता है।

मृगशिरा नक्षत्र और शनि

शनि यदि मृगशिरा नक्षत्र के पहले चरण में हो तो जातक लंबा, सिकुड़े कंधों वाला, घुंघराले बालों से युक्त काले रंग का होता है। उसकी पत्नी कुलटा होती है। उसका स्वास्थ्य अंतिम समय पर खराब ही रहता है। धन का अभाव उसे सदा सालता रहता है।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक बहुत खर्चीला, बुरी संगत में रहकर धन को बर्बाद करने वाला होता है। वह अपना काम खुद बिगाड़ता है, इसलिए सफलता उससे कोसों दूर रहती है। उसका अंतिम समय धनाभाव में बीतता है। तीसरे चरण में शनि हो तो जातक सरकारी सुरक्षाकर्मी होता है। उसकी केवल एक ही संतान होती है। जीवन-भर वह उतार-चढ़ाव सहता रहता है।

यदि चौथे चरण में शनि हो तो जातक को कभी-न-कभी विकलांगता का शिकार होना पड़ता है। वह गुप्त रूप से पाप कर्म करने वाला और श्वास का रोगी होता है।

आर्द्रा नक्षत्र और शनि

आर्द्रा के पहले चरण में शनि हो तो जातक दीन-हीन तथा कर्ज में डूबा रहता है। यह जातक स्वभाव से कठोर, परिश्रमी, चोर, तस्कर आदि कुछ भी हो सकता है। धन के लिए ऐसा जातक कुछ भी कर सकता है।

दूसरे चरण में शनि की उपस्थिति से जातक दूसरों की संपत्ति हड़पने वाला होता है। पिता-पक्ष से उसे कोई लाभ नहीं मिलता। वह धार्मिकता

का ढोंग करता है और दूसरों को मूर्ख बनाकर धन इकट्ठा करता है।

तीसरे चरण में शनि हो तो जातक अपनी पत्नी पर आश्रित रहता है। परेशानी और कठिनाइयों से घिरा रहता है। पत्नी अथवा परिवार से उसके संबंध कटु होते हैं। वह किसी असामाजिक संगठन का मुखिया, चोर या बदमाश होता है।

चौथे चरण में यदि शनि हो तो जातक अपने ससुर की दौलत पर गुलछर्रे उड़ाने वाला होता है। वह व्यसनी, मदिरासेवी, कोर्ट-कचहरी में दंडित होने वाला, धन तथा सुख से हीन होता है। ऐसे जातक की पत्नी कुलटा, परपुरुष से शारीरिक संबंध स्थापित करने वाली होती है।

पुनर्वसु नक्षत्र और शनि

पहले चरण में शनि हो तो जातक जुए, सट्टे से धन पैदा करके उसी में बर्बाद कर देता है। वह हाथ का कारीगर, अवांछित कार्यों में लिप्त रहने वाला, दारुण कष्ट भोगता है। उसका आखिरी समय धन से हीन और कष्ट से परिपूर्ण होता है। यदि आर्द्रा नक्षत्र के दूसरे चरण में शनि का प्रभाव हो तो जातक संतोषजनक व्यवसाय करने वाला होता है। वह धन का लेन-देन करने वाला सूदखोर अथवा छोटे-मोटे उद्योग एवं लोहे, सीमेंट के कारोबार से धन कमाता है। ऐसा जातक किसी बड़े ओहदे पर भी कार्यरत हो सकता है।

तीसरे चरण में शनि हो तो जातक भवन-निर्माण के कार्यों से संबंधित होता है।

चौथे चरण में शनि हो तो जातक आकर्षक, किंतु छोटे चेहरे वाला होता है। उसे माता-पिता का स्नेह एवं दुलार नहीं मिलता। वह दूसरों का कार्य करने वाला, क्रोधी तथा मानसिक तनाव से ग्रस्त रहता है।

पुष्य नक्षत्र और शनि

शनि पुष्य नक्षत्र के पहले चरण में हो तो जातक अनपढ़, जाहिल, मक्कार और चालाक होता है। उसकी आंखें भूरी और चमकीली होती हैं। वह स्वार्थी, व्यसनी, अपने स्वजनों एवं सगे-संबंधियों को ठगने वाला दुःसाहसी तथा महत्त्वहीन जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

शनि दूसरे चरण में हो तो जातक अनेक रोगों से ग्रस्त, विशेषकर

मानसिक रोगी होता है। कुछ जातक अपंग भी हो जाते हैं। इस चरण में शनि के प्रभाव से जातक कायर और हीन आचरण वाला है।

तीसरे चरण में शनि हो तो जातक धूर्त्त, चालाक, अस्वस्थ रहने वाला, उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला, सरकारी अधिकारी या व्यापार करने वाला होता है। ऐसा जातक ठेकेदार, भवन-निर्माता या वास्तुकार भी हो सकता है।

शनि चौथे चरण में हो तो जातक का पालन-पोषण दूसरे के घर में होता है। अनाथों की भांति जीवन बिताने के बावजूद वह पढ़-लिखकर अच्छा व्यवसाय कर आजीविका प्राप्त करता है। उसे अपने किसी निकट-संबंधी से धन की सहायता मिलती है।

आश्लेषा नक्षत्र और शनि

शनि आश्लेषा नक्षत्र के पहले चरण में हो तो जातक माता और संतान के सुख से रहित होता है। उसकी माता भी कामकाजी होती है। उसका चरित्र अच्छा नहीं होता, जिसके कारण वह काम-क्रीड़ा में अयोग्य होता है। उसकी पत्नी कभी उससे संतुष्ट नहीं होती।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करता है। वह विदेश यात्राएं भी करता है एवं वैज्ञानिक कार्यों से संबद्ध होता है। जीवन में उसे सभी प्रकार के भौतिक सुख प्राप्त होते हैं। तीसरे चरण में शनि का प्रभाव हो तो जातक संदेहास्पद चरित्र वाला है। उसे व्यर्थ का अहंकार होता है। ऐसा जातक प्रतिनिधि, दलाल, सूदखोर अथवा पत्ती (कमीशन) खाने वाला होता है। चौथे चरण में शनि हो तो जातक पुश्तैनी संपत्ति को बेचकर खा जाता है। परिवार के लोगों से उसके संबंध सदा खराब रहते हैं। माता को उससे बहुत कष्ट पहुंचता है, यही कारण है कि माता के मुख से उसके लिए कभी दुआ के शब्द नहीं निकलेंगे।

मघा नक्षत्र और शनि

शनि मघा नक्षत्र के पहले चरण में हो तो जातक छोटे कद का मोटा और कठोर शरीर का स्वामी होता है। वह सरकारी सेवा में कार्यरत, आचरणहीन, वैवाहिक जीवन में दुःखी तथा योग्य पुत्र एवं पुत्रियों वाला होता है। जीवन की मध्यावस्था में वह पक्षाघात से ग्रस्त हो सकता है।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक को दो बार विवाह करता है। दाम्पत्य-जीवन में उसके अनेक प्रकार की कठिनाइयां भोगनी पड़ती हैं तथा उसकी आर्थिक स्थिति कभी संतोषजनक नहीं रहती।

तीसरे चरण में शनि का प्रभाव हो तो जातक का गृहस्थ जीवन सदा कष्टकारी रहता है। उसकी पत्नी दुर्भाग्य की सूचक, क्रूर और मुंहजोर होती है। इसी कारण जातक पत्नी से अलग हो जाता है।

चौथे चरण में शनि हो तो जातक स्वस्थ एवं सुगठित शरीर का स्वामी, ईमानदार, किंतु भद्दी भाषा का प्रयोग करने वाला, मेहनत-मजदूरी करके आजीविका चलाने वाला तथा स्वामिभक्त होता है। ऐसे जातक की कहीं से भी आकस्मिक रूप से धन की प्राप्ति हो सकती है।

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र और शनि

पहले चरण में शनि विराजमान हो अथवा उसका प्रभाव हो तो जातक बाल्यावस्था में अत्यधिक दुःखी, अनाथों जैसा जीवनयापन करने वाला, शारीरिक रूप से विकलांग अथवा किसी असाध्य रोग का शिकार होता है।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक उदार हृदय, लम्पट, लोभी, दूसरों की नकल करके गरिमा को बढ़ाने वाला, श्रेष्ठ लेखन शैली वाला, पचास वर्ष की आयु के पश्चात् सुखी दाम्पत्य जीवन जीने वाला, एक पुत्र और एक पुत्री वाला होता है।

तीसरे चरण में शनि की उपस्थिति से जातक अनेक संकटों से घिरा, लंबे-चौड़े परिवार वाला तथा दूसरों की मदद करने के लिए स्वयं को खतरे में डालने वाला होता है। उसमें दूसरों को प्रभावित करने की कला होती है। ऐसा जातक उच्च राजनेता भी हो सकता है।

चौथे चरण में शनि हो तो जातक अधेड़ायु में विवाह करने वाला, स्वभाव से कठोर, अत्यधिक परिश्रमी तथा निष्ठावान् कर्मचारी होता है।

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र और शनि

यदि इस नक्षत्र के पहले चरण में शनि हो तो जातक को माता का सुख पूर्ण रूप से नहीं मिलता। शनि के साथ राहु-केतु या मंगल की दृष्टि भी हो तो उसके बाल्यकाल में ही माता का देहान्त हो जाता है। ऐसे जातक को अपने बड़े भाई से हर प्रकार का सहयोग मिलता है।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक को जीवन-भर भौतिक सुख की कमी रहती है। उसका वैवाहिक जीवन भी सुखी नहीं होता तथा उसकी धन की चाह कभी पूरी नहीं होती।

तीसरे चरण में शनि हो तो जातक सदैव बीमार रहता है। वह रहस्पूर्ण विधाओं समें रुचि लेने वाला होता है।

चौथे चरण में शनि हो तो जातक धनहीन, संतानहीन, सदा अप्रसन्न रहने वाला होता है।

हस्त नक्षत्र और शनि

यदि पहले चरण में शनि हो तो जातक का दाम्पत्य जीवन कभी सुखी नहीं रहता। वह उदरस्थ रोग से पीड़ित रहता है।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक अपनी पत्नी के रोगों से दुःखी रहता है तथा अपनी कमाई का अधिकांश भाग उसके इलाज पर खर्च करता है। तीसरे चरण में शनि हो तो जातक को विषैले जीव-जन्तु से भय होता है। उसे पुरानी चीजों की खरीद-फरोक्त से धन का लाभ होता है।

यदि चौथे चरण में शनि हो तो जातक घोर स्वार्थी, धोखा देने में माहिर तथा जमाखोरी से धन अर्जित करता है। शत्रुओं से उसे सदा भय बना रहता है। वह धन का अधिक लालची तथा हिसाब-किताब में कुशल होता है।

चित्रा नक्षत्र और शनि

शनि चित्रा नक्षत्र के पहले चरण में हो तो जातक की आर्थिक स्थिति साधारण होती है। वह अल्प संतान वाला अथवा संतानहीन होता है। अग्निदाह, दुर्घटना अथवा चर्म रोग से उसे बहुत अधिक शारीरिक कष्ट होता है।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक सिर या मुख-रोग से ग्रस्त होता है। उसकी आर्थिक अवस्था खराब होती है। धन के लिए वह इधर-उधर भटकता फिरता है।

शनि यदि तीसरे चरण में हो तो जातक एक राजा के समान धन-वैभव का सुख भोगता है।

चौथे चरण में शनि हो तो जातक श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करने वाला,

धनवान, समाज तथा राज्य से सम्मानित होता है। यह सब उसे स्वतः मिलता है। उसे व्यापार में धन का आशातीत लाभ तथा कार्यक्षेत्र में भारी सफलता मिलती है।

स्वाति नक्षत्र और शनि

शनि स्वाति नक्षत्र के पहले चरण में हो तो जातक समाज द्वारा सम्मानित तथा अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध होता है। ऐसे व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य के प्रति अत्यधिक जागरुक रहना चाहिए, वरना उसे घातक रोग का सामना करना पड़ सकता है।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक की आयु अधिक नहीं होगी, वह अल्पायु होता है, किंतु जातक शरीर से स्वस्थ और धनी होता है।

तीसरे चरण में शनि हो तो जातक सीढ़ी-दर-सीढ़ी चढ़ता हुआ अपनी मंजिल तक पहुंच जाता है; अर्थात् जिस कार्य में हाथ डालता है, उसमें अत्यधिक उन्नति करता है। यदि इस चरण में शनि के साथ सूर्य और चंद्र का भी प्रभाव हो तो जातक की आयु बहुत कम होती है।

चौथे चरण में शनि हो तो जातक अपनी बिरादरी का मुखिया होता है। वह शहर का प्रमुख अथवा ग्राम का प्रधान भी हो सकता है। ऐसे जातक राज्य की उच्च गद्दी पर आसीन होते देखे गए हैं।

विशाखा नक्षत्र और शनि

विशाखा के पहले चरण में शनि हो तो जातक सरकारी नौकरी करने वाला क्लर्क या लेखाकार होता है। उसे कब्ज, वायु आदि रोग सताते रहते हैं। दूसरे चरण में शनि हो तो जातक हड्डी, त्वचा अथवा रक्तदोष के कारण रोगी रहने वाला, साथ ही माता-पिता के रोगों के कारण दुःखी और परेशान रहता है। ऐसे जातक को प्रत्येक कदम पर बाधाएं झेलनी पड़ती हैं। तीसरे चरण में शनि हो तो जातक श्रेष्ठ विचारों वाला और दीर्घायु होता है। चौथे चरण में शनि हो तो जातक को धन की कोई कमी नहीं रहती। वह शरीर से रोगी तथा बड़े परिवार से संबंधित होता है।

अनुराधा नक्षत्र और शनि

इस नक्षत्र के पहले चरण में शनि हो तो जातक सभी प्रकार के अवांछित

कार्य करने वाला, चोर-हत्यारा आदि होता है। वह मध्यम कद का, खतरनाक कार्यों को अंजाम देने वाला, अविश्वसनीय चरित्र का स्वामी होता है।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक मूर्ख, चौड़े कंधों वाला, गंजे सिर का, झगड़ालू, प्रत्येक कार्य में विघ्न डालने वाला तथा दूसरों के धन पर कब्जा करने वाला होता है। वह कानून द्वारा प्रताड़ित अथवा दंडित भी किया जा सकता है। तीसरे चरण में शनि हो तो जातक कठोर हृदय वाला, फटेहाल, कठिनाइयों में जीवन गुजारने वाला होता है। अधेड़ायु में उसकी हालत में कुछ सुधार अवश्य होता है, किंतु भीतर से वोसदा सुखी रहता है।

चौथे चरण में शनि हो तो जातक जुर्म करने वालों का साथी, सहयोगी, लंबे समय तक शरीर के रोगों से लड़ने वाला तथा अत्यधिक व्यय करने वाला होता है। ऐसा जातक बुरी सोहबत में पड़कर जुआरी, शराबी और सट्टेबाज हो जाता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र और शनि

शनि ज्येष्ठा के पहले चरण में हो तो जातक अत्यधिक साहसी, झगड़ालू एवं क्रोध करने वाला होता है। उसे अनेक बार कोर्ट-कचहरी और हवालात का मुंह देखना नसीब होता है। उसे मस्तिष्क रोग होने की प्रबल संभावना रहती है। दूसरे चरण में शनि हो तो जातक सांवले रंग का मक्कार, धोखेबाज, अपने काले कारनामों के कारण सत्ता पर अधिकार करने वाला, धन से सुखी होता है। उसकी मृत्यु समय से पूर्व, आकस्मिक ही हो जाती है। तीसरे चरण में शनि हो तो जातक दो बार विवाह करता है। उसे दाम्पत्य सुख का अभाव रहता है। धन-वैभव का अधिक सुख उसे नहीं मिलता।

चौथे चरण में शनि हो तो जातक कर्मठ एवं धनी होता है। वह नैतिकता से गिरकर धन एकत्र करता है, किंतु इस धन का वो उपभोग नहीं कर पाता। उसकी मृत्यु किसी गंभीर रोग अथवा किसी बड़े हादसे से होती है।

मूल नक्षत्र और शनि

शनि प्रथम चरण में हो तो जातक अपने परिवार में सबसे अधिक उदार और परोपकारी होता है। वह उच्च-स्तर का पदाधिकारी, लोकमान्य, धन और बड़े परिवार से युक्त होता है।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक अनेक प्रकार के शास्त्र एवं भाषाओं का ज्ञाता, बौद्धिक क्षमता से ख्याति प्राप्त करने वाला, सहयोगियों और मित्रों से लाभ उठाने वाला, देश और समाज का गौरव बढ़ाने वाला होता है। तीसरे चरण में शनि हो तो जातक गुप्तचर, अथवा सेनाओं में व्यवस्था करने वाला उच्चाधिकारी, पराक्रमी, शौर्य दिखाने वाला, प्रतिभाशाली और सहयोग प्राप्त करने में निपुण होता है।

चौथे चरण में शनि हो तो जातक नगर-प्रमुख, ग्राम-प्रधान, प्रख्यात नेता, सुंदर पत्नी और योग्य संतान वाला होता है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र और शनि

इसके पहले चरण में शनि हो तो जातक किसी उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है। बुद्धिमान एवं धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। वह समझौता करने में विश्वास रखता है।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक मध्यम स्तर की शिक्षा ग्रहण करने वाला, भाई-बहिनों से युक्त, स्वयं अपने जीवन का निर्माण करता है। स्वजनों से उसे कोई सहायता नहीं मिलती। वह मानसिक रूप से परेशान रह सकता है।

तीसरे चरण में शनि हो तो जातक सरकारी सेवा में होता है तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है। यदि इस चरण में मंगल की दृष्टि भी हो तो जातक फेफड़ों के रोग से ग्रस्त हो सकता है।

चौथे चरण में शनि हो तो जातक की स्थिति उपयुक्त ही होती है।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र और शनि

शनि प्रथम चरण में हो तो जातक लम्बे-चौड़े, डील-डौल का, सांवले रंग वाला, दूसरों की सहायता करने में अग्रणी और दयावान् होता है।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक पैतृक व्यवसाय वाला, साधारण शिक्षा प्राप्त करने वाला, व्यवसाय में घाटे के कारण परेशान तथा पत्नी के रोगी होने के कारण दुःखी होता है।

तीसरे चरण में शनि हो तो जातक सामाजिक कार्यों से जुड़ा हुआ, उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला, परिश्रमी, अनुशासनप्रिय तथा दूसरों को लाभ पहुंचाने वाला होता है।

चौथे चरण में शनि का प्रभाव भी प्रायः ऐसा ही होता है।

श्रवण नक्षत्र और शनि

शनि यदि इस नक्षत्र के प्रथम चरण में हो तो जातक दुबले-पतले शरीर का स्वामी, स्वस्थ, बुद्धिमान, स्वार्थी, ससुराल पा से विपुल धन-संपत्ति प्राप्त करने वाला, धन का अत्यधिक लोभी होता है।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक मध्यम स्तर का जीवन जीने वाला, बदला लेने की भावना से युक्त, आराम-पसंद, दाम्पत्य सुख भोगने वाला होता है। यद्यपि उसकी पत्नी अधिकतर बीमार रहती है, फिर भी वह उससे अपनी हवस की पूर्ति करता रहता है।

तीसरे चरण में शनि हो तो जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। बुद्धिमान होता है, किंतु शक का कीड़ा उसके दिमाग में हमेशा कुलबुलाता रहता है। संदेहशील होने के कारण वह माता-पिता की बात पर भी यकीन नहीं करता। यही कारण है कि बहुत कम लोग उसकी बात पर यकीन करते हैं।

चौथे चरण में शनि हो तो जातक लम्बा, पतला, काले रंग का, उच्च पद को प्राप्त करने वाला तथा बहुत धीरे-धीरे और कम बोलने वाला होता है। ऐसा जातक अपने काम-से-काम रखता है।

धनिष्ठा नक्षत्र और शनि

शनि धनिष्ठा के पहले चरण में हो तो जातक कृषि अथवा लोहे के व्यापार से धन अर्जित करने वाला होता है। सहोदरों अथवा परिजनों से उसके संबंध मधुर नही हाते। ऐसा जातक सेना या पुलिस विभाग का उच्चाधिकारी भी हो सकता है।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक भौंडी एवं भयावह आकृति का, काले रंग का, प्रेत जैसा दिखने वाला बहुत ही भद्र पुरुष होता है। ऐसा जातक धनी, सुखी और किसी विशेष कला का ज्ञाता होता है। तीसरे चरण में शनि हो तो जातक गोरा, लम्बा, आकर्षक चेहरे वाला, शरीर से स्वस्थ, बोलने में तेज-तर्रार और विद्वान् होता है। वह धन-वैभव से युक्त, पत्नी-संतान वाला, धनी और सुखी होता है।

चौथे चरण में शनि हो तो जातक राजकीय सेवा में उच्च शासनाधिकारी, ईमानदार, कर्मठ, सामाजिक कार्यकर्त्ता होता है। वह उच्च शिक्षा ग्रहण करता

है। ऐसा जातक ससुराल पक्ष से इज्जत, धन तथा भूमि आदि की प्राप्ति करता है।

शतभिषा नक्षत्र और शनि

शनि पहले चरण में हो तो जातक सुंदर पत्नी और उत्तम संतानयुक्त, मिलनसार प्रवृत्ति का, स्वागत-सत्कार में बढ़-चढ़कर भाग लेने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सार्थक उपक्रमों में व्यतीत होता है। अपने बुद्धि-बल से वह विशिष्ट कार्यों के द्वारा सम्मानित तथा पुरस्कृत होता है।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक कामुक विचारों का, पर-स्त्रीगामी, शीघ्र क्रोध करने वाला होता है।

तीसरे चरण में शनि हो तो जातक मेधावी, कठिन कार्यों को भी सरलता से करने वाला, गुप्तचर विभाग अथवा सेना में कार्यरत होता है।

चौथे चरण में शनि हो तो जातक धन कमाने के लिए विशेष यात्राएं करने वाला होता है। वह अतुल धन कमाकर ही स्वदेश लौटता है। उसको आदर्श संतान तथा गुणी पत्नी मिलती है। वृद्धावस्था में वह मानसिक रोगों का शिकार हो जाता है।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र और शनि

शनि पहले चरण में हो तो जातक लम्बे-चौड़े, डील-डौल वाला, बलिष्ठ शरीर का, मनस्वी और कार्यदक्ष होता है। उसकी पत्नी भी कर्मठ और धन कमाने वाली होती है।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक प्राइवेट संस्थाओं में नौकरी करने वाला, मैनेजर आदि उच्च पद पर होता है। उसे धन-संपत्ति, पत्नी, पुत्र सभी कुछ प्राप्त होता है।

तीसरे चरण में शनि हो तो जातक मध्यम शरीर और सांवले रंग वाला, चापलूसी की बातें करने वाला, मांस-मदिरा का शौकीन, अनैतिक आचरण वाला, अपनी चतुराई के बल पर उच्च स्थान तक पहुंचने में सफल हो जाता है।

चौथे चरण में शनि हो तो जातक मुनाफ़ाखोरी, चारसौबीसी तथा गलत कामों की आड़ में धन कमाता है। वह केवल धन से ही प्यार करता है। धन ही उसका भगवान होता है। यही उसके जीने का मकसद होता है।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र और शनि

शनि इस नक्षत्र के पहले चरण में हो तो जातक कोई पदाधिकारी अथवा उच्च कोटि का शासक होता है।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक दाम्पत्य जीवन से दुःखी, किंतु धनी होता है। तीसरे चरण में शनि हो तो जातक वैज्ञानिक, डॉक्टर या इंजीनियर होता है। चौथे चरण में शनि हो तो जातक उच्च कोटि का व्यवसायी होता है। ऐसे जातक को किसी बड़ी दुर्घटना का भय रहता है।

रेवती नक्षत्र और शनि

यदि रेवती के पहले चरण में शनि हो तो जातक का घरेलू जीवन सुखी रहता हैं, किंतु उसका विवाह बहुत देर से, अधिक आयु में होता है। वृद्धावस्था में उसे बहुत दुःख झेलने पड़ते हैं।

दूसरे चरण में शनि हो तो जातक व्यावसायिक होता है।

तीसरे चरण में शनि हो तो जातक अपना व्यवसाय कर धन एकत्र करता है। इस पर भी उसे यश नहीं मिलता।

चौथे चरण में शनि हो तो जातक अत्यंत विलासी, पर-स्त्रियों पर लालचभरी दृष्टि रखने वाला, किसी कला का ज्ञाता होता है।

❑❑❑



श्री शनि चालीसा

॥ दोहा ॥

जय गणेन गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल।
दीनन के दुःख दूर करि, कीजै नाथ निहाल॥
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज।
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज॥

॥ चौपाई ॥

जयति जयति शनिदेव दयाला।
करत सदा भक्तन प्रतिपाला॥
चारि भुजा, तनु श्याम विराजै।
माथे रतन मुकुट छवि साजै॥
परम विशाल मनोहर भाला।
टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला॥
कुण्डल श्रवण चमाचम चमकै।
हिय माल मुक्तन मणि दमकै॥
कर में गदा त्रिशूल कुठारा।
पल बिच करैं, अरिहिं संहारा॥
पिंगल, कृष्णो, छाया, नन्दन।
यम, कोणस्थ, रौद्र दुःख भंजन॥
सौरी, मन्द, शनि, दश नामा।
भानु पुत्र पूजहिं सब कामा॥
जा पर प्रभु प्रसन्न ह्वै जाहीं।
रंकहुं राव करैं क्षण माहीं॥

पर्वतहू तृण होई निहारत।
तृण हू को पर्वत करि डारत॥
राज मिलत बन रामहिं दीन्हो।
कैकेइहुं की मति हरि लीन्हो॥
बनहूं में मृग कपट दिखाई।
मातु जानकी गई चतुराई॥
लषणहिं शक्ति विकल करि डारा।
मचिगा दल में हाहाकारा॥
रावण की गति-मति बौराई।
रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई॥
दियो कीट करि कंचन लंका।
बजि बजरंग बीर की डंका॥
नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा।
चित्र मयूर निगलि गै हारा॥
हार नौलखा लाग्यो चोरी।
हाथ पैर डरवाये तोरी॥
भारी दशा निकृष्ट दिखायो।
तेलहिं घर कोल्हू चलवायो॥
विनय राग दीपक महं कीन्हो।
तब प्रसन्न प्रभु ह्वै सुख दीन्हो॥
हरिश्चन्द्र नृप नारि बिकानी।
आपहुं भरे डोम घर पानी॥
तैसे नल पर दशा सिरानी।
भूंजी-मीन कूद गई पानी॥
श्री शंकरहिं गह्यो जब जाई।
पारवती को सती कराई॥
तनिक विलोकत ही करि रीसा।
नभ उड़ि गयो गौरिसुत सीसा॥
पांडव पर भै दशा तुम्हारी।
बची द्रोपदी होति उघारी॥
कौरव के भी गति मति मार्‌यो।
युद्ध महाभारत करि डार्‌यो॥
रवि कहं मुख महं धरि तत्काला।
लेकर कूदि पर्‌यो पाताला॥

शेष देव-लखि विनती लाई।
रवि को मुख ते दियो छुड़ाई॥
वाहन प्रभु के सात सुजाना।
जग दिग्गज गर्दभ मृग स्वाना॥
जम्बुक सिंह आदि नख धारी।
सो फल ज्योतिष कहत पुकारी॥
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं।
हय ते सुख सम्पत्ति उपजावैं॥
गर्दभ हानि करै बहु काजा।
गर्दभ सिद्ध कर राज समाजा॥
जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डारै।
मृग दे कष्ट प्राण संहारै॥
जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी।
चोरी आदि होय डर भारी॥
तैसहि चारि चरण यह नामा।
स्वर्ण लौह चाँदी अरु तामा॥
लौह चरण पर जब प्रभु आवैं।
धन जन सम्पत्ति नष्ट करावैं॥
समता ताम्र रजत शुभकारी।
स्वर्ण सर्व सुख मंगल भारी॥
जो यह शनि चरित्र नित गावै।
कबहुं न दशा निकृष्ट सतावै॥
अद्भुत नाथ दिखावैं लीला।
करैं शत्रु के नशि बलि ढीला॥
जो पण्डित सुयोग्य बुलवाई।
विधिवत् शनि ग्रह शांति कराई॥
पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत।
दीप दान दै बहु सुख पावत॥
कहत रामसुन्दर प्रभु दासा।
शनि सुमिरत सुख होत प्रकाशा॥

॥ दोहा ॥

प्रतिमा श्री शनिदेव की, लौह धातु बनवाय।
प्रेम सहित पूजन करै, सकल कष्ट कटि जाय॥
चालीसा नित नेम यह, कहहिं सुनहिं धारि ध्यान।
निश्चय शनि ग्रह सुखद है, पावहिं नर सम्मान॥





शनि-प्रार्थना

जयति जयति जय जय शनि देवा,
करत सिद्ध मुनि तुम्हारी सेवा।
श्यामल तन कर लोह विराजे,
शीश मुकुट कटि करधनि छाजे।।
जो तोहि ध्यावे, सो फल पावे,
सर्वसिद्धि ताके घर आवे।
भानुपुत्र, यम कर है भ्राता,
गिरिजापति गुरु, सब फलदाता।।
लंकहि भयेहु कोलाहल भारी,
जाय पवन सुत नगर मझारी।
स्वर्ण भवन चमकेउ बहुथाती,
सूझि न परेउ दिवस अरू राती।।
दृष्टि खोली निज देखउ जबहीं,
स्वर्ण भयेहु श्यामल रंग तबही।
अस को जीव-जन्तु जग माहीं,
जा पर दृष्टि परत तब नाहीं।।
कृपा दृष्टि जापर जब होई,
सकल सुमंगल पाइउ सोई।
जो हनुमत कर भक्त कहावे,
कृपा दृष्टि शनि कर जग पावे।।
पिप्लेश्वरहिं ध्यान जेहि होई,
शनिहिं कुदृष्टि न व्यापहिं सोई।
जो यह पाठ करहिं मन लाई,
होइ देव शनि सदा सहाई।
साढ़ेसाती अढैया नाशे,
ज्ञान ज्योति जग सदा प्रकाशे।।

❑❑❑

28

श्री शनिदेव जी की आरती-1



जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी।
सूरज के पुत्र प्रभु छाया महतारी॥
श्याम अंक वक्र दृष्ट चतुर्भुजा धारी।
नीलाम्बर धार नाथ गज की असवारी॥
क्रीट मुकुट शीश रजित दिपत है लिलारी।
मुक्तन की माला गले शोभित बलिहारी।
मोदक मिष्ठान पान चढ़त हैं सुपारी।
लोहा तिल तेल उड़द महिषी अति प्यारी॥
देव दनुज ऋषि मुनि सुमिरन नर नारी।
विश्वनाथ धरत ध्यान शरण हैं तुम्हारी॥

❑❑❑

29

श्री शनिदेव जी की आरती-2



जय शनिदेव दीनदयाला।।
प्रेम युत तव करउं आरती, साज प्रेम की थाल।
सकल मम अपराध प्रभु छमि होउ बेगि दयाल।।
वेद विदित अपार महिमा, रूप परम बिशाल।
करत पल बिन शत्रु नाशन, भक्त जन प्रतिपाल।।
अति प्रचन्ड प्रकोप तेरो, होत है जेहि काल।
लोप करत न देर लागत, कोष से धन माल।।
प्रेम करि जो तुमहि बिनवत, निशिदिवस प्रतिकाल।
धारि तेहिं गृह चरण कंचन, करहिं तोहि निहाल।।
करि कपट छल जो भुलावत, करत नेक न ख्याल।
नष्ट बुद्धि बल करता ताकहुं, हरत बस्तर घाल।।
भक्तियुत संपत्ति तिनहिं पूजन करत 'सुन्दर' लाल।
सकल सुज जो तुमहिं प्रभु देत भरि तत्काल।।

—: इति शुभम् :—

हमारे द्वारा प्रकाशित ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें

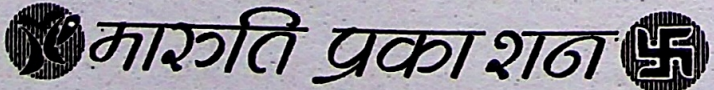
महापुरुषों की जीवनियां

श्रवण कुमार : एक जीवन परिचय	50.00
संत रविदास (रैदास)	40.00
भारत के वीर शहीद एवं क्रांतिकारी	60.00
महान् योद्धा महाराणा प्रताप	50.00
राष्ट्रपिता महात्मा गांधी	50.00
वीर सेनानी तांत्या टोपे	50.00
वीर छत्रपति शिवाजी	50.00
महामहिम डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम	50.00
ममतामयी मदर टेरेसा	50.00
महानायिका इन्दिरा गाँधी (प्रियदर्शिनी)	50.00
वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की वीरगाथा	40.00
शहीद-ए-आजम भगत सिंह की अमर गाथा	40.00
अमर सेनानी चन्द्रशेखर आजाद	40.00
राष्ट्रनायक नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	40.00
बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर	40.00
स्वामी विवेकानन्द	40.00

बाल साहित्य की पुस्तकें

बेताल पच्चीसी (सचित्र)	40.00
अलादीन और जादुई चिराग	40.00
दादा-दादी की शिक्षाप्रद कहानियां	40.00
नाना-नानी की ज्ञानवर्द्धक कहानियां	40.00
परियों की जादुई कहानियां	40.00
सात समुन्दर पार की कहानियां	40.00
जातक कथायें (सचित्र)	40.00
अकबर बीरबल के चुटकुले (सचित्र)	40.00
शेख चिल्ली के कारनामे (सचित्र)	40.00
दास्तान-ए-हातिमाई (सचित्र)	40.00
तेनालीराम की लोक कथायें (सचित्र)	40.00
पंचतंत्र (सचित्र)	40.00
हितोपदेश (सचित्र)	40.00
किस्सा-ए-मुल्ला नसरुद्दीन	40.00

आज ही अपने निकटतम बुक स्टाल से खरीदें अथवा हमें लिखें।



अग्रवाल कॉलोनी, रामलीला ग्राउण्ड के सामने, दिल्ली रोड,
मेरठ-250 002 (यू०पी०) ✆ (0121) 2518025, 3255234

सूर्यपुत्र
शनि उपासना



वैदिक ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सौर मंडल का सबसे सुंदर ग्रह शनि है। यही एक ऐसा ग्रह है जो जातक को रंक से राजा और राजा से रंक बनाने की क्षमता रखता है। शनि जैसा न्यायप्रिय अन्य कोई ग्रह नहीं है, जो जातक को उसके कर्मों के अनुसार वैभव या दंड प्रदान करता है।

रविपुत्र शनि अन्तःकरण का प्रतीक भी है। यह भीतरी और बाहरी चेतना को मिलाने में सेतु का कार्य करता है। कर्त्तव्यपरायणता, धैर्य, संयम, गंभीरता, सतर्कता, विचारशीलता और कार्यक्षमता का प्रतीक है। जातक को ज्ञानी, त्यागी, आध्यात्मिक, योगी, भोगी, संत, विवेकी, महान-से-महानतम केवल शनि ग्रह ही बनाता है।

A.H. W. MARUTI SERIES



आचार्य पं० शशि मोहन बहल की एक कालजयी कृति जो आपके शनि के प्रभाव के साथ वर्तमान में पड़ने वाले शुभ या अशुभ प्रभावों से भी परिचित करायेगी।

मारुति प्रकाशन